ऋषि-निर्वाण अर्द्धशताब्दि संस्करण—

ओ३म्

श्रीमद्दयानन्द चित्रावली

अर्थात्

आर्य-चित्रावली

का

तृतीय संस्करण

सम्पादक—
गोविन्दराम—आर्यसेवक
कलकत्ता ।

—:—

तृतीयवार ११०० | श्रीमद्दयानन्दाब्द १०९ विक्रमाब्द १९९० | मूल्य २॥) [illegible]

प्रकाशक—
गोविन्दराम हासानन्द
२०, कार्नवालिस स्ट्रीट, कलकत्ता।



मुद्रक—
गोविन्दराम हासानन्द
"वैदिक प्रेस"
२०, कार्नवालिस स्ट्रीट, कलकत्ता।

* ओ३म् *

ईश्वर-प्रार्थना

ओ३म् चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्रा-
द्यावा पृथिवी अन्तरिक्षँ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा॥ यजुः॥

प्रभो! तुम्हीं हो जगतके कर्त्ता॥
तो सृष्टि मेरी विचित्र कर दो॥
गुज़र गये सो गुज़र गये दिन॥
बस आजसे सच्चरित्र कर दो।
पवित्रता हो प्रदान ऐसी॥
पवित्र हो गुप्त कर्म जिससे॥
पवित्र उस कर्मसे वचन हो॥
वचनसे मनको पवित्र कर दो॥
स्वभाव, गुण, कर्म तक हो चित्रित॥
तभी तुम्हारी है चित्रकारी॥
खिंचा है काग़ज़ पै चित्र जिनका॥
उन्हींका हम सबको चित्र कर दो॥

ओ३म् कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः। गोजिद् भूयासमश्वजिद् धनंजयो हिरण्यजित्॥ अथर्व० ७। ५०। ८॥

मेरे दाहिने हाथमें सत्य अथवा सुकर्म है और बायें हाथमें विजय है। मैं गौ, अश्व, धन, धान्य और सुवर्णका विजेता (स्वामी) बनूं। भावार्थ यह है कि जो सत्यादि सत्कर्म करता है वही सर्वत्र विजय और सांसारिक विभूतियोंको प्राप्त करता है।

भूमे मातर्नि देहि मा भद्रया सुप्रतिष्ठिम् । संविदाना दिवा कवे श्रिया माधेहि भूत्याम् ॥अथर्व०॥

भारत माता



उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ।

ऋषि-मंडल

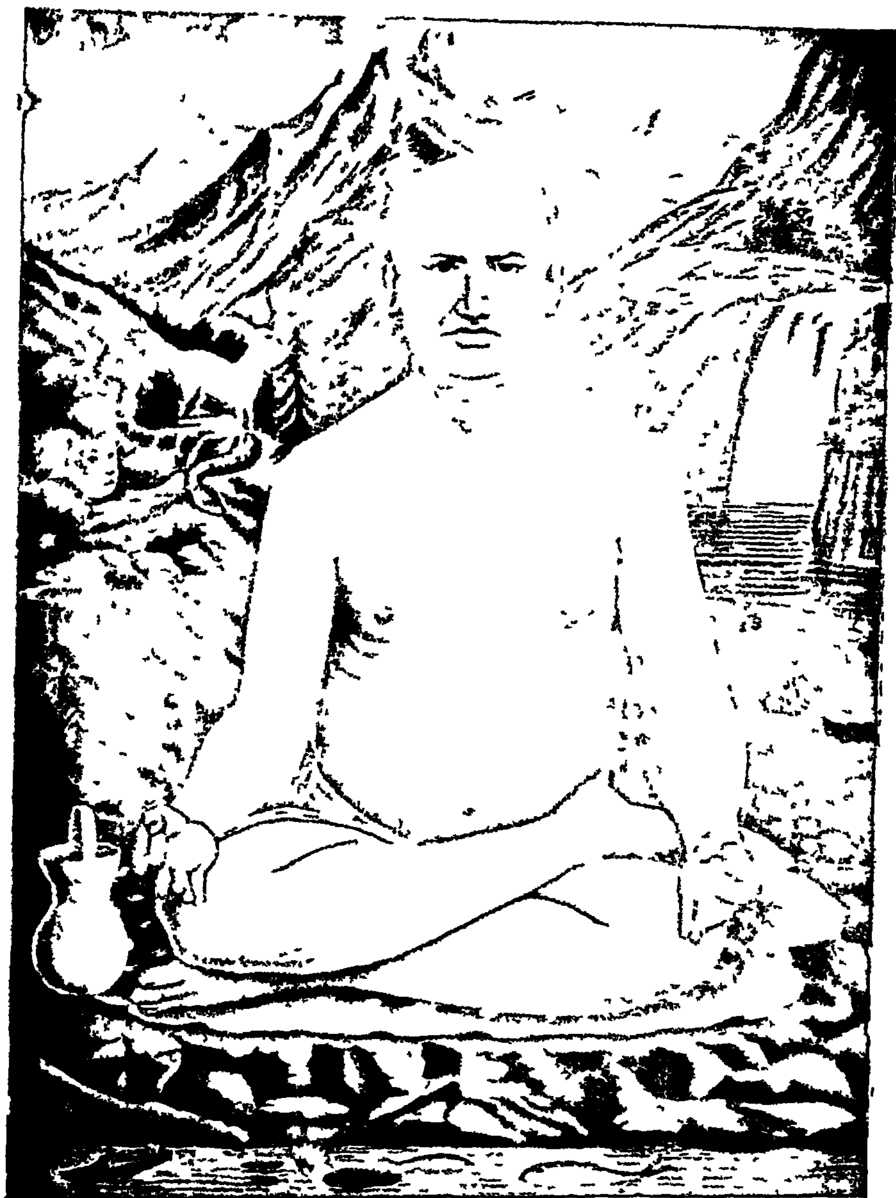
श्रीमद्दयानन्दाष्टकम्



वेदाऽभ्यासपरायणोमुनिवरोवेदैकमार्गेरतः ।
नाम्नायस्यदयाविभातिनिखिलातत्रैवयोमोदते ॥
ये नाम्नायपयोनिधेर्मथनतः सत्यंपरंदर्शितम् ।
लब्धं तत्पदपद्मयुग्ममनघं पुण्यैरनन्तैर्मया ॥१॥

भाषा छन्द—सवैया

(१)-उत्तम पुरुष भये जग जो वह धर्मके हेतु धरें जग देहा ।
धन धाम सभी कुर्बान करें प्रमदा सुत मीतरु कांचन गेहा ॥
सन्मार्गसे पग नाहि टरे उनकी गति है भव भीतर एहा ।
एक रहे दृढ़ता जगमें सब साज समाज यह होवत खेहा ॥
(२)-इनके अवतार भये सगरे जगदीश नहीं जन्मा जगमाहीं ।
सुखराशी अनाशी सदा शिव जो वह मानवरूप धरे कभी नाहीं ॥
मायिक होय वही जन्मे यह अज्ञ अलीक कहें भवमाहीं ।
यह मत है सब वेदनका यह भाष रहे निज वैननमाहीं ॥
(३)-धन्य भई उनकी जननी जिन भारत आरतके दुखटारे ।
रविज्ञानप्रकाश किया जगमें तब अंध निशाके मिटे सब तारे ॥
दिनरात जगाय रहे हमको दुःखनाशक रूप पिता जो हमारे ।
शोक यही हमको अब है जब नींद खुली तब आप पधारे ॥
(४)-वैदिक भाष्य किया जिनने जिनने सब भेदिक भेद मिटाए ।
वेद ध्वजा करमें करके जिनने सब वैर विरोध नसाए ॥
वैदिक धर्म प्रसिद्ध किया मत वाद जिते सब दूर हटाए ।
डूबत हिन्द जहाज पिखा अब जासु कृपा कर पार कराए ॥



योगीराज

महर्षि दयानन्द सरस्वती ।

(५)-जाप दिया जगदीश जिन्हें इक और सभी जप धूर मिलाए।
धूरतधर्म धरातलपै जिनने सब ज्ञानकी आग जलाए॥
ज्ञान प्रदीप प्रकाश किया उन गप्प महातम मार उड़ाए।
डूबत हिन्द जहाज़ पिखा अब जासु कृपाकर पार कराए॥
(६)-सो शुभ स्वामी दयानन्दजी जिनने यह आर्य्य धर्म प्रचारा।
भारतखण्डके भेदनका जिन पाठ किया सब तत्व विचारा॥
वैदिक पंथ पै पांव धरा उन तीक्ष्णधर्म असीकी जो धारा।
ऐसे ऋषिवरको सज्जनों कर जोड़ दोऊ अब बंद हमारा॥
(७)-व्रत वेद धरा प्रथमें जिसने पुन भारत धर्मका कीन सुधारा।
धन धाम तजे जिसने सगरे और तजे जिसने जगमें सुतदारा॥
दुःख आप सहे सिर पे उसने पर भारत आरतका दुःख टारा।
ऐसे ऋषिवरको सज्जनों कर जोड़ दोऊ अब वंद हमारा॥
(८)-वेद उद्धार किया जिनने और गप्पमहातम मार विदारा।
आप मरे न टरे सत पंथसे दीननका जिन दुःख निवारा॥
आन उद्धार किया हमरा जो गिरें अब भी तो नहीं कोई चारा।
ऐसे ऋषिवरको सज्जनों कर जोड़ दोऊ अब बंद हमारा॥

—आर्यमुनि



(चित्रपरिचय)

शिवरात्रिव्रत और ऋषिबोध।



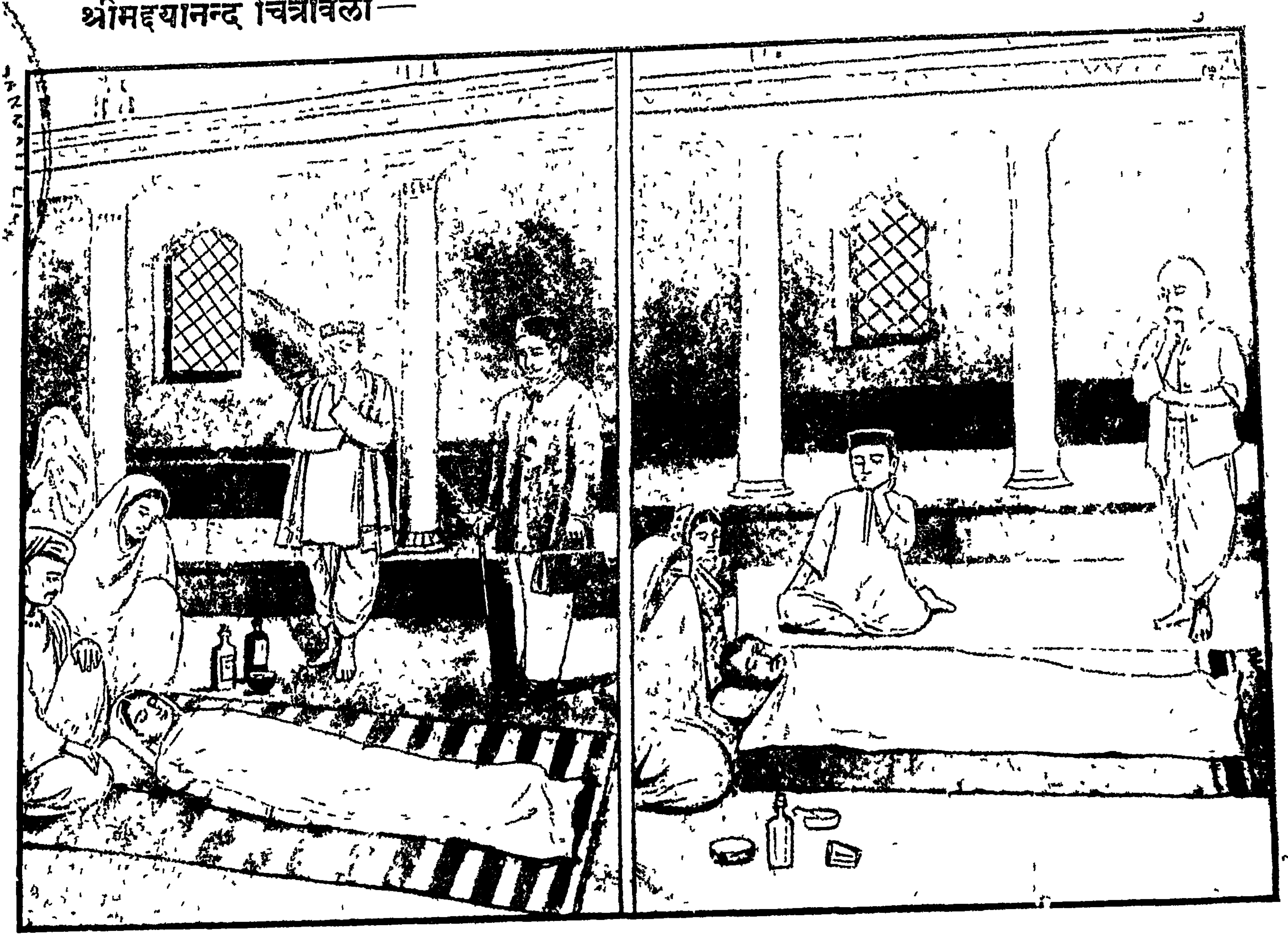
भजन

टेक—व्रत करिये शोच विचार, बुद्धी दिया है ईश्वर तुमको।
मातु पिताकी आज्ञामानी, व्रत शिवरात्रिकी हृदयमें ठानी।
ना कीने कुछ फलहार, बुद्धी दिया है ईश्वर तुमको॥
व्रत बच्चेने इक कीना, जो फल सब भारतको दीना।
टारे अविद्या अन्धकार, बुद्धी दिया है ईश्वर तुमको॥
अनुभव चुहे मूर्त्तिसे पाई, उस पर ज्ञान दृष्टि दौड़ाई।
क्या इक निकरी शब्द पुकार, बुद्धी दिया है ईश्वर तुमको॥
अविद्या अंधकार मिटाओ, वेदोंका परकाश बढ़ाओ।
इन पोप पाखण्डको टार, बुद्धी दिया है ईश्वर तुमको॥
खुले नेत्र सब भये उजाला, हरिदत्त उठ खड़ा निराला।
चलें स्वामी दयानन्द चित धार, बुद्धी दिया है ईश्वर तुमको॥

दयानन्द जीवनकाव्यसे उद्धृत



शिवरात्रि जागरण और ऋषिबोध।



(चित्रपरिचय)

भगिन और चचाकी मृत्यु समय विचार तरंग ।

॥ भजन ॥

टेक—क्या करना हृदय गुमान, जिन्दगीका नहीं ठिकाना ॥
सबका कालने किया सँहारा, जो जन्मा सो सभी पधारा ।
दो दिनका मिहमान है, फिर आखिर सभीको जाना ॥
क्या करना हृदय गुमान जिन्दगीका०
धनी वीर अरु साहुकारे और तपस्वी सभी पधारे ।
भगनी चचा किये पयान, ऐसे हमको भी है जाना ॥
क्या करना हृदय गुमान जिन्दगीका०
उनईस वर्षका बचा भाई, ज्ञानकी दृष्टी रहा लड़ाई ।
सब कहते निर्दय जान, जरा हृदय दरद न आना ॥
क्या करना हृदय गुमान जिन्दगीका०
नहिं हृदय जरा दुःख लाया, नहिं आंखसे नीर बहाया ।
हरिदत्त अमर वे लिया किया पयान बालक हृदयमें अपने ठाना ॥
क्या करना हृदय गुमान जिन्दगीका०
धन दौलत पित मातको त्यागे, पर उपकारमें चितको पागे ।
स्वामी दयानन्द चितठान अपनी देह खाक सम जाना ॥
क्या करना हृदय गुमान जिन्दगीका०

दयानन्द जीवनकाव्यसे उद्धृत

(चित्रपरिचय)

पितासे अन्तिम भेट ।



शिवरात्रि व्रतसे तथा भगिनी और चाचाकी अकाल मृत्युसे बालक मूलशङ्कर मृत्युञ्जय अमृत फलकी खोजके निमित्त १६ वर्षकी अल्पायुमें घरद्वार छोड़ योगी तपस्वियोंकी खोजमें घूमता २ सिद्धपुरके महामेलेमें जहां अनेक साधु सन्त इकट्ठे हुए हैं आ पहुंचे।

स्वामीजीके पिताने भी किसी परिचित व्यक्तिसे समाचार पाकर कुछ पहरेदार साथ ले सिद्धपुर मेलेमें पधार पुत्र मूलशङ्करको इस भेषमें देख क्रोधित हो कहते हैं—

। छन्द ।

करि क्रोध अरुणारे नयन पितु वचन तीक्ष्ण बोलेऊ।
हा कलंकी शंकना तोहि कुल कलंकको खोलेऊ॥
करि क्रोध गेरुया बसनको गहि फारि महिमें डारेऊ।
अरु कर कमण्डल पटकि महि धरि बांह दोऊ झटकारेऊ॥
लख कमल पद पितुके परे, अरु हाथ जोरि सुनावऊ।
हरिदत्त कहे आसक्त कत हम चलत साथ पधारेऊ॥

❀ चौपाई ❀

यद्यपि कहें चलहिं हम ताता। तदपि न मान्यो यह कछु बाता॥
पहरा हेतु करन रखवारी। उभै सिपाही को बैठारी॥
दीन सूचना भागि न जाहीं। बैठि रहे पर कछु औंघाहीं॥
तृणते कुलिश कुलिश तृण करहीं। तासु उपासक कब बंध रहहीं॥
जेहि तेहि करिकें रैनि सिरानी। भोर होत दृग सब अलसानी॥
आहट लिये गये सब सोई। तबहीं चल्यो सबहि सुखगोई॥
लोटा हाथ नीर भरि लीने। शौच कर्म्म मिस चित उत दीने॥
चितवत इतउत चंचल धावें। छिपन हेत कहुं ठाम न पावें॥
यहि विधि कछुक दूरि चलि गयऊ। वट विशाल इक दीखत भयऊ॥

दयानन्द जीवनकाव्यसे उद्धृत



सिद्धपुरके मेलेमें शुद्धचैतन्य ब्रह्मचारी और पिताजीसे अन्तिम भेंट।



गुरु विरजानन्दके समीप विद्याध्ययन।

(चित्रपरिचय)

गुरु सेवा और विद्याध्ययन ।



❀ चौपाई ❀

मन क्रम करैं गुरुकी सेवा। इनहि त्यागि नहिं मानहिं देवा॥
प्रति दिन जाय यमुनाके तीरा। गुरू हेत आनहिं भरि नीरा॥
स्वच्छ नीर स्नान करावैं। पीवन हेत डुवि मध्यते लावैं॥
करहिं परिश्रम दौर लगावैं। ऐसे कई मोल लौं जावैं॥
मन्दिर केर किवाड़ लगाई। कसरत करहिं परिश्रम लाई॥
व्यर्थ नहीं बकवाद सुहावैं। नारि देखि भगि दूर लौ जावैं॥
विद्यारथिहिं सिखावहिं योगा। ब्रह्मचर्य साधन उपयोगा॥
लखि ब्राह्मण शिक्षा यह देहीं। सन्ध्या तर्पण यज्ञ सनेही॥

भजन

गुरु मिले जो विरजानन्द आनन्दके देने वाले॥
विद्या भण्डारकी चाभी दीने, देश उधारको शिक्षा कीने।
तन मन अर्पण करि लीने, श्रीस्वामी दयानन्द अधर्मके फन्द हटाने वाले।
गुरु मिले जो विरजानन्द आनन्दके देने वाले॥
गुरुजी अपने चितमें ठानी, स्वामी जो पर दयाको आनी।
चेला करे हरे दुख भारतके, द्वन्द बेड़ा धर्मके खेने वाले॥
गुरु मिले जो, जैसा चहिये चेला करना। वैसेही गुरुने शिक्षा करना
गुरुके प्रणको राखे चेला, हटा नहीं हरचन्द अधर्मकी ध्वजा हिलाने वाले।
गुरु मिले जो विरजानन्द आनन्दके देने वाले॥

❀ १ ❀

मुनि-इन्दु-अङ्क-मयङ्क-विक्रम-वर्ष, कार्तिक-मास था,
तब, एक आया छात्र, जो धारे हुए "संन्यास" था;
उस ने सुनी श्रुति-प्रिय सु-शंसा पूर्व विरजानन्दकी,
इस हेतु आ, कुटिया गही उस 'शुद्ध-सुमन-मरंद' की,

❀ २ ❀

दीपावली काली-निशामें जब चमक चमका चुकी,
औ, उस अमामें अँधेरी फैल कर, सहसा रुकी,
बन-बस्तियोंमें जब अँधेरेके सजे सब साज थे,
जब झाँकते ऊपर छिपे-से दूज को द्विज-राज थे,

❀ ३ ❀

उस 'मोरवी' की मेदिनीसे उस हिमालय-शीर्ष तक-
तप-तप्त-तनु जो "सत्य-शिव" को खोजता, बैठा न थक
रमता हुआ 'योगी' वही आया कुटीके द्वार पर !
धीरे किंवाड़े खटखटाने वह लगा जिज्ञासु-वर !!

❀ ४ ❀

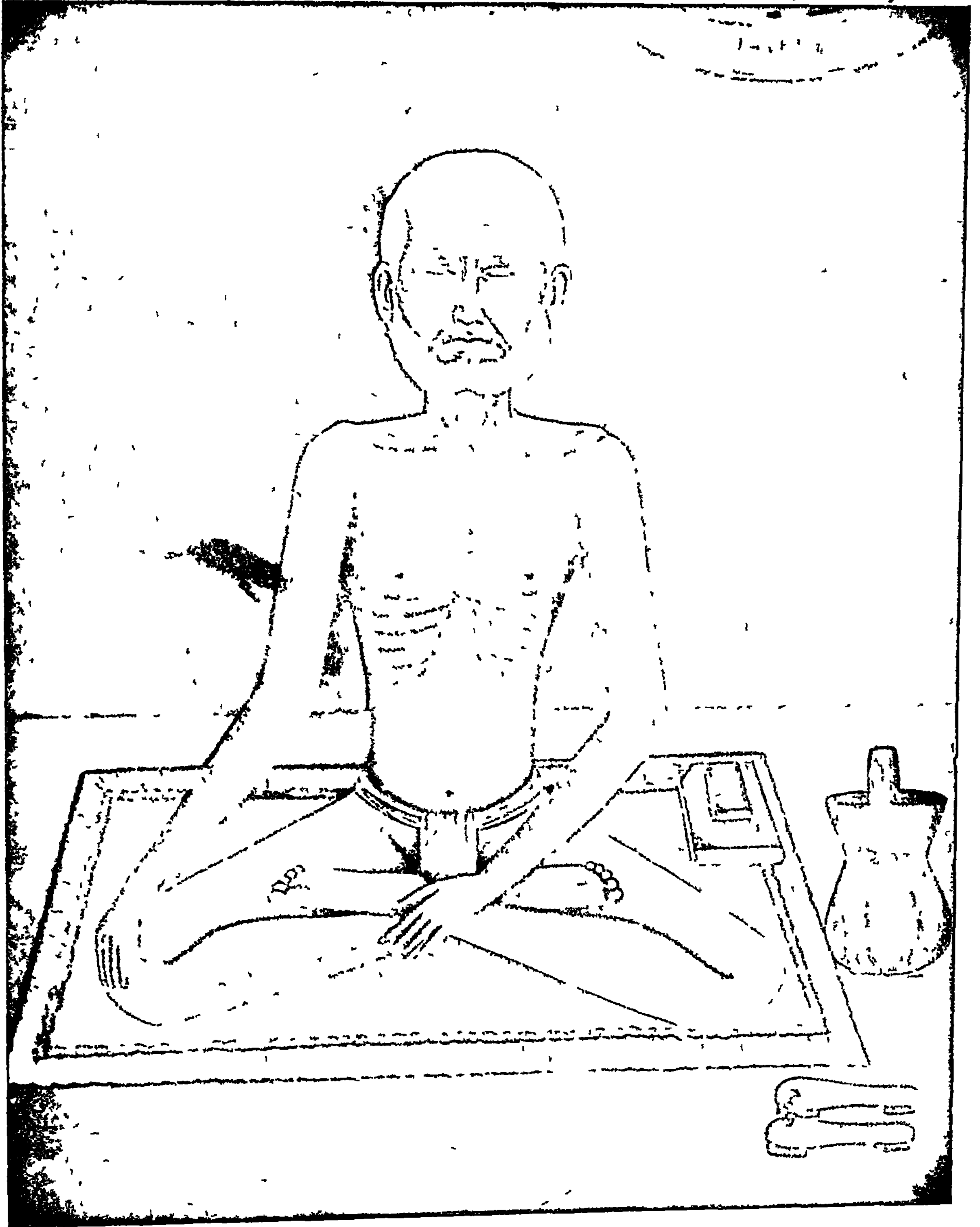
मुनिने कहा—
"है कौन ?"
"मैं हूँ—दयानन्द—सरस्वती;
"क्या चाहते !"
"विद्या",
"कहो—कुछ हो पढ़े ?,";—
—बोले व्रती:—
"सारस्वतादिक व्याकरण के ग्रन्थ मैंने हैं पढ़े";
कुंडा खुला तब, और वे अट्टालिका-ऊपर चढ़े !

❀ ५ ❀

पादाभिवन्दन कर, हुए उपविष्ट ऋषि-निर्देश से,
महाराज ने कुछ ली परीक्षा आप प्रश्न-विशेष से;
महाराज बोले फिर—"पढ़ा बहु ग्रन्थ-भाग अनार्ष है
सुन्दर, सरल औ सत्य हे वटु ! अन्य शैली आर्ष है !

❀ ६ ❀

"तुम चित्तसे यह सर्वथा दोगे कु-पद्धति त्याग जब,
उस आर्ष-पद्धति-मर्म का गौरव सकोगे जान तब !



श्री गुरु विरजानन्द सरस्वती।

प्रज्ञाचक्षु।

बहु क्षुद्र, जो हठ-वश गए कर ग्रन्थ-ग्रन्थन—कार्य्य है,
सुनिए—उन्हीं में एक 'अनुभूति-स्वरूपाचार्य्य' हैं !

❀ ७ ❀

"पण्डित सुपण्डित-मण्डली से वाद में जब लीन थे,
तब 'पुंसु'—"पुंक्षु" कहा गया, वे वृद्ध दन्त-विहीन थे।
रोका 'अशुद्ध—प्रयोग' पण्डित-मण्डली ने जब वहाँ,
हठ से स्वकीय-अशुद्धि की तब वृद्ध ही ने की न हाँ,॥

❀ ८ ❀

"प्रत्युत तभी रच एक "सारस्वत" दिया पोथा नया।
चाहे न जगमें 'पुंक्षु' उसका शुद्ध वह माना गया।
बुड्ढा रहा निर-लज्ज हो कर, झूंठ पर ही वह डटा।
वह भ्रष्ट—पुस्तक रच, मरण तक वह नहीं हठ से हटा॥

❀ ९ ❀

इन सब अनार्ष—कु-पुस्तकों को जो नदी में दो बहा,
तो, आर्ष—पुस्तक हम पढ़ाए", तब वटुक ने यों कहाः—
—गुरुदेव ! शुभ आदेश शिर पर धारता हूं मैं यही !
ब्रह्मर्षि ने जिज्ञासु से फिर उस समय ही यों कहीः—

❀ १० ❀

अब आर्ष-ग्रन्थों का वटुक उपदेश वे पाने लगे;
उपदेश-रवि से आन्तरिक वे कञ्ज खिल जाने लगे !
श्रीमान की उपदेश-सारस-स्रग् रहीं सौरभ—सनीं;
उस काल वटु की मत्त-सी वर-वृत्तियां भ्रमरी बनीं;

❀ ११ ❀

आनन्द-प्रद-गुरु का अतुल-अनुराग ज्यों उद्रिक्त था-
होता वटुक-मस्तिष्क त्यों पीयूष-वृष्ट्यभिषिक्त था !
निज-शिष्य की श्रीमान उत्कट तर्क-शैली देख कर,
होते प्रभूत प्रमुग्ध, पुलकित, प्रेमपूर्ण, प्रहर्ष—पर !!

❀ १२ ❀

विद्या-विनोद-प्रमोद-वश हो शिष्य औ गुरु-वर कभी—
युक्ति-प्रयुक्ति—पृषत्क-वर्षा बैठते जब कर कभी—
मुत्-पूर्ण होता दर्शकोंका उस समय हृत्-स्थान था !
होता तभी द्रोणाऽर्जुनीय सु-रम्य-रणका भान था !!

❀ १३ ❀

गुरुदेव तब उस शिष्य की करते सुशंसा भी, अहा ।
ब्रह्मर्षिने यों भी किसी दिन प्रेममें आ कर, कहा:—
"कोई करे क्या वाद तुम से, कालवाक् तुम हो महा ।
तुम में कुमत विध्वंस हित है पूर्ण वाग्बल आ रहा ॥

❀ १४ ❀

"सब पर बली है काल जिस विध त्यों तुम्हारी तर्क है ।
होता हमें हे भद्रप्रज्ञ, प्रतीत भद्रोदर्क है ॥
नाना पढ़ाए छात्र, पर पाया न यह आह्लाद था ॥
ऐसा किसी के भी पढ़ाने में न आया स्वाद था ॥।"

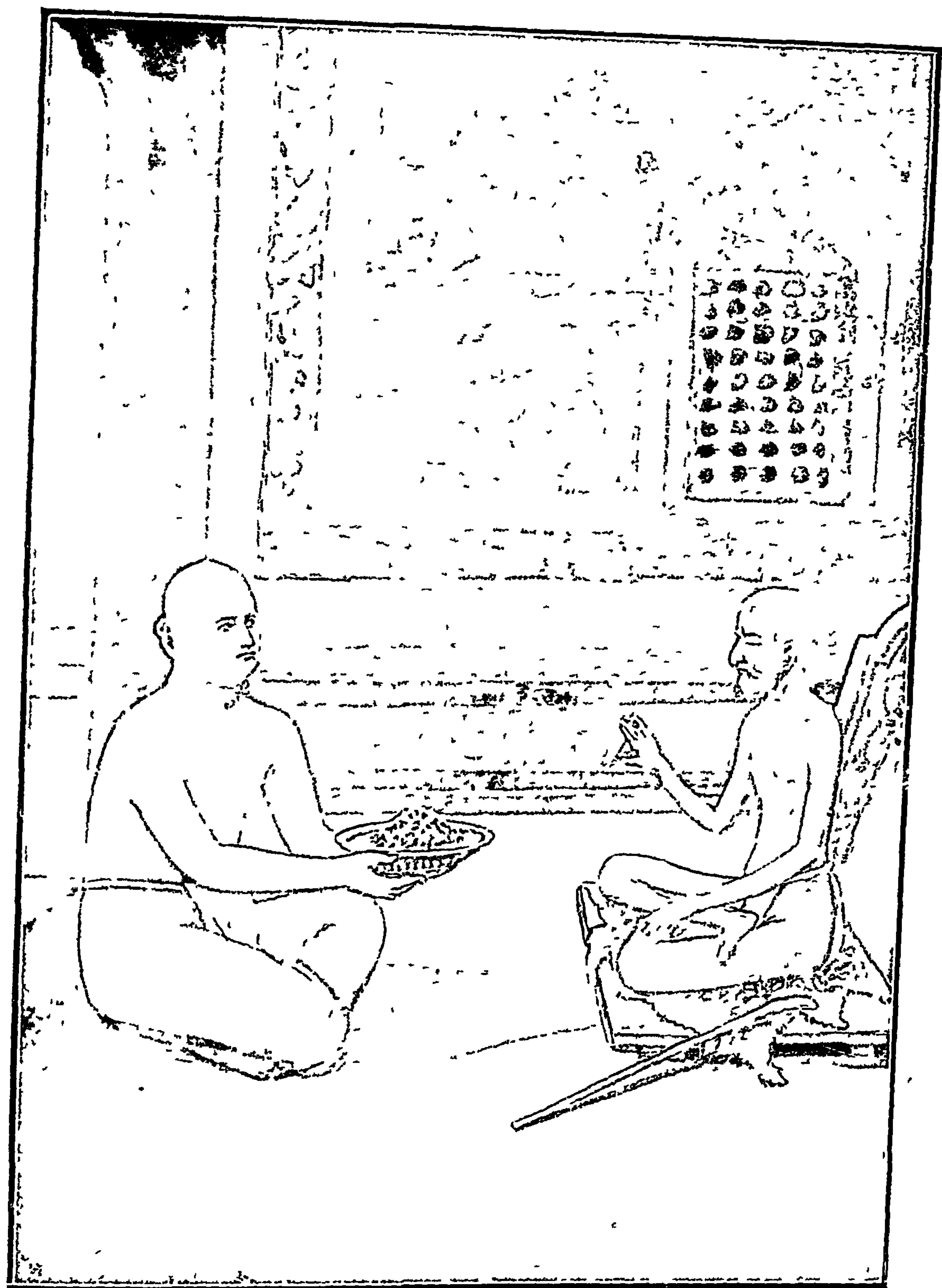
कवित्त

पढ़िके वेदान्तसूत्र महाभाष्य अष्टाध्याई औरहु प्रकार ग्रन्थ चित्त माहि धारे हैं ।
विदा होन मथुरासे भेट लिये गुरु हित आधा सेर लौंग कर मधुरे उचारे हैं ॥
बोले कर जोरि प्रिय अमिय रस बोरि, गुरु काह देव दक्षिणा न पासहू हमारे है ।
हरिदत्त अतिही असक्त हूं गुरुजी, काह देउ दक्षिणान मिलत संसारे हैं ॥

२

शिष्य सचा तुम देहु भेंट बचा मैं मांगता हूं दक्षिणा जो देनेके योग्य हो ।
करो विद्या प्रचार सारे घूमिके संसार उपकार:नाहि त्यागेहु जो स्वर्गहूको भोग हो ।
सत्यशास्त्रोंका उद्धार मनमतान्तरोंको टार वेद धर्मको अधार जो डूबा लगा रोग हो ।
हरिदत्त पुस्तक कसौटीना त्यागो कभी चले स्वामी दयानन्द सोवते जनु जाग हो ॥

दयानन्द जीवनकाव्यसे उद्धृत



गुरु-दक्षिणाका अपूर्व दृश्य।



अद्वितीय व्याख्याता स्वामी दयानन्द सरस्वती।
(फोटो महाराजा शाहापुरासे प्राप्त)

(चित्रपरिचय)

विद्या पढ़ कर महर्षि दयानन्द धर्म प्रचारमें प्रवृत्त होते हैं।

भजन

क्या चला वीर अलवेला जो धर्मकी झण्डा फहराता है॥
गुरुकी मणिको उरपर धारी क्षमा पैन जो लिये कटारी।
स्वामी विरजानन्दका चेला, वो चला अकेला जाता है॥ क्या
वेद सार जो बनी भुशुंण्डी धीरज वख्तर पहिरके डण्डी।
मन शुद्ध अश्व ले ठेला, धर्म्म अस्त्र वरसाता है॥ क्या चला०
साधन श्वांसा किला बनाये मुखद्वारा जो मारु लगाये।
ब्रह्म अस्त्रसे झेला, तहं नकली वीर भगाता है॥ क्या चला वीर
जहां डटे तहं किला ढहाये, नकली नृपतिको मारि भगाये।
क्या धर्म युद्ध वो खेला, वो जरा हार ना लाता है॥ क्या०
गुरुकुल शिक्षा हेत बनाये, विद्याको अंधकार नशाये।
वेदमणीके उजाले जहं देखो साफ दिखाता है॥ क्या चला०
सुनो आर्य अब मेरे प्यारे, गये किले अब मिले तुम्हारे॥
रक्षा करो कर मेले, नाहिं धर्म किला फिर जाता है॥ क्या०
पोप सिपाही सों बच रहिये आलस निद्रा सदा नशइये॥
सत्यके वख्तरके उरलेले, कोई अस्त्र न शस्त्र विधाता है॥ क्या०
धर्म्म किला जो गया तुम्हारा, मिलना था यह तुमै करारा।
हरिदत्त स्वामीदयानन्द दुखझेले तब ओम्‌को झंडा फहराता है॥
क्या चला वीर अलवेला जो धर्मकी झण्डा फहराता है॥

दयानन्द जीवनकाव्यसे उद्धृत

हरिगीतिका।

वह मत-मतान्तर की न हटती क्यों अन्धेरी —रात फिर?
होता न वैदिक-धर्म का क्यों दिव्य-पुण्य प्रभात फिर?
होती न अन्ध-परम्परा किस भाँति आप समाप्त वह?
होती सफलता क्यों न सन्मुख हाथ-बाँधे प्राप्त वह।

कर्नेल ब्रूक और स्वामीजीका वार्तालाप ।

कर्नेल ब्रूक एक विख्याता । एजंट गवर्नर जनरल ख्याता ॥
गेरुवा देखि होय रिशि भारी । अरुण नयन करि दें बहुगारी ॥
एक दिवसका सुनहु हवाला । बैठे स्वामी बाग रसाला ॥
कुर्सी डारि बागके माहीं । आवत साहब परे लखाई ॥
दोहा—सबै कहे हठि जाहु ऋषि, और डटे मग आय ॥
स्वामी ताजमिके रगड़को, समुझि रहे मनमाय ॥
आवत देखि उठे अगुवाई । टहरन लगे बाट महं जाई ॥
टोपी शिरते दियो उतारी । मिले स्वामिसों हाथ पसारी ॥
बैठे दोउ जन कुरसी डारी । वार्तालाप किये तहं भारी ॥
स्वामी पूछे साहब पाहीं । मानत धर्मको हौ की नाहीं ॥
तब साहब अस कह्यो बुझाई । धर्म स्थापन है मम पाहीं ॥
पर नुकसान लाभ पर सारा । धर्म अधर्मको करहिं विचारा ॥
जामें लाभ सोई है धर्मा । हानि पापका मानत कर्मा ॥
दयानन्द बोले हरषाई । साहबसों यह प्रश्न उठाई ॥
भला करहु तुम लाभकी हानी । शोचहु यामें बहुत गलानी ॥
दोहा—साहब तब पूंछत भयो, कहो मोहिं समुझाय ॥
स्वामी तब बोलत भयो, तुम कहँ नाहिं लखाय ॥
अहै लाभ कि है कछु हानी । गौरक्षामें कहौ बखानी ॥
अहै लाभ कछु हानि नहीं है । आपने सत्यहि सत्य कही है ॥
फिर क्यों मारत गाय विचारी । भला तुमारी काह विगारी ॥
साहब कह यह सत्य बतावैं । कालिह हमारे बँगले आवैं ॥
होइहि बात चीत तेहि ठाहीं । साहब अस कहि गयो तहांहीं ॥
दुसरे दिवस स्वामिके पासा । आये घोड़ा गाड़ी खासा ॥
रामस्वरूप ज्योतिषी साथे । स्वामी चले धर्मके गाथे ॥
गये प्रविशि बँगलाके माहीं । बैठायो स्वामिहिं धरि बाहीं ॥
दोहा—गौरक्षाके विषय पर, होत वार्तालाप ॥
वेद शास्त्रते घेरिकै, स्वामी लीन्हें छाप ॥



राजस्थानके पोलिटिकल एजेन्ट कर्नल ब्रूकसे गोरक्षापर वार्त्तालाप।



सर्वत्यागी दयानन्दर्षि।
(हरिद्वार कुम्भ मेलेकी समाप्तिपर सर्वस्वत्याग।)

(चित्रपरिचय)

संवत् १९२४ के हरिद्वारके कुम्भ मेले पर सत्योपदेश और सर्वस्व त्याग ।

चौपाई ।

जबतक मेला रहे अपारे । वेद धर्मको स्वामि प्रचारे ।
भये समाप्त विचारमें पागे । धर्म पुरातन शोचन लागे ॥
पुनि शोचन लागे मनमाहीं । यह अन्धकार हरहिंकी नाहीं ॥
तबतक हृदयसे शब्द सुनाई । विद्या पढ़हु बहुरि चितलाई ॥
करहु धीर धरि तप मन लाई । तब कछु करिहौ शब्द सुनाई ॥
"सर्व वै पूर्ण ॐ स्वाहा" । करके सब निश्चय यह चाहा ॥
जो कुछ रहा भवनके माहीं । दीन बांटि सबको तेहि ठाहीं ॥
वर्तन पलँग पीताम्बर धोती । शाल दुशाल और जो होती ॥
रोकड़ सहित सबै बटवाई । केवल आप लँगोटी लाई ॥
महाभाष्य अरु वस्त्रहुं साथे । गुरुपहं दीन भेजि कोउ हाथे ॥
दोहा—बानी अवधूत सूर्ति तहँ, माथे भस्म लगाय ॥
तहंते स्वामी चलि बसे, गङ्गातट नियराय ॥

चौपाई ।

तब लोगोंने पूंछन लागे । क्यों स्वामी ऐसे क्यों पागे ।
तब स्वामी अति निर्मल बानी । बोलि उठे उत्कण्ठा जानी ॥
सत्य ग्रहणकी करहिं उपाई । याते सबका देत बिहाई ॥
यह जंजाल-जाल करि भारी । निबहन देत न सत्य सँघारी ॥

सवैया

भारतकी लखि दीन दशा दुखनाशन हेत लिये इन टीका ।
त्यागि दिये पुर वस्त्र नहीं तन एक नंगोट सोऊ नहिं नीका ॥
भारतके अघ संकट टारन वेद प्रचारनकी सुख फीका ।
हरीदत्त सत्य पराक्रमके हित लोटत बालूमें देखो ऋषीका ॥

दयानन्द जीवनकाव्यसे उद्धृत

(चित्रपरिचय)

करणवासमें स्वामीजीका प्रचार तथा कण्ठी, तिलक छापकी निन्दापर ठाकुर कर्णसिंहका क्रोध और स्वामीजी पर तलवारका वार ।

तब बोले रईस क्रोधातुर । मम स्वामी ढिग चल न सरवर ॥
कहि कछु कटुक रीस उर आनी । बोला वचन भृङ्ग अस बानी ॥
तुमरे सरिस गुरू कह दासा । सनमुख होहु न चलि है श्वासा ॥
स्वामी हँसि बोले मृदुबानी । शास्त्रार्थ हित लावहु आनी ॥
नहिं आवैं तो हमहीं चलि हैं । हैं जो गुरू तो क्योंकर डरिहैं ॥
यह सुनि ठाकुर गयो रिसाई । अनुचित शब्द कहत अकुलाई ॥
जो मम खंडन मंडन करिहो । तो तुमरे हित नीक न धरि हों ॥
बुन्द अघात सहै गिरि जैसे । स्वामी वचन सहे तहं तैसे ॥

दोहा—महामत्त गजयूथ महं, पंचानन चलि जाय ।
स्वामि हृदय कछु शंकना, बोले वचन बढ़ाय ॥

शैर—इतना सुन कर करणसिंह क्रोधकर खींचली है तलवार ॥
उसका था साथी एक जो सामने आकर हाथ उठाया ॥
स्वामीजी मार धक्का उसको पीछे हटाया ॥
करना है अगर युद्ध तो जयपुर जोधपुर पास जावो ॥
अगर करना हो शास्त्रार्थ तो हमारे पास ही आवो ॥
आपके जो गुरु रंगाचार्यको बुलावो ॥
वृन्दावन रहते हैं वहां पर किसीको पठावो ॥
ऐसो कठोर वचन सारे नग्रमें फैल कर ॥
हिलाया सबके दिलको धर्मीको जैलकर ॥
सुनकर ठाकुर कृष्णसिंह आये हाथ लट्ठले ॥
कहे करणसिंहसे कृष्णसिंह पट्ठले ॥
छेड़ोगे अगर साधुको तो दिलमें जान भी लेना ॥
मचेगी आफत तुमपर भूल जाय ध्यान भी देना ॥

———



राव कर्णसिंहका स्वामीजीपर तलवारका वार और स्वामीजीका तलवारके दो टुकड़े कर रावको फटकारना ।



पानमें विष देनेवालेको यह कहकर छुड़ाना कि "मैं संसारमें किसीको कैद करवाने नहीं आया किन्तु सबको मुक्त कराने आया हूं।"

(चित्रपरिचय)

अनूपशहरमें श्री स्वामीजी महाराज पधार मूर्तिपूजादि पाखण्डका खण्डन करते । इससे स्वार्थी लोग चिढ़ गये । एक दिन एक दुष्ट स्वामीजीके समीप आ कर पान खानेके लिये भेंट धरा । स्वामीजीने सहज स्वभावसे मुखमें पान लिया, परन्तु रस लेते ही वे जान गये कि इसमें विष है । इसी घटनाको क प्रकार वर्णन किया है ।

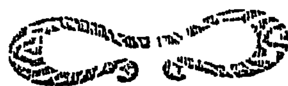
❀ चौपाई ❀

बारीक विषयना बुद्धिमें आवै । रज शक्कर गजना अलगावै ॥
ब्राह्मण दुष्ट तहां इक आयो । खण्डन मूर्तिपै क्रोध लिवायो ॥
दुष्ट पानमें जहर मिलाई । धर्म मूर्तिको दियो खिलाई ।।
विदित भये की जहर खिलाये । न्योलिक्रिया करि ताहि नशाये ॥
हा मतिमन्द मूढ़ अज्ञानी । लाभ हानि तुम सक्यो नजानी ॥
हित अनहित पशु पक्षिहु जाना । है मानुष्य बुद्धि ना आना ॥

दोहा—जाको रक्षक ईश है, का करि सकै मनुष्य ।
धर्म धुरंधर स्वामिपर, नाहिं चली कछु वश्य ॥

तहसीलदारको मालुम भयऊ । कैद कियो ताकहँ तेहि ठयऊ ॥
शय्यद अपने हृदय विचारे । स्वामी अस सुनि होंहि सुखारे ॥
स्वामी ढिग जब शैयद डोले । पर स्वामी कछु मुखहु न बोले ॥
शैयद कारण पूछन लागे । तब स्वामी बोले अनुरागे ॥
कैद करन हित ना जग आये । जगत कैदको तोड़न आये ॥
यदि वह दुष्टपना ना त्यागा । भलमन्सी त्यागहिं केहि लागा ॥
ब्राह्मणको दीन्यो छुड़वाई । भवन गयो ब्राह्मण हर्षाई ॥
खण्डन श्राद्धकी स्वामी करहीं । शिक्षा सबहिं साथ अनुसरहीं ॥

दयानन्द जीवनकाव्यसे उद्धृत



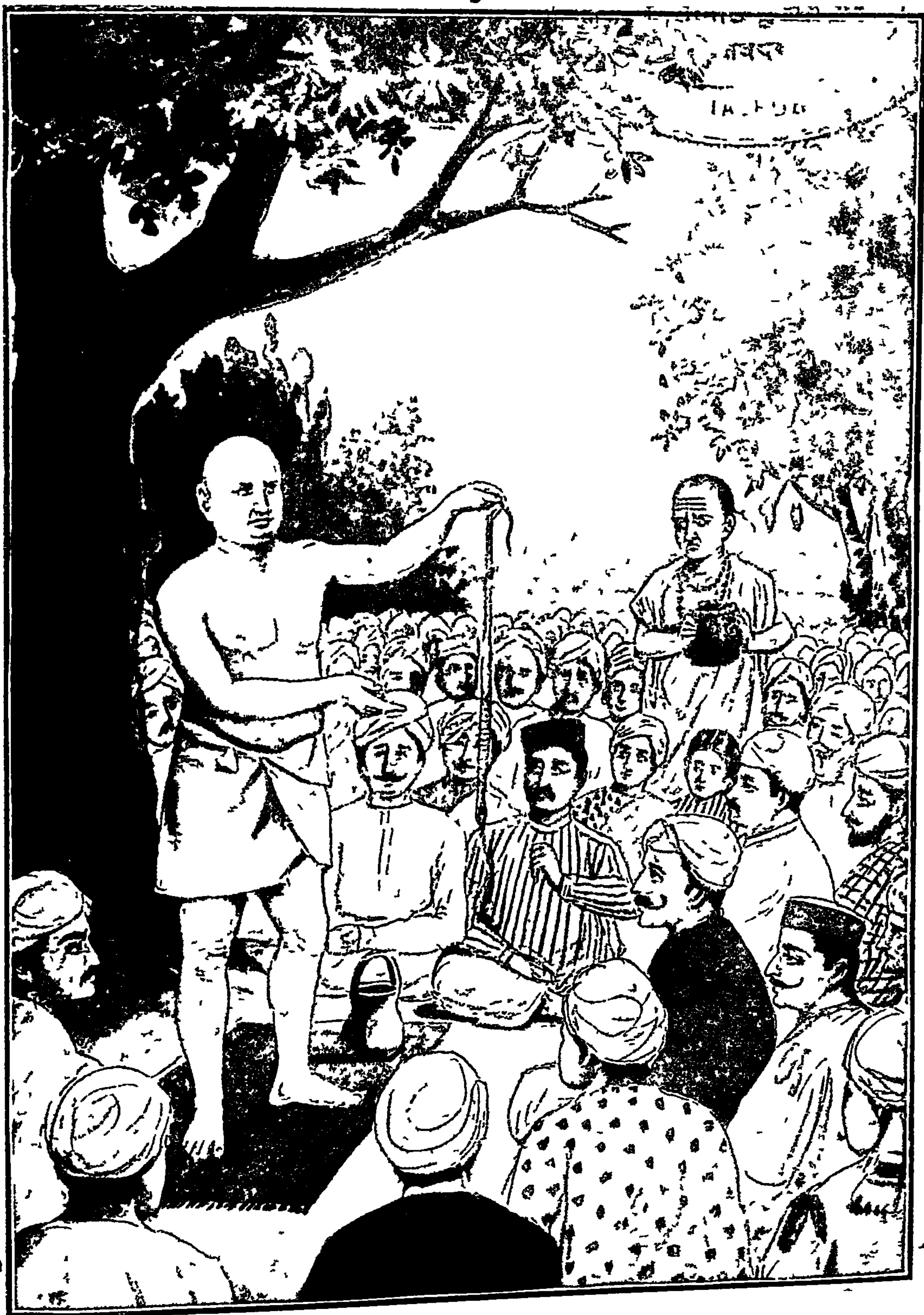
(चित्रपरिचय)

विषधर सर्प और स्वामी दयानन्द

पौराणिक पद्धतिसे विषधर सर्प भी एक पूजनीय देवता माना जाता है। एक बार एक सर्प पूजक ब्राह्मण स्वामीजीसे शास्त्रार्थ करने आया। उसने अपने पास एक बड़े डिब्बेमें एक विषधर सर्प नित्य पूजाके लिये रख छोड़ा था। शास्त्रार्थमें अपनी निर्बलता जान सबके सन्मुख स्वामीजीपर यह कहकर उस विषधरको फेंक दिया—"लो, महादेव आप ही न्याय कर देंगे कि तुम सचाईपर हो या मैं"। वह सर्पद्वारा स्वामीजीकी समाप्ति कराना चाहता था, परन्तु ईश्वरको अभी ऐसा करना स्वीकार नहीं था। इसपर स्वामीजीने एक ही झटकेमें उस विषधरको, जो उनके पैरोंमें लिपट गया था, परे फेंक दिया तथा तत्काल उसका सिर अपनी एंड़ीसे कुचल दिया, साथ ही उस ब्राह्मणकी ओर मुख कर कहा, 'तेरे देवताने बहुत देर लगाई और मैंने फैसला शीघ्र कर दिया।" पुनः उपस्थित सज्जनोंकी ओर संकेत कर कहा—'जाओ और लोगोंको बतलाओ कि झूठे देवताओंका इस प्रकार नाश होता है"।

इस घटनाका वर्णन स्वर्गीय मैडम ब्लैवैडस्की (भूतपूर्व प्रधाना थियोसोफिकल सोसाइटी) कृत 'केव्स ऐण्ड जंगल्स फ्रौम हिन्दुस्तान" नामक पुस्तकमें है।





एक ब्राह्मण देवताका स्वामीजीपर शिवके गलेके हार विषधर सर्पको फेंकना
और स्वामीजीका झटककर सर्पको कुचलना और लोगोंको कहना
कि "झूठे देवताओंका इस प्रकार नाश होता है।"



शास्त्रार्थ काशी।

(चित्रपरिचय)

काशी शास्त्रार्थ।

दोहा—इस शास्त्रार्थके सब हालको, जो तुम चाहो जान ॥
'काशी शास्त्रार्थ'को देखिये, लखिये करि भल ध्यान

चौपाई।

पर संक्षेप कहब कछु गाई। सुनिये आर्य कहौं समुझाई ॥
प्रथम मूर्ति पूजा चितधारी। शास्त्रार्थ रण सबहिं बिचारी ॥
पण्डित अपने प्रकरण त्यागे। जगतके कारण कर्ता लागे ॥
स्वामी उत्तर देन विचारें। पण्डित करिगुल साथ पुकारें ॥
भये पहर इक शास्त्र झमेले। स्वामी तहां थे आप अकेले ॥
जिमि शृगालमें सिंह अकेला। ताहि भांति स्वामी रण ठेला ॥
पण्डित तहां बहुत हठ लीन्हें। पर मूरति नहिं निश्चय कीन्हें ॥
बार बार स्वामी ललकारे। वेद प्रमाणसे करहु निकारे ॥

सोरठा—सुनि स्वामीके बैन, नैन बन्द करि ब्राह्मणन ॥
जाहिं बन्द हो नैन, तबहिं माधवाचार्यने ॥

दोहा—काढि संस्कृत पृष्ठ कछु, स्वामिके किये हजूर ॥
कह .असत्य यह वेद है, देख लेहु भरिपूर ॥

चौपाई।

यज्ञ समाप्त करे यजमाना। करै श्रवण वह कथा पुराना ॥
गृह्य सूत्रके पृष्ठ निकारी। श्रुतिके मन्त्र कहत यह भारी ॥
सब लोगोंने प्रश्न उठाई। पुराण शब्द अभिप्राय बताई ॥
तब स्वामी अस उत्तर दीने। सुनिये पण्डित सकल: नवीने ॥
पहिले असली संस्कृत पढ़िये। फिर आग पीछ सम्बन्धको मढिये ॥
स्वामि विशुद्धानन्द अस कीने। पृष्ट उठाय स्वामि कर दीने ॥
पढ़ैं आप यह कहि धरि दीने। स्वामी कह तुम पढ़हु नवीने ॥
कह्यो विशुद्धानन्द बहोरी। चस्मा पास नहीं घर छोरी ॥
हट कीन्हे स्वामी कर लीन्हें इन्द्रजी अस्ताचल चित दीनें ॥

चहुंदिशि औरि तिमिर चहुं वोरा। स्वामि मांगे दीप अंजोरा ॥
पौराणिक इक बत्ती लाये। जामहँ एकै तरफ लखाये ॥
दोहा—धुंवला नहिं कछु लखि परे, स्वामी कह तहँ टेरि ॥
तनिक रोशनी लाइये, लाये पण्डित हेरि ॥

चौपाई।

टूटी ललटेन इक लाये। धुम्र युक्त नहिं साफ लखाये ॥
खड़ा भया ले स्वामी: आगे। पढ़न लगे स्वामी मन पागे ॥
लगा दुष्ट वह हाथ हिलाने। लखि चातुरता मन मुसकाने ॥
स्वामी लखत मिनटना बीते। स्वामिविशुद्धा उठि विपरीते ॥
कह नहिं ठहर सकैं कछु देरी। जीतकी डंका सबही टेरी ॥
स्वामी कह असभ्य यह रीती। शोचनीय हैं करत कुरीती ॥
परको सुनइ ऋषीकी बानी। जिमि मेंढक बोलहिं परि पानी ॥
ताहि भांति सब शोर मचाये। सुनव कौन उठि सब अगुवाये ॥
दोहा—लखि अनुचित इन्स्पेक्टर, रघुनाथप्रसाद नृप पास ॥
भला काह यह करतहो, शभा घात विश्वास ॥

चौपाई।

तुमरे सन्मुख बनि अन्यायी। छूरी स्वामी गरदन लाई ॥
करि प्रबन्ध क्या करी उपाई। सो तो आवतहीं बिगराई ॥
आपको जानि रहे चुप साधी। अब असभ्यता बढ़त उपाधी ॥
यह सुनि नृपति बांह करडारी। इन्स्पेक्टर युत आप पधारी ॥
कहन लगे मारग महँजाई। इससे आपसे काह बुराई ॥
आप भी पूजक मूर्तिके अहहीं। शत्रु ते आपन विजयको लहहीं ॥
समाचार यह पेपर माहीं। छापे सत्य थे दुरयो नाहीं ॥
पत्र विपक्षी लखि बलहींना। सत्यहि सत्य प्रकट सो कीना ॥
दोहा—पौराणिक विद्वानके, गये पोल वियराय ॥
काशीकी सब विद्वता, सारी गई लखाय ॥





अद्वितीय व्याख्याता स्वामी दयानन्द सरस्वती

[फोटो आर्यसमाज दानापुरसे प्राप्त]



भारतके जङ्गी लार्ड रोबर्टस और निर्भीक सन्यासी।

(चित्रपरिचय)

लार्ड रोबर्टस् और निर्भीक संन्यासी।

काशीसे निपटकर स्वामीजी सकरके कुम्भ मेलेपर प्रयाग पहुंचे और वैदिक धर्मका प्रचार करने लगे। वहांसे चलकर स्वामीजी मिर्जापुर, डुमरांव, आरामें धर्म-प्रचार करते हुए पटने पहुंचे। वहांसे दानापुरमें स्वामीजीके कई व्याख्यान हुए। एक दिन भारतवर्षके सेनापति लार्ड रावर्ट्स स्वामीजीके व्याख्यानमें पहुंचे। उस दिन स्वामीजीने ईसाई मतखण्डनपर व्याख्यान दिया व्याख्यानके अन्तमें सेनापतिजीने उठकर स्वामीजीको प्रणाम किया तथा उनकी बड़ी तारीफ की और कहा—

"When you can speak in this fashion on the Bible in our presence you must care but little, for others. A real Sanyasi will fear nothing."

अर्थात्—"जब आप हमारी उपस्थितिमें इस प्रकार बायबिलपर भाषण कर सकते हैं तो और छोटे मोटे लोगोंकी तो आपको कुछ परवाह ही नहीं होती होगी। ठीक है, सच्चे संन्यासीको संसारमें किसीका भी डर नहीं॥"



(चित्रपरिचय)

देहली दरबार।

चौपाई

श्री स्वामी करि सबहिं निमंत्रित। आये सज्जनगण तहँ पूरित॥
शयनालयमें स्वामि जुहारे। निम्नलिखितगण तहां पधारे॥
मुन्शी कन्हइयालाल अलखधारीबाबू नवीनचन्द्र रायजी तहां पधारी
बाबू केशवचन्द्रजी सेन। मुन्शी इन्द्रमणी सुख देन।
दोहा—बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामणि, आनरेबुल सर शैय्यद खान॥
उक्त महाशय जुटि गये, स्वामीजी किये बयान॥

कवित्त

हम सब इस समय धार्मिक संशोधनमें, हुए हैं कटिबद्ध तो निवारण करें शंकाको।
तो सच्चे धर्म शुद्ध भाव करिये सब ग्रहण मिलि, चलिये एक मार्ग शुद्ध भेदभाव बंकाको
द्वेषहू कुटिलताको करिये सब त्यागन अब, चलिये पयनीर सम मिलि सब ढंकाको।
हरीदत्त सम्मति हमारी एक है यही, कहत स्वामी दयानन्द धर्महूं मदंकाको।

❀ २ ❀

वैमनस्य दूर करनेका केवल उपाय एक, पहिले विरोध धर्मको दूर कीजिये।
मही तो उपद्रव अशान्तिकी जड़ हैं, जासों अनुराग सत्य सुहृद किमि कीजिये।
चारोंवेद ईश्वरका ज्ञान जो प्रचण्ड हैं, अक्षरशः अनुकूलता अनुयायितापर रीझिये
हरीदत्त शंकाजो होय कछु हृदय महँ, हमसे प्रत्यक्षही प्रमाण आप लीजिये।

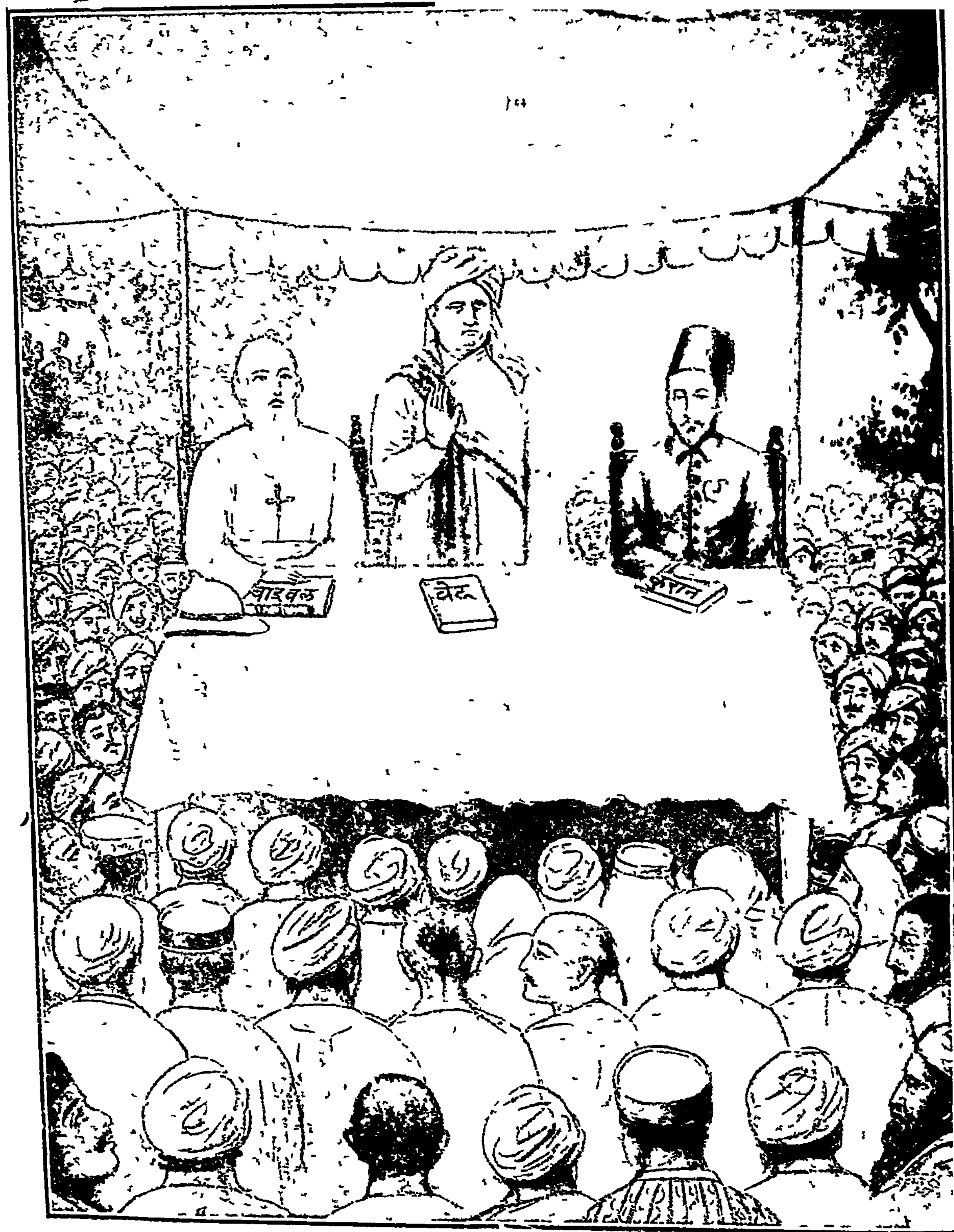
❀ ३ ❀

नेत्रहीन जैसे संसारको अँधारो लखे, ताके समूर किमि अरसा दिखाइये।
बहिरा क्या जाने कि रागसुर कैसे होत, ताके श्रवणलों वेदको सुनाइये।
मांसहारी आगे जीव हिंसा व्याख्यान करैं, ताके कठोर उर दया किमि नाइये।
ताही भांति हरीदत्त जडवत् चित नृपति सब, उठके पधारे सब कासों लखाइये।
दोहा—सबसों कहे पुकारकें, मद्य मांस श्रुति हीन॥
यासों इन्हें न खाइये, वेदसों मतौ प्रवीन॥

(दयानन्द जीवनकाव्यसे उद्धृत)



महारानी विक्टोरियाके दिल्ली राज्याभिषेकके समय ऋषि दयानन्दका श्री केशवचन्द्र सेन, सर सैय्यद अहमद, नवीनचन्द्र राय प्रभृति सुधारकोंके साथ देशोद्धार विषयपर वार्त्तालाप।



ईसाई औरमुसलमानोंके साथ सत्यधर्मविचार (मेला चान्दापुर)

(चित्रपरिचय)

मेला चांदपुर ।

चौपाई ।

मुन्शी प्यारेलाल रईश । मेला किये कहत सब वाईश ॥
भिन्न:भिन्न मत होइ विरोधा । अरु सिद्धान्तमें करते क्रोधा ॥
दोहा—प्रत्येक सम्प्रदाय विद्वानको, लीजै यहां बुलाय ॥
सत्य मत :उपदेशकी, निर्णय करैं बनाय ॥
सर्व सम्मतिसे धार्मिक चुनकर । कहहिं मत सबही गुनकर ॥
मुन्शी दृढ संकल्प ये कीने । लिखि अर्जी जो कलक्टर दीने ॥
आज्ञा प्राप्त किये तेहि काला । चांदापुर सब आय रसाला ॥
लिखे पत्र तहँ आय जुहारे । अति आदरसों सबहिं बैठारे ॥
स्वामी दायानन्दजी सरस्वती । वैदिक आर्य्य समाजके हिती ॥
मुन्शी इन्द्रमणी जी मुहम्मदी । मतिके प्रसिद्ध प्रति पक्षवदी ॥
पादरी टी० जे० स्टाक साहब । इंजीलानुवादक लाजे शियनसब ॥
पादरी नवल साहब पारकर । साहब पादरी जान टाम्सनर ॥
मौलवी मुहम्मद कासिम उस्ताद । मौलवी शयद अबुलमन्सूब आजाद
दोहा—अपर पंडित सब आयऊ, जहं लगि थे विद्वान ॥
शिक्षित और प्रतिष्ठित, आये तहां महान ॥
मुन्शी प्यारेलालकी औरा । अतिथ्य प्रबन्ध भयो चहुंवोरा ॥
उत्तम अति स्थान सुहाये । अतिहिं विचित्र गये सजवाये ॥
यहांका सम्वाद अक्षरशः छपाई । पुस्तकाकार लखैं मगवाई ॥
जाको पढि भये आर्य्य घनेरे । सदोपदेश ऋषी जो टेरे ॥
स्वामी किये निरुत्तर सबको । धारा प्रवाह संस्कृत धमको ॥
सन् अठ्ठारहसो सतहत्तर । एकतिस मार्चको पाये अवसर ॥
स्वामी आय गये लुधियाने । सत्योपदेश करन तहँ ठाने ॥
सुनि आगमन नगर चहुंवोरा । भद्र पुरुषको भयो बटोरा ॥
दोहा—सुनि २ आवैं लोग सब, आप सुनहिं व्याख्यान ॥
प्रति संख्या बढने लगी, आवहिं पुरुष महान ॥

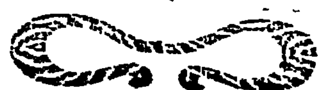
(चित्रपरिचय)

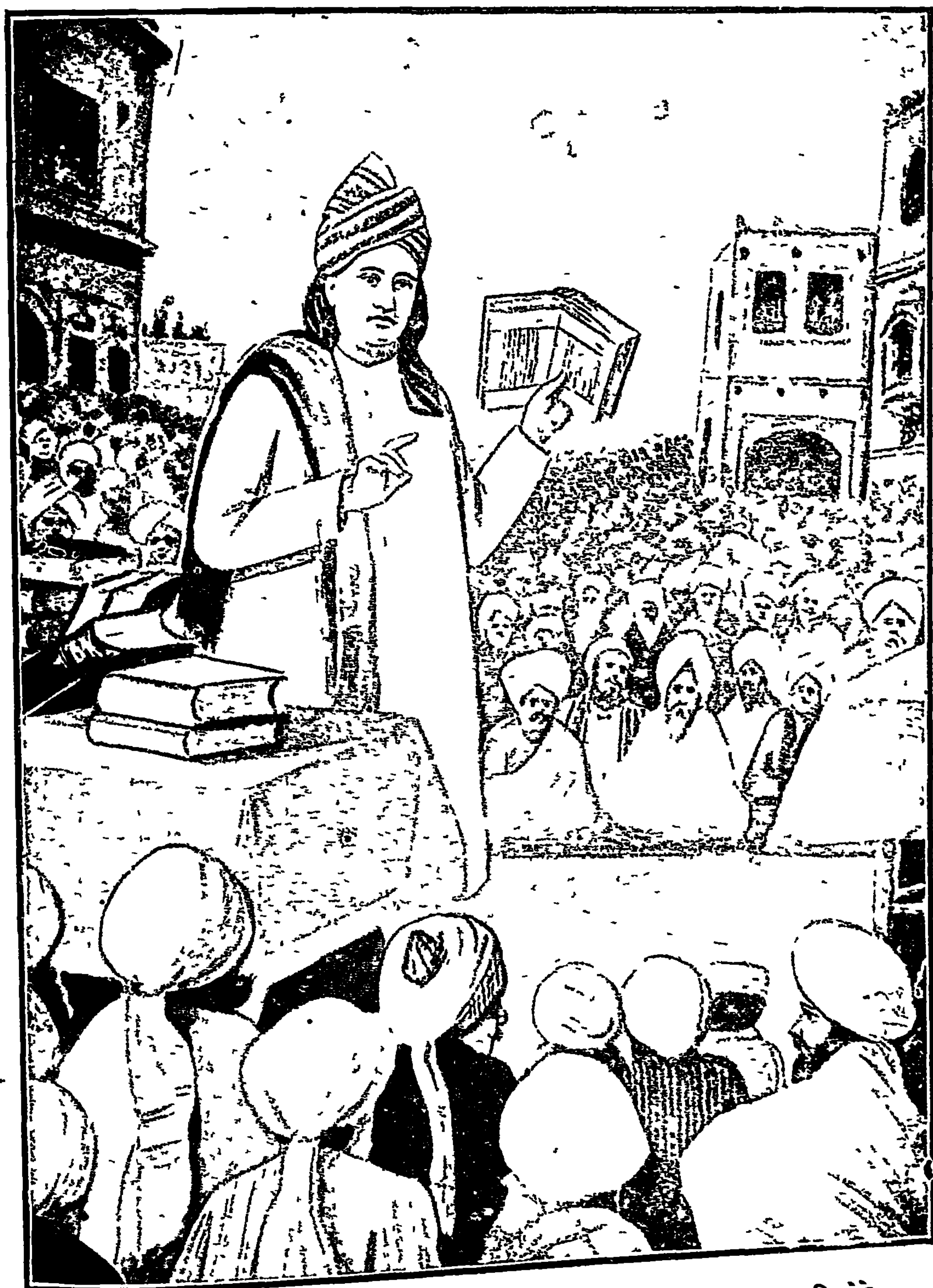
पुष्प-वर्षा ।

दोहा—अमृतसरते स्वामी जब, जान हुए तैयार ।
पौराणिक तब युक्ति करि, कहे लगे ललकार ॥
शास्त्रार्थ स्वामीसों करि हैं । इनसे काहु भांति ना टरिहैं ॥
आर्य समाज दियो विज्ञापन । शास्त्रार्थ हित आइय सब जन ॥
ना पौराणिक परे लखाई । तब लोगन अति लजवाई ॥
भगवानसिंह साहब सर्दार । निश्चय भय इनके दर्बार ॥
षट् सहस्र मानुष्य पधारे । शास्त्रार्थ हित सुनन करारे ॥
आये लगभग रईस तहँ सत्तर । चुने हुए विद्वान जो सुन्दर ॥
सन्मुख चौकी उभै विछाई । गड़बड़ होय न जामें आई ॥
बोलै नाहिं बीचमें कोई । कियो प्रबन्ध तहां सब सोई ॥
तहँ पर कछुक उजड्ड पधारे । जै जै करत शभा पशु धारे ॥
स्वामीके सन्मुख सब जाई । पत्थर ईंट रहे बरसाई ॥
बहुरि पुलिसकी : भय करि भागे । जान समय यह कहने लागे ॥
दोहा—निज सिद्धान्तके पत्रको, काल्हि देहिं पठवाय ॥
स्वामी कछु शंका नहीं, रहन लगे चित चाय ॥

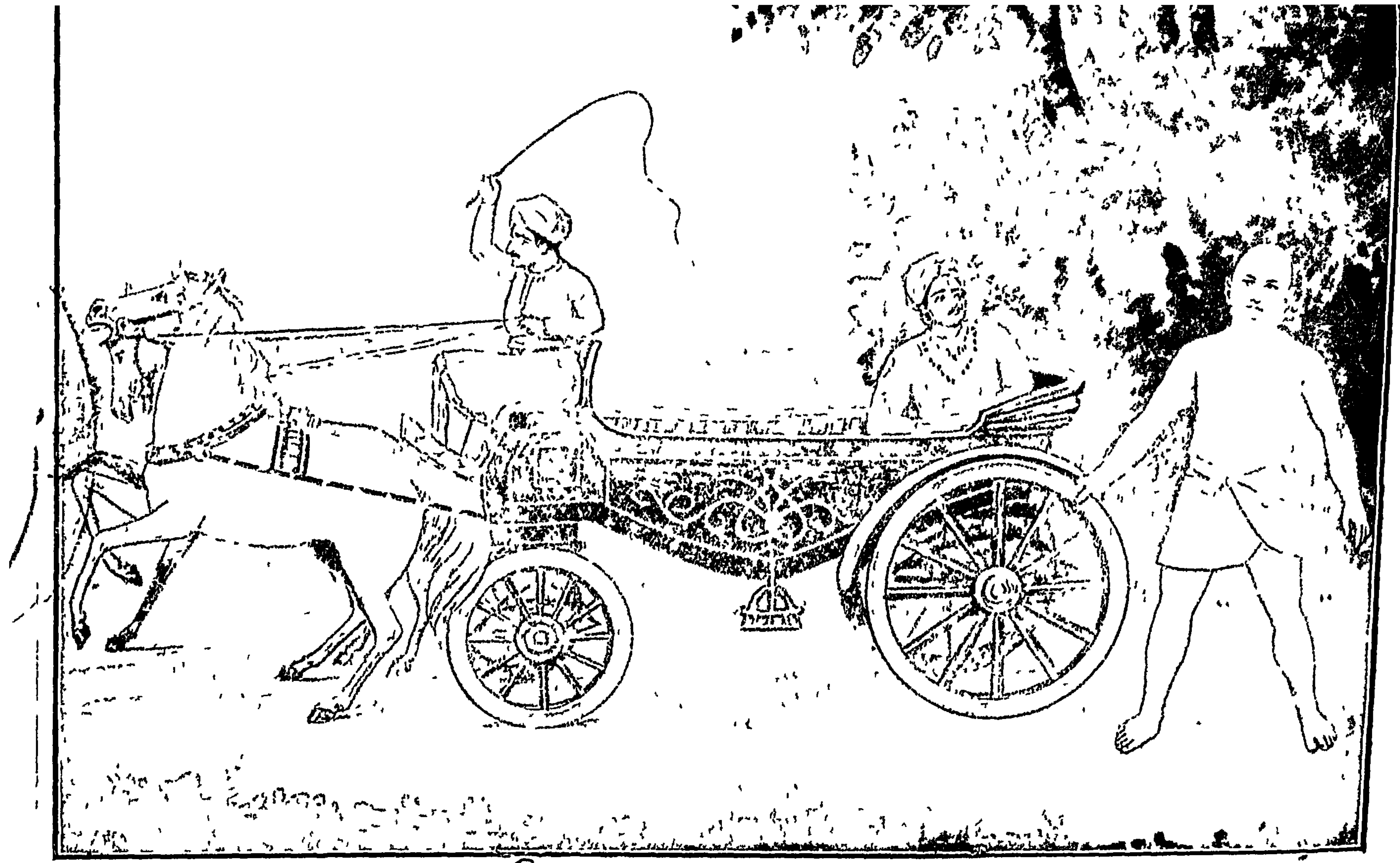
चौपाई ।

आय किसीने स्वामिसों भाखी । सर्व भेद कछु गुप्त न राखी ॥
स्वामि शिक्ख मारनके हेता । अइहैं स्वामी रहैं सचेता ॥
जो जो सोवत वहां पै आई । स्वामी सबसों कह्यो बुझाई ॥
यहांसे जाय अनत कहुं सोवैं । नाहीं तो पाछेसे रोवैं ॥
पौराणिक अमृतसर केरे । वेद नाम नहिं जानत कोरे ॥
सो स्वामीकी संगति पाई । लागे पढ़न वेदको आई ॥
तहँके लोग धर्म ना जानैं । सबै इसाई मतको मानैं ॥
होन ईसाई सबी विचारी । पर स्वामीने जाय उबारी ॥





अमृतसरमे स्वामीजीके व्याख्यानोंमे पत्थरोंकी वर्षा और स्वामीजीका कहना कि मेरे आक्षेपोंके उत्तरमे प्रतिवादियोंके पास यही पत्थर है, मेरे ऊपर यह फूलोंकी वर्षा है।



जालन्धरमें बाल-ब्रह्मचारीका ब्रह्मचर्य-बलका प्रदर्शन।

(चित्रपरिचय)

बाल ब्रह्मचारीका अनन्त बल ।

अमृतसरमें ४० नवयुवकोंको ईसाई बननेसे बचाया। पुनः वहांसे गुरुदासपुरमें वैदिक नाद बजाते हुए तथा समाज स्थापित करते हुए स्वामीजी जालंधर पधारे और सर्दार विक्रम सिंहकी कोठीमें लगातार ४० व्याख्यान दिये तथा समाज स्थापित हो गया। एक दिन सरदार महाशयने स्वामीजीसे कहा—"आप तो ब्रह्मचर्यकी महिमा बहुत बताते हैं।" उत्तरमें स्वामीजीने कहा, "हां, शास्त्रोंमें जो ब्रह्मचर्यका वर्णन किया गया है, वह सब सत्य है।" इस पर सरदार महाशयने पुनः कहा,—स्वामीजी, आप भी बाल ब्रह्मचारी हैं पर आपमें तो वैसा बल प्रतीत नहीं होता।" तब आपने कहा "कभी देखा जायगा।" जब सरदारजी स्वामीजीको नमस्ते कह कर विदा हो अपनी फिटिन पर चढ़े और कोचवानको गाड़ी हांकने कहा तब स्वामीजीने सहजसे उठ कर फिटिनको हाथसे पकड़ लिया—कोचवान घोड़ोंको चाबुकपर चाबुक लगाता जाता था पर घोड़े टमसे मस न हुए। जब उन्होंने मुख फेरकर पीछे देखा तो स्वामीजीको बग्गी पकड़े पाया। स्वामीजीने तब यह कहते हुए गाड़ी छोड़ दी कि—"लो, तुम्हें ब्रह्मचर्यका दृष्टान्त मिल गया।" सरदारजी चकित हो चले गये।



(चित्रपरिचय)

वेश्यागामी नरेशको फटकार ।

दोहा—एक दिवस गुरुराज जब, पहुंचे राज-आवास,
वेश्या नन्ही जान को, देखा राजन-पास ॥
राजा जीने लख मुनि आवन, तुरतहिं नन्हीजान छिपावन ।
देखत अस कुदृश्य मुनेशा, बोले पुरित धर्म आवेशा ॥
भजन—'होकर सिंहों की सन्तान, कैसा नीच कर्म करते हो ॥
"होते राजा सिंह समान, राजन सिंहो की सन्तान;
कैसे कुतिया का कर मान, अपनी लोक लाज हरते हो ॥
करते कुतियाको तुम प्यार, तज कर हा कुलवन्ती नार,
प्रबल ऐसा पाप प्रहार, भू को पापों से भरते हो ॥
राजन ! पजर जाओगे आप, सहकर दुर्व्यसनोंका ताप,
शिर पर चढ़ बोलेगा पाप, क्यों इस अग्नि में जरते हो ॥
छोड़ो छोड़ो एसे कर्म, धारो सद् मर्याद् सुधर्म,
कीजे वैदिक कृत्य सुकर्म, क्षत्राई का दम भरते हो ॥
दोहा—इस प्रकार उपदेश कर, लौटे रिषी तुरन्त ।
उत अक्षर अक्षर हुआ, राजा हृदय भरन्त ॥
चौपाई—नन्ही चल आई घर हांपन । खावत वल सम फणिधर सांपन ।
जान रिषी उपदेश प्रभावा । अवश नरेश दैंय विसरावा ॥
कुतियाकी उपमा सुन स्यानी । वैर प्रचंड धार रिस्यानी ॥
अस उपाय मन लगी सुझानी । जस प्रभु जीवन ज्योति बुझानी ॥
नन्ही अन्य द्रोहि मिल सारे । रिषि जीवन नसान मन धारे ॥
जगन्नाथ नौकर विश्वासी । रहत सदा रिषिके ढिग पासी ॥
चार वर्षसे रह रिषि साथा । नित भोजन पकात निज हाथा ॥
सोहि नन्ही निज भवन बुलाई । बोली प्रेम सहित अकुलाई ॥
दोहा—बहु भारी इक काम है, जासु बुलाए आप ।
करके काम कठोर तू, करो दूर सन्ताप ॥



जोधपुरके राजमहलमें निर्भीक सन्यासीकी वेश्यागामी
नरेशको फटकार ।



विष देनेवाले जगन्नाथ पाचकको (प्राणरक्षार्थ) रुपये दे विदा करना।

(चित्रपरिचय)

विषदाताको प्राण दान ।

॥ चौपाई ॥

बहुतक देर बात रहिं होती, बींध दिया कुल्टा ने ओती ।
कनक कामिनी से अंधियाई, नयन-विवेक गए चुंधियाई ॥
चतुर्दशी अश्विनी वदीसा, दुप-सम्वत उन्नीस चलीसा ।
दुग्ध मांहिं विप विपम मिलाई, ऋषिवर को हा दिया पिलाई ॥
एकहि तस रातरि के अन्ता, कीए बहुत वमन मुनिवन्ता ।
जलन और व्याकुलता भारी, भई वेदना शूल अपारी ॥
रुग्ण भए अस अवसर हेटे, रहे अन्त तक ही मुनि लेटे ।
जगन्नाथ को प्रात बुलाई, बोले रिषि इकन्त अकुलाई ॥

॥ दोहा ॥

"जगन्नाथ यह क्या किया, विष सह दुग्ध पिलाय ।
काम न मम पूरा भया, पूर्वहि दिया विलाय"॥

॥ चौपाई ॥

सुनतहि अस रिषिवर की वानी, विप्रगात अरु मन कम्पानी ।
नैन नीर भर बोला पापी, 'नाथ किया अनहित मैं आपी ॥
रोरो पुन सब हाल सुनाया, सुन उमड़ी रिषिवर की दाया ।
रिषि ने रुपे बहुत से लेकर, पापी के हाथन में देकर ॥
कहा, 'अब विप्र विलम्ब न लावो, ले यह द्रव्य भाग द्रुत जाओ
'जाओ राज नैपालहि भागी, कहिं पकड़ा नहिं जाय अभागी"
लेकर द्रव्यगात अति कम्पत, पापी हुआ वहां से चम्पत ॥

॥ दोहा ॥

प्रात बढ़े बहु वेदना, शूल और अतिसार ।
सूर्य्यमलजी डाक्टर, आए करन उपचार ॥

(चित्रपरिचय)

मृत्यु शय्या ।

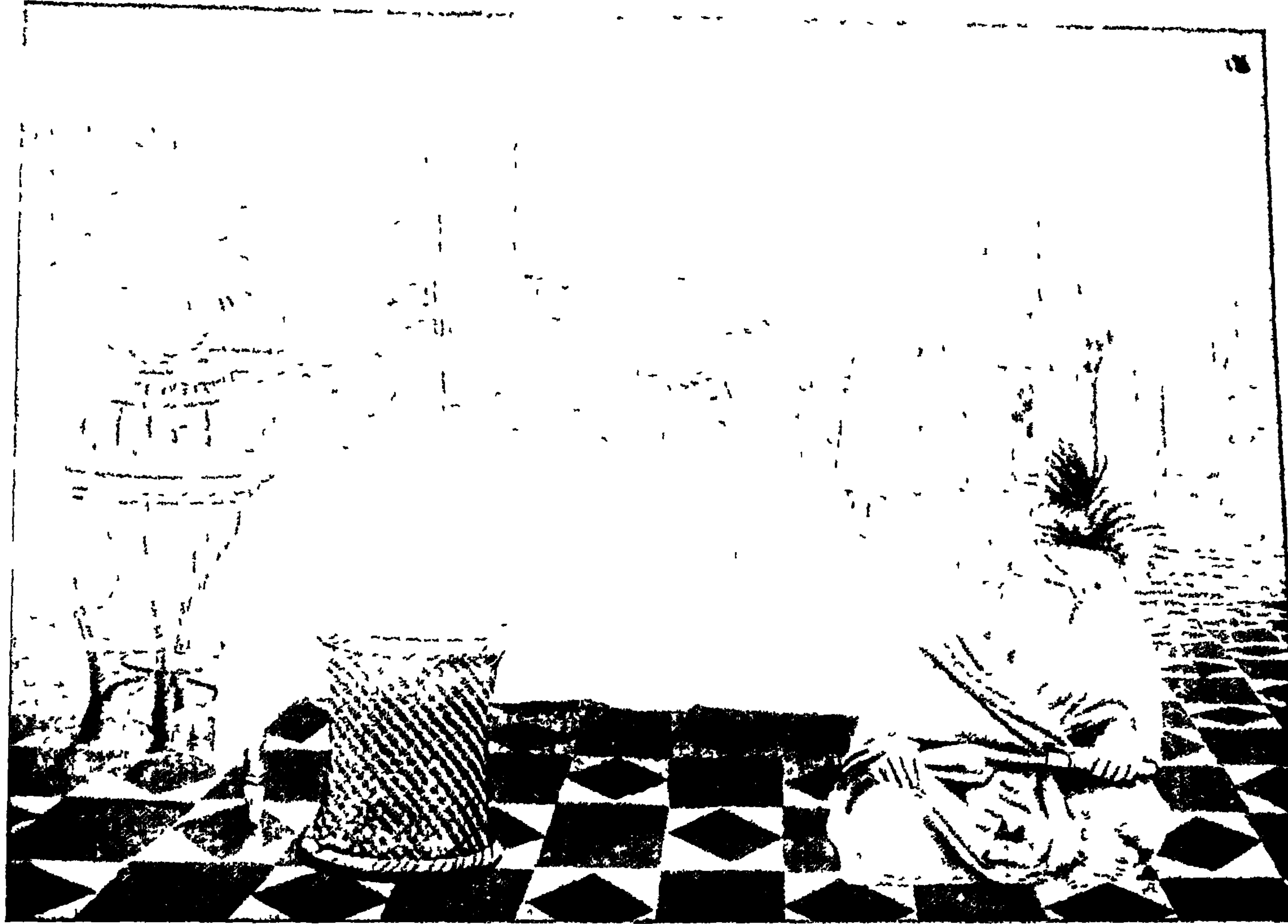
दोहा—कार्तिक कृष्ण चौदशी, बढ़ी व्यथा अत्यन्त ।
छाले सब हि गात पर, निंकल पड़े इक्यन्त ।
रोवन लागे भक्त जन, सिसक सिसक अत्यन्त ।
दो दुशाल दो सौ रुपये, रिषि मंगवाय तुरन्त ॥

चौपाई—एक शाल सौ रुपये लेकर, पंडित भीम सेन को देकर ॥
पुन इक शाल रुपे सौ लेई, आत्मानन्द भक्त को देई ॥
लक्ष्मणदास डाक्टर को चाहा, रिषि ने द्रव्य देन कुछ चाहा ॥
तीनहु फूट फूट कर रोई, लौटाई वस्तु सब सोई ॥
पुन सब भक्त शिष्य जन भागे, खड़े हुए आ रिषि के आगे ॥
प्रेम सहित सब को मुन देखा, सबहु ने रिषि ओर परेखा ॥
पुन आदेश रिषि का पाई, खड़े पीठ पीछे भए जाई ॥
पंडित गुरुदत्तादि सब जन्ता, पीछे खड़े दुखित अत्यन्ता ॥

दोहा—उत्तम स्वर ध्वनि से रिषि, वेद मंत्र बहु गान ।
ब्रह्म—भक्ति-आनन्द का, समां बांध भगवान ॥

चौपाई—संस्कृत अरु भाषा में गाई, धन्यवाद ईश्वर का लाई ॥
किया जाप गायत्री गाके, हो प्रसन्न आनन्द मनाके ॥
पुन कुछ काल मौन रहे स्वामि, होय समाध अवस्था गामी ॥
कछुक काल पीछे मुनिराई, धीमे इस प्रकार उचराई ॥
"हे सर्वज्ञ सर्व शक्तिमन, हे कृपालु दयालु भगवन"
"है यह सचमुच तेरी इच्छा, पूर्ण होय प्रभु तेरी इच्छा"
कह इतना कर प्रणव नादा, भए प्रभु मौन सदा को वादा ॥
शतशः नर बहु शोक मनाई, किया दाह अगले दिन जाई ॥
शाहपुरेशहि का उद्याना, तीर ताल जो "सागरआना"
अस्थी सब रिषिवर की चयनी, सोहि उद्यान गाढ़ सब दयनी ॥





महर्षि दयानन्द सरस्वती मृत्यु शय्यापर ।

शोक-प्रकाश।

कः पद्मिनीनां वद तिग्मदीधिति-
धर्मः परः कः कविवाचिकः स्थितः।
का कण्ठभूषा न यमाद्बिभेति कः
स्वामी दयानन्द सरस्वती यमी॥

भावार्थ—प्रश्न—बताओ, पद्मिनियोंका सूर्य्य क्या है? उत्तर—"स्वामी"
प्र०—श्रेष्ठ धर्म क्या है? उ०—"दया"
प्र०—कवियोंकी वाणीमें क्या रहता है? उ०—"आनन्द"
प्र०—कण्ठका आभूषण क्या है? उ०—"सरस्वती"
प्र०—यमराजसे कौन नहीं डरता है? उ०—"यमी"

इन पांचों प्रश्नोंका क्रमशः उत्तर श्लोकके चतुर्थ पादमें यह आ गया है कि "स्वामी दयानन्द सरस्वती यमी"॥

दोहा—नभ चवग्रह शशि (१६४०) दीप दिन दयानन्द सहसत्व।
वय उनसठ वत्सर विच, भयो तन पञ्चत्व॥

मनहर छन्द।

जाके जी है जोरते प्रपंच फिलासिनको अस्त सो समस्त आर्य मंडल ते मान्यो मैं।
वेदके विरुद्धि बुद्धि सत्यके निरुद्धि सदा मन्द मन्द्र आदिनपै सिंह अनुमान्यो मैं।
ज्ञाता षट शास्त्रनको वेदको प्रणेता जेता आर्य विद्या अर्कगत अस्ताचल जान्यो मैं।
स्वामी दयानन्दजू के विष्णुपद प्राप्त हूते पारिजात को सो आज पतन पर मान्यो मैं।

(यह वाक्य साक्षात् श्रीमान् महाराणा सज्जन सिंहजी उदयपुर नरेश विरचित है)

योगको अगार गिरधार दृढ़ आसनको शिक्षक महीपनको त्रिदिवस सिधाइगो।
कुटिल कुराहिनको वाम मत चाहिनको हाय पशु हायनको इष्ट दिन आइगो।
कहैं जयकरण चार वर्णके विवरणको धर्म निज दयानन्द परम गति पाइगो।
तीन वेद शासनको सुमति प्रकाशनको आज सत्य भाषण वासन विलाइगो।

(कवि श्यामल दासजी)

देश हितैषी ।

दयानन्द देश हितकारी तेरी हिम्मत पै वलिहारी ।
अविद्या जगमें छाई थी ग़फ़लत की नींद आई थी ॥
तेरा आना था गुणकारी तेरी हिम्मत की वलिहारी ।
पातञ्जलि व्यास हो गुज़रे, भारत के दाग़ धो गुज़रे ।
तेरे आने की थी बारी ॥ तेरी हिम्मत० ॥ २ ॥
तू वेदों का प्यारा था तू भारत का सितारा था ।
तेरे दर्शन की बलिहारी ॥ तेरी हिम्मत० ॥ ३ ॥
तेरे जो पास आते थे, दिली संशय मिटाते थे ।
सभी भारतके नरनारी ॥ तेरी हिम्मत० ॥ ४ ॥
तेरे तेजस्वी चेहरे से, तेरी ब्रह्मचर्य विद्या से ।
डरी थी दुनियाँ तो सारी ॥ तेरी हिम्मत० ॥ ५ ॥
चलाई ब्रह्म की पूजा, समाजें बन गई हरजा ।
तेरा उपकार है भारी ॥ तेरी हिम्मत० ॥ ६ ॥
भारतके भाग खोटे थे हुआ स्वामी जुदा हमसे ।
हुआ दुःख सब को है भारी ॥ तेरी हिम्मत० ॥ ७ ॥

कहूँ क्या कि स्वामी दयानन्द क्या था ? रिषि था फरिश्ता था या देवता था ।
थे विद्या से भरपूर उसके ख़ज़ाने, शाहन्शाह था गो बज़ाहिर गदा था ।
रहा उम्र भर शौक़से हक़ परस्ती । वतनका था शैदा धर्म पर फ़िदा था ।
था मख़मूरो मसरूर पी जामे वहदत । ख़ुदाका था वह और उसका ख़ुदा था ।
अंधेरे में जो ठोकरें खा रहे थे । वह उन गुमराहों के लिये रहनुमा था ।
जिसे हमने ग़लती से समझा था दुश्मन । वही किश्तीये क़ौम का नाख़ुदा था ।
उसी की थी हिम्मत बचाया व गरना । निशां हिन्दुओंका मिटा जा रहा था ।
ज़ुबां में भी योगी की तासीर ऐसी । कि उसका सुख़न नवके वे ख़ता था ।
किया जिसके झोंकों ने सरसब्ज़ गुलशन । वह बादे बहारी था बादे सबा था ।
घटाओं में चमका था वह वर्क़ बन कर । मुजस्सिम तजल्ली था नूरे ख़ुदा था ।
ग़रज़ कोई माने न माने मुसाफ़िर" । दयानन्द दर्दे वतन की दवा था ।

१५९

१

बाबू माधोलालजी आनंदरहो

विदित हो कि पत्र आपका १०=/॥ के साथ पहुंचा सो रसीद भेजते हैं और मुंबई को लिख दिया है वहां से १०-११ दिन में २ वेद [illegible] भूमिका आपके पास पहुंचेंगी

[illegible] मेरठ में हैं यहां से दिल्ली की ओर का विचार है [illegible] आपका लिख भेजेंगे [illegible] व्याख्यान नित्य होता है आशा है कि समाज भी होजावेगा हम बहुत आनंद में हैं सब [illegible] नमस्ते॥

हस्ताक्षर

१३ सि० १८९८ दयानन्दसरस्वती

मेरठ

बाबू माधोलाल जी आनन्दित रहो हम वहां से चल के आनन्दपूर्वक काशी में पहुंच कर महाराजे [illegible] नगर के आनन्दबाग में ठहरे हैं यह बाग बहुत अच्छा है हवा और जल यहां का बहुत अच्छा है [illegible] भी इस बाग में बहुत [illegible] है यह बाग प्रसिद्ध है [illegible] ठहरने के लिये [illegible] ने प्रबंध कर रक्खा था चिट्ठी पहुंचने पर जैसा यह बाग वैसा काशी में दूसरा नहीं है इसके आगे और अवश्य लिखने योग्य समाचार हों फेर लिखे जायेंगे आप लोग भी लिखते रहना॥ सबसे हमारा नमस्ते कहना॥ सं० १९३६ मि० का० [illegible] [illegible] शुक्रवार दयानन्द सरस्वती

काशी

EAST INDIA POST CARD

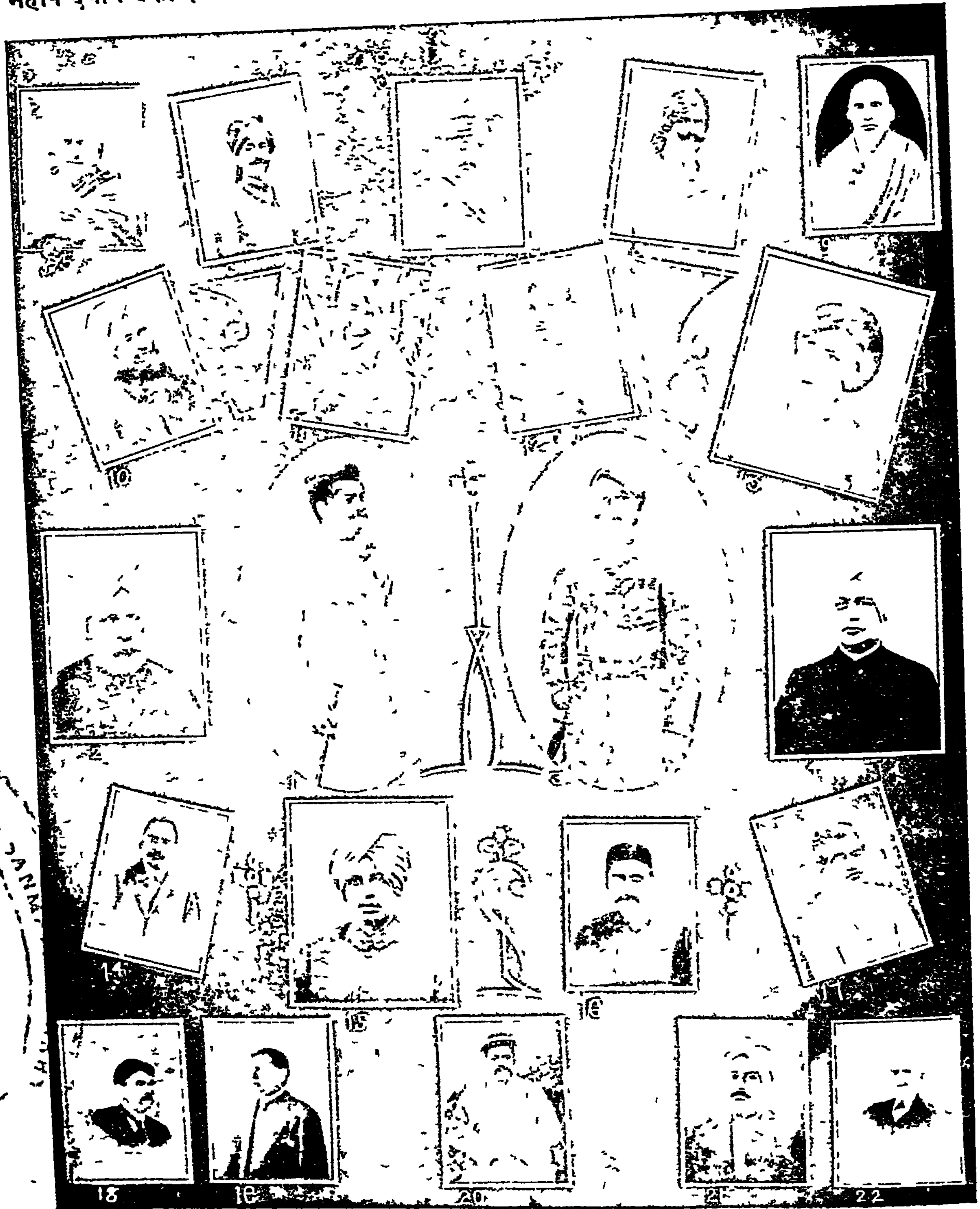
THE ADDRESS ONLY TO BE WRITTEN ON THIS SIDE

बाबू माधोलाल [illegible]

दानापुर बंगाल [illegible]

ऋषिकी हस्तलिपि।

महर्षि दयानन्दकी (रक्खी जानेवाली) उत्तराधिकारिणी श्रीमती परोपकारिणी सभाके सभासदगण ।



१ महाराजाधिराज सयाजी राव बहादुर गायकवाड़, बड़ौदा, प्रधान, २ रायबहादुर श्रीमूलराजजी उप प्रधान, ३ श्रीमान् राजाधिराज सर नाहरसिंहजी वर्मा शाहपुरा, मन्त्री, (मृत्यु) ४ श्रीहरिविलासजी सारडा उपमन्त्री ५ श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी सभासद, (मृत्यु) ६ श्री राजकुमार उम्मेदसिंहजी शाहपुरा, ७ श्रीठाकुर नरेन्द्रसिंहजी, ८ महाराजा श्री राजारामजी छत्रपति कोल्हापुर, ९ श्री स्वामी विश्वेश्वरानन्दजी, (मृत्यु) १० श्री महात्मा हंसराजजी, ११ श्री लाला लाजपतरायजी, (मृत्यु) १२ श्री रोशनलालजी, १३ श्री रामविलासजी सारडा, (मृत्यु) १४ श्री गङ्गाप्रसादजी एम, ए १५ श्री गुलराज गोपालजी गुप्त, १६ श्री घासीरामजी, मेरठ; १७ श्री रामदेवजी आचार्य गुरुकुल कांगड़ी, १८ श्री रणछोड़ दासजी भवान, बम्बई, १९ श्री गौरीशङ्करजी अजमेर, २० श्री पुरुषोत्तम नारायणजी, २१—श्री पं० भगवद्दत्तजी लाहोर, २२—श्री रामगोपालजी ।

धर्म बलिदान।

जिसने वैदिक धर्म दुबारा जिला दिया है।
जिसने भारत सुप्त सुमनसा खिला दिया है॥
वे हिन्दू मतिहीन जिन्होंने रक्षक मारा।
अपने धड़से शीश स्वयं निज हाथ उतारा॥
दयानन्दने प्राण दे शवमें डाली जान है।
ऋषियोंका सद्धर्म पर यों होता बलिदान है॥
अन्धाधुन्धी देख यवन लोगोंकी जिसने।
समझी भेषज शुद्धि सकल रोगोंकी जिसने॥
खण्डनसे कर खण्ड दीन बेदीन किया है।
जिसने अपना अंश पुराना छीन लिया है॥
खेल कपट इस्लामने हरली जिसकी जान है।
लेखरामसे वीरका हुआ सत्य बलिदान है॥

बलिदान-मंडल

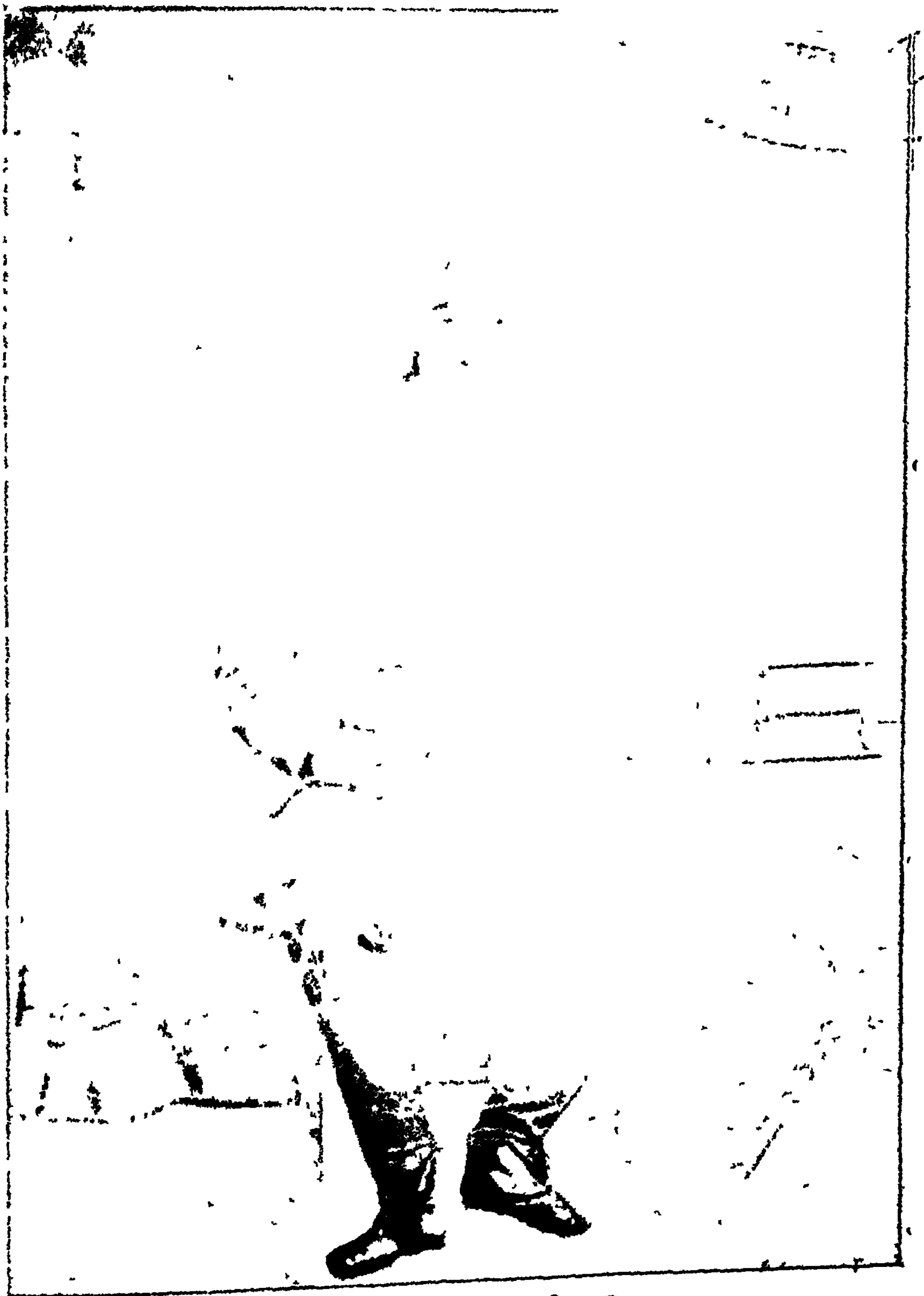
यही अहिंसा धर्म आंखमें मिर्चें भरना?
महा वीरता यही प्राण औरोंके हरना??
तो भी वैदिक वीर नहीं मरनेसे डरते।
आ देखे जिनराज धर्म पर इस विध मरते॥
जैसे तुलसीरामने त्यागे अपने प्राण हैं।
धर्मवेदि पर आर्यवर यों होते बलिदान हैं॥
कौशिक मुनिका यज्ञ रामने यथा रचाया।
पतित उठाने हेतु आपने पैर बढ़ाया।
रामचन्द्रका नाम सार्थक आज कमाया।
महाजनोंका पन्थ यही हमको बतलाया॥
मेघोंके उद्धारमें अपनी झोंकी जान है।
जगको यह दिखला दिया यों होता बलिदान है

(चित्रपरिचय)

धर्मवीर पं० लेखरामजीका संक्षिप्त परिचय ।

तहसील चकवाल जिला झेलमके एक अप्रसिद्ध गांवमें जिसका नाम सैयदपुर है ८ चैत्र सन् १६१५ विक्रमी शुक्र वारके दिन एक मुहियाल ब्राह्मणके घर जन्म हुआ। १५ वर्षकी अवस्था तक अपने गांवमें ही पढ़ते रहे। १५ वर्षकी आयुके बाद पं० लेखरामजी अपने चचा श्री गंगारामजीके पास पुलिसका काम सिखने चले गये। सन् १८७६ ई० के लगभग पुलिसमें नोकर होकर धीरे २ नकशानवीस सारजन्ट बन गये। पण्डितजीमें धर्मकी पिपासा पहलेहीसे थी। नोकरी करते हुए रोटी केवल एक समय अपने हाथसे बनाकर खाते और कृष्ण कृष्णका जाप किया करते तथा गीताका पाठ नित्य करते रहते। माता पिता विवाहके लिये कहते किन्तु यह नहीं मानते एक समय जब २०-२२ वर्षके थे तब माता पिताने विवाहके लिये अधिक जोर दिया तब ये नौकरी छोड़ मथुरा वृन्दावनकी ओर जानेको उद्यत हुए। इनकी दृढ़ताके आगे माता-पिताको इनके विवाहका विचार त्यागना पड़ा।

पं० लेखरामजी फारसीके अच्छे विद्वान थे और मुसलमानी मतके ज्ञाता तथा हिन्दू धर्मपर पंडितजीको अटूट श्रद्धा थी मुरादाबाद निवासी इन्द्रमणीजीकी पुस्तकोंसे वे परिचित थे तथा मुसलमानोंके साथ शास्त्रार्थ भी समय २ पर किया करते थे। श्री अलखधारीजीको (जिसको कि ऋषि दयानन्दने शुद्ध किया था) पुस्तकमें ऋषि दयानन्दकी प्रशंशा पढ़कर ऋषिकृत पुस्तकें मंगवाकर अध्ययन करना आरम्भ किया। ज्यों ज्यों धर्मके मर्म अधिक मालूम होते गये त्यों त्यों ऋषि दर्शनके लिये उत्कण्ठा बढ़ने लगी। अन्तमें सन् १८८१ ई० में आर्यसमाज पेशावर स्थापित करके नौकरीसे एक मासकी छुट्टी लेकर स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराजसे मिलने अजमेर चले गये। स्वामीजीसे वार्तालाप करके कुल संशय निवारण कर पेशावर लौटे और "धर्मोपदेश" नामक पत्र निकालना आरम्भ किया तथा व्याख्यान और शास्त्रार्थों द्वारा प्रचार कार्य करने लगे। प्रचार कार्यमें सरकारी नौकरी बाधा देती प्रतीत हुई अतः सन् १८८४ ई० में त्याग पत्र देकर दासत्वसे पृथक हुए।



धर्मवीर पं० लेखरामजी आर्य्यमुसाफिर ।

सरकारी नौकरीसे स्वतन्त्र हो कर बड़े ही उत्साह पूर्वक लेखों एवं व्याख्यानों द्वारा प्रचार कार्य करते रहे, इनके लेख व व्याख्यान प्रायः मुसलमानों द्वारा हिन्दू धर्मपर किये गये आक्षेपोंके उत्तर तथा मुसलमानी मजहबकी कमजोरियोंके विषयमें होते रहते इससे स्वार्थी मुल्ला-मौलवी चिढ़ते रहते थे पं० जीकी पुस्तकोंपर मुकदमें भी चलाये किन्तु सबमें हार खाकर पण्डितजीको कतल करनेकी धमकियाँ देते रहे अन्तमें—

६ मार्च सन् १८९७ ई० की सन्ध्याको एक कठोर हृदय मुसलमान जो, शुद्धिका बहाना करके उनके पास आया था उनके गृहमें धोखेसे छुरी उनके पेटमें घुसेड़कर भाग गया। दो बजे रातको अच्छीसे अच्छी चिकित्सा होने पर भी गायत्री मंत्रका जाप करते हुए धर्मवीर पं० लेखरामने इस नाशवान शरीरको छोड़ कर अपने सच्चे देशको पधार गये और आर्योंको अन्तिम संदेश यह दे गये कि "लेखका काम बन्द न होने पावे"।

पण्डितजीका गुणानुवाद

(लेखक—श्री नाथूराम शङ्कर शर्मा)

धर्म धारी वीर वैरी से कभी डरते नहीं।
पुण्य के प्रतिकूल पूजा पापकी करते नहीं॥
तामसी मन मान मदमें मोहको भरते नहीं।
जालियोंमें जन्म लेनेके लिये मरते नहीं॥
बस इसी उद्देशको उर लाय पंडित लेखराम।
तर गये जगदीशके गुण गाय पंडित लेखराम॥

आलसी के ठौर ठाली साहसी सोते नहीं।
मूढ़ मंडल में विवेकी काल को खोते नहीं॥
भोगियों की भांति योगी राति दिन रोते नहीं।
कायरों के पक्षपाती सूरमा होते नहीं॥
इस महामन्तव्य का फल पाय पंडित लेखराम।
तर गये जगदीश के गुण गाय पंडित लेखराम॥

—

बनगये विद्या विशारद धर्म का धन जोड़कर ।
योग का आनन्द लूटा योगियों की होड़कर ॥
मेलका मेला लगाया फूट का शिर फोड़कर ।
खुलपड़े परतन्त्रता के बन्धनों को तोड़कर ॥
श्री दयानन्दरिषि के गहि पाय पंडित लेखराम ।
तरगये जगदीश के गुण गाय पंडित लेखराम ॥



वेद का उपदेश देते देशमें फिरने लगे ।
दम्भ सारे दुर्दशाके घेरमें घिरने लगे ॥
लेख मन माने मतोंपर वज्रसे गिरने लगे ।
झक्कड़ों के झुंड चारों ओरको चिरने लगे ॥
जाल ग्रन्थोंमें लगालिपिलाय पं० लेखराम ।
तरगये जगदीश के गुण गाय पंडित लेखराम ॥



पोल खुलते ही पुराणों का महातम हटगया ।
बुद्ध की विधि बँधगई मद जैन मतका घटगया ॥
जी जला इंजीलका दिल बायबिलका फटगया ।
दम घुटा तौरैत का छलबल जबूरी कटगया ॥
पड़गये मुसहफ़ के पीछे धाय पं० लेखराम ।
तर गये जगदीश के गुणगाय पंडित लेखराम ॥



सामने कुरआन के ले वेद चारों अड़गये ।
मार मन्त्रों की पड़ी पर आयतों के झड़गये ॥
डूबकर बहरे दलाइल में गपोड़े सड़गये ।
कुल हदीसों के हवाले भी भमर में पड़गये ॥
इस तरह इसलाम का घर ढाय पंडित लेखराम ।
तर गये जगदीश के गुणगाय पंडित लेखराम ॥



पण्डित लेखराम और घातक।



पण्डित लेखराम मृत्यु-शय्या पर।

२-चित्रावली—

चिढ़गये वैदिक बटोही से मियाँ सब हारकर।
चलपड़े अपनी पुरानी चाल पै तकरार कर॥
एक पाजी आमिला मत वेद का स्वीकार कर।
अन्तको भागा कलेजे में कटारी मारकर॥
नीचको अपनाय धोखा खाय पंडित लेखराम।
तर गये जगदीश के गुणगाय पंडित लेखराम॥

केसरी पर घात गीदड़ की अचानक चलगई।
कामना विश्वासघाती ख़र्व खल की फलगई॥
नाम को इसलामके शिर से बलासी टलगई।
आग इस ज्वालामुखी छलकी जगतमें जलगई॥
बनगये बलिदान दलके राय पंडित लेखराम।
तरगये जगदीश के गुणगाय पंडित लेखराम॥

क्या चिकित्साकी चली उर शूलसे गढ़ते रहे।
प्राणतन को त्यागने की चाल पै चढ़ते रहे॥
प्रेम पूरित शब्द मुख से अन्त लों कढ़ते रहे।
धर्म्म को धर ध्यान में गुरु मंत्र को पढ़ते रहे॥
चलबसे परलोक में तजकाय पंडित लेखराम।
तरगये जगदीश के गुणगाय पंडित लेखराम॥

धर्म्म के मगमें अधरमी से कभी डरना नहीं।
चेतकर चलना कुमारग में क़दम धरना नहीं॥
शुद्ध भावों में भयानक भावना भरना नहीं।
बोध वर्द्धक लेख लिखने में कमी करना नहीं॥
दे मरे हम को मुनासिब राय पंडित लेखराम।
तरगये जगदीश के गुणगाय पण्डित लेखराम॥

शहीद पं० तुलसीरामजीका परिचय

पं० तुलसीरामजी पञ्जाब प्रदेशकी फरीदकोट रियासतके निवासी थे। वह एन० डब्लू रेलवेमें स्टेशनमास्टर थे। इनका प्रायः जैनियोंसे धार्मिक विषयों पर वार्तालाप हुआ करता था। एक दिनकी बात है कि यह कहीं जा रहे थे। इनके विलक्षण तर्क-वितर्कसे परास्त हो कई जैनी इनसे बेहतर चिढ़े रहा करते थे। स्थान निर्जन था, समय भी बेढब था—एक जैनीने पीछेसे आकर बालूमें लाल मिर्चका चूर्ण मिलाकर इनके दोनों नेत्रोंमें फेंक कर भर दिया और जब वह दोनों नेत्रोंसे देखनेमें असमर्थ होगये तब ऊपरसे और भी खूब भीनरको मार मारी, यहां तक कि उस स्थान पर बेहोश होगये। और वे सब वहांसे उन्हें छोड़ भाग गये। पुलिस तथा आर्य-भाइयोंको खबर मिली—सब आये, उन्हे उठाकर अस्पताल ले गये। पंडित जी चैतन्य होने पर गम्भीर शब्दोंमें बोले—"भाई! जैनियोंका दया धर्म और 'अहिंसा परमोधर्मः' यही है जो मुझपर दया की है।" औषधोपचार बहुत किया गया परन्तु चिरकालके लिये धर्मवीर "ओ३म् शान्तिः" का पाठ कर परमात्माकी गोदमें जा विराजे।

शहीद पं० रामचन्द्रजीका परिचय

श्री धर्मवीर रामचन्द्रजी जम्बू प्रान्तके निवासी तथा एक महाजनके सुपुत्र थे और तहसीलमें खजांचीका काम करते थे। आर्यसमाजके आप साधारण सभासद थे पर वैदिक धर्मकी आपको लगन थी। पूर्वसे ही दलितोंकी दुर्दशापर दुखित रहा करते थे। जम्बूसे अखनूरको बदली होते ही दलितोद्धारकी ज्वाला उनके हृदयमें धधक उठी और सब काम त्याग इसीमें निमग्न होगये। अखनूरके पास बुटेहार एक ग्राम है वहांके मेघोंमें धर्मवीरजीने प्रचार आरम्भ कर दिया। मेघोंके लिये एक पाठशाला स्थापित करना ही चाहते थे कि ग्रामके राजपूतोंने ऐसा विरोध किया कि उनका अन्त ही कर छोड़ा। धर्मवीर रामचन्द्र जी इस जगतमें नहीं है पर उनके मेघोद्धारके उद्देश्यका मार्ग खुल गया। वेही मेघोद्धारके कंटक राजपूत भाई अब पाठशालाके लिये जमीन दे रहे हैं तथा विविध प्रकारसे सहायक बन गये हैं और अब परिणाम यह हुआ है कि उस प्रान्तके २०००० मेघोंका उद्धार किया गया है। १५ नये आर्य समाज स्थापित हुए हैं तथा चार पाठशालायें खोली गयी है।

शहीद म० राजपालजीका परिचय

आपका जन्म अमृतसरमें एक निर्धन घरानेमें हुआ। आप बचपनसे ही परिश्रमी एवं व्यवहारके सच्चे थे, इसी कारण जिसके यहां इन्होंने कार्य किया वे इनसे संतुष्ट रहे। सर्व प्रथम इन्होंने अमृतसरमें ही एक वैद्यके यहां १२) मासिक पर कार्य किया। बाद इसके महात्मा मुंशीरामजीके यहां "सद्धर्म प्रचारक" जालन्धरमें २५) मासिक पर कार्य करते रहे। १९०६ ई० में महात्माजीने पत्रको उर्दूसे हिन्दीमें कर दिया। महाशय राजपालजी हिन्दी न जाननेके कारण वहांसे पृथक् होकर लाहोरमें म० कृष्णजीके "प्रकाश" पत्रमें मैनेजरके कार्य पर ३०) रुपये मासिक पर कार्य करते रहे। "प्रकाश" पत्रका कार्य करते हुए रात्रि अवकाशके समय अपना निजी पुस्तक प्रकाशनका कार्य आरम्भ किया। पुस्तकोंका काम बढ़ जानेसे नौकरी छोड़ दी। आपको प्रायः हर प्रकारके विषयों पर नई २ पुस्तकें लिखवाने और उन्हें सुन्दर छपवानेका शौक था। नित नये पुस्तक जनताको भेंट करके देश सेवा कर रहे थे। परन्तु ईश्वर-इच्छा कुछ और ही थी। "रंगीला रसुल" नामक एक पुस्तक छापनेसे यवन जातिका पारा ऊपर चढ़ गया। भारत सरकारने अभियोग चलाया। उससे आप मुक्त हो गये, पर मतान्ध मुसलमान आपका जीवन लेने पर उतारू होगये थे। २६ सितम्बर १९२७ को खुदाबख्श नामक एक मुसलमानने आपपर वार किया। छुरेसे छः जख्म किये, परन्तु ईश्वरने जान बचा-दी। ९ अक्टूबर १९२७ को इसी दुकानपर "अब्दुल अजीज" ने हमला किया। वह भूलसे स्वामी सत्यानन्दजी महाराज पर हो गया। ६ अप्रैल १९२९ को दो बजे दिनके "इल्मदीन" नामक नौजवानने दुकानके अन्दर बैठे हुए आक्रमण किया। छुरा ऐसी तेजी और बलसे छाती पर मारा, कि तत्क्षण प्राण पखेरू शरीरसे उड़ गये और आप हमेशाके लिये हमसे जुदा होगये।



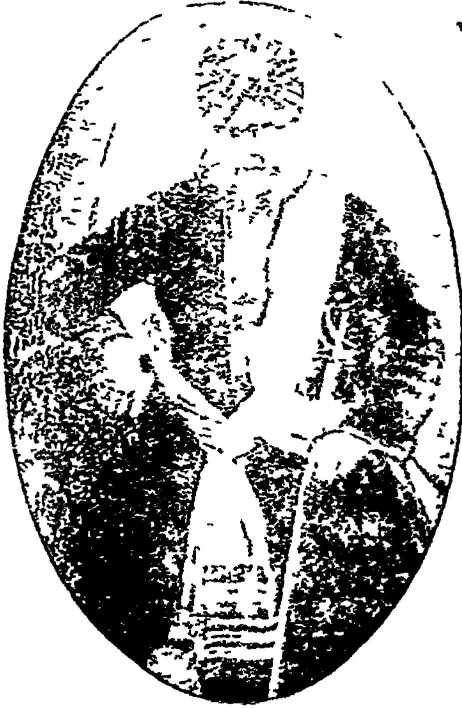
धर्मवीर तुलसीरामजी।



धर्मवीर रामचन्द्रजी।



शहीद म० राजपालजी लाहोर।



स्व मीजीके पिता श्रीनानकचन्दजी
जन्म १८८४ वि० मृत्यु १९४३ वि०



मुन्शीरामजी
नायब तहसीलदार बरेली



मुन्शीरामजी वकील जालन्धर



महात्मा मुन्शीरामजी
मु० गुरुकुल कांगड़ी



स्वामी श्रद्धानन्दजी सन्यासी।

आर्यसमाजके आदर्श नेता स्वामी श्रद्धानन्दजीका परिचय

स्वामी श्रद्धानन्द सन्यासीका जन्म फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी सवत १९१३ विक्रमीके दिन ग्राम तलवन (जिला जालन्धर, पञ्जाव) में लाला नानकचन्दजीके घर हुआ था। लाला नानकचन्दजी वर्तमान लौकिक व्यवहारकी दृष्टिसे जातिके विज खत्री थे और जिस समय उनके घर छठी सन्तानका जन्म हुआ उस समय वह ब्रिटिश सरकारकी सैनिक पुलिसमें रिसालदारके पद पर नौकर थे। बादको सैनिक पुलीसके बरखास्त कर दिये जाने पर उन्होंने संयुक्त प्रांतकी सिविल पुलीसमें नौकरी कर ली और अपने परिवारको भी अपने पास ही बुला लिया। ऊपर जिस बालकके जन्मके विषयमें लिखा गया है उसका नाम मुंशीराम रखा गया था। यही मुंशीराम आगे चलकर हिंदू समाज और उनके देश हिन्दुस्थानके प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित नेता स्वामी श्रद्धानन्द सन्यासी बने।

शिक्षण

लाला नानकचन्दजीके संयुक्त प्रांतकी पुलीसमें नौकर होनेके कारण, उनके पुत्र मुंशीरामका बाल्य काल भी उस प्रान्तके बरेली, बदायूं, बनारस, बादा और बरेली आदि जिलोंमें ही बीता। इनकी शिक्षा मुख्यतः बनारसके क्वींस कालेज तथा जयनारायण हाइस्कूलमें और इलाहाबादके म्योर सेण्ट्रल कालेजम हुई थी। यद्यपि इनके पिताजी इनको उच्च शिक्षा दिल कर ग्रेजुएट बनाना चाहते थे परन्तु विद्यार्थी जीवनके साथ साथ ही अपने पिताजीकी आज्ञानुसार घरके धन्धोंमें लगे रहने और कुछ कुछ अपनी बेपरवाहीके कारण भी इन्हे परीक्षाओंमें सफलता नहीं हुई और एफ० ए० तक ही पढ़ कर अपने विद्यार्थी जीवनका अन्त कर दिया।

नायब तहसीलदारी

विवाह इनका विद्यार्थी अवस्थामे ही बीस वर्षकी उम्रमें जालन्धरके सबसे बडे रईस राय शालिग्रामकी कन्या शिवदेवीके साथ हो गया था। विद्यार्थी जीवन समाप्त हो जानेके अनन्तर इनके पिताजीको इन्हें किसी रोजगारमें लगानेकी चिंता हुई। पहिले तो उनका विचार मुंशीरामजी को पुलीसकी नौकरीमे लगानेका न था परन्तु जब परीक्षामे असफलता हो गयी तब उन्होंने इन्हे पुलीसमे नौकर रखानेका विचार किया। उन दिनों लाला नानकचन्दजी शहर बरेलीके कोतवाल थे। बरेलीके कमिश्नर मि० एडवर्डस इनके पुराने मेहरबान थे। उनसे प्रार्थना की गयी तो उन्होंने मुंशीरामजीको बरेलीका ही नायब तहसीलदार बना दिया।

नायब तहसीलदारी अभी केवल अस्थायी रूपसे मिली थी कि मुंशीरामजीने अपने स्वतन्त्रता स्वाभिमान और आत्मसम्मानके भावोंके कारण तीन महीनेमें ही सरकारी नौकरीसे सदाके लिये अपना नाता तोड लिया इनकी नायब तहसीलदारीके समयमे बरेलीके समीप किसी स्थानपर अंग्रेजी फौजने पडाव डाला। नौजवान नायब तहसीलदारको हुक्म हुआ कि फौजको रसद आदि पहुंचानेका बन्दोबस्त करे। फौजके पडावमें खाने पीनेके सामानकी दुकानें लगानेका बदोबस्त किया गया परतु शुरुआतमे ही सेनाके गोरे सिपाहियोंने एक अण्डोंके दुकानदारके अण्डे विना दाम चुकाये लूट लिये। जब यह शिकायत नये नये न्यायप्रिय नायब तहसीलदारके पास पहुंची तो उसने जाकर सेनाके करनलसे कहा कि या तो अण्डों वालोंको उनके दाम दिये जायं, नहीं तो मैं सब दूकानें उठवा दूंगा। काले हिंदुस्थानियोंकी तिल्लीमे ठोकर लगानेके आदी करनल यह कैसे सह सकते थे। बोले, इस बेअदबीका क्या मतलब, खबरदार तुम ऐसा करोगे तो नुकसान उठाओगे। वह इतना कह कर आगेको बढ़ना ही चाहते थे कि नौजवान नायब साहबने अपने हण्टरकी एक फटकार लगाई और दौड़ कर घोडे पर सवार हो वहासे उडन्छू हो गये। गोरे करनल साहबके इस प्रकार अपमान करनेके कारण इनको नायब तहसीलदारीको जल्द ही नमस्कार करना पड़ा। इसके अनन्तर एक बार फिर सरकारी नौकरीका अवसर आया था और उसके लिये मालके उच्च अफसर सी० पी० कारमाइकेल साहबसे जान चीन होकर सब कुछ तै भी हो गया था परन्तु मुंशीरामजीका विचार बदल गया और वकील बनकर स्वतन्त्र आजीविका कमानेका

निश्चय कर लिया।

मुख्तारी

इस निश्चयके अनुसार लाला मुंशीरामजी संयुक्त प्रान्त छोड़कर अपने जन्म-प्रान्त पञ्जाबमें ही आगये और लाहोर पहुंचकर मुख्तार बननेकी तैयारी करने लगे। लाहोरमें रहते हुये ही आर्यसमाज, और ब्राह्मसमाज और अन्य भी धार्मिक संस्थाओंके सम्पर्कमें आनेका अवसर मिला जिससे मनमें धार्मिक प्रश्नोंपर विचार करनेकी प्रवृत्ति हो गयी। एक दो बारकी असफलताके अनन्तर मुख्तार बनकर जालन्धरकी अदालतोंमें मुख्तारीका काम आरम्भ भी कर दिया। थोड़े दिन बाद फिल्लौर नामकी जिला जालन्धरकी एक तहसीलको जालन्धरकी अपेक्षा अपने लिये अधिक अनुकूल क्षेत्र समझ कर जालन्धरसे फिल्लौर चले गये, परन्तु दो तीन मासके बाद ही घरके काम काजके कारण मुख्तारी बन्द करके अपने पिताजीके साथ फिर संयुक्त प्रांतकी यात्रा करनी पड़ी।

आर्यसमाजमें प्रवेश

इस यात्रासे लौटकर वकील बननेके लिये फिर लाहोर चले गये। लाहोरमें रहते हुए जहां वकालतकी तैयारी होने लगी वहां धार्मिक प्रश्नोंका मनन और अध्ययन भी साथ साथ होता रहा। आर्यसमाज और ब्राह्मसमाज दोनोंके ही साप्ताहिक अधिवेशनोंमें नियम पूर्वक सम्मिलित होते रहे। पहिले तो ब्राह्मसमाजके विचारोंका मन पर अधिक प्रभाव पड़ा परंतु पीछे पुनर्जन्मके प्रश्नने आर्यसमाजका पक्ष बलवान बना दिया और सवत १९४१ विक्रमीके माघ मासमें एक आदित्य वारको आर्यसमाजमें प्रविष्ट हो गये।

आर्यसमाजमें प्रवेश करते ही धार्मिक ग्रन्थोंके स्वाध्यायका और भी अधिक चाव हो गया। स्वामी दयानन्दकृत 'सत्यार्थप्रकाश' आदि ग्रन्थोंके पढ़नेसे आचार व्यवहारकी शुद्धताके महत्वका मनमें दृढ़ विश्वास हो गया और मांस मदिरा आदि अभक्ष्य पदार्थोंको सर्वदाके लिये त्याग दिया; साथ ही अपने धार्मिक समाजके विचारोंके प्रचारके लिये इतना उत्साह हुआ कि वकालतकी परीक्षाकी तैयारी करते हुए भी सप्ताहमें किसी मुहल्लेमें चले जाते और वहां आर्यसमाजका प्रचार करते थे।

प्रचारकी लगन

एक वर्षके बाद लाला मुन्शीरामजी जालन्धर वापिस आ गये और वहीं रहकर मुख्तारीका काम फिर आरम्भ कर दिया। अब यह जालन्धर आर्यसमाजके प्रधान बन चुके थे इस कारण आर्यसमाजका प्रचार बढ़ानेके साथ विरोधियोंके आक्षेपोंका और विघ्नोंका प्रतिकार करनेका भार भी इन्हीं पर आ पड़ा और वकालतकी परीक्षाकी चिन्ता अभी सिरपर होते हुए भी लाला मुन्शीरामजीने इस सारे कामको ऐसी योग्यतासे निवाहा कि जालन्धरके शास्त्रार्थों और आर्यसमाजकी जलसोंकी पञ्जाब भरमें धूम मच गयी। दो एक वर्षके अनन्तर जब मुन्शीरामजी वकालत पास कर चुके तब उन्होंने अपनी सारी शक्तियां धर्म-प्रचारके कार्यमें लगा दीं। जालन्धर जिलेका तो कोई प्रसिद्ध कसबा ऐसा नहीं बचा जिसमें जाकर लाला मुन्शीरामजीने प्रचार और आर्यसमाजकी स्थापना न की हो। इसके अतिरिक्त पंजाबके भी बहुतसे स्थानोंमें जहांसे आर्यसमाजकी पुकार आती वहीं जाकर प्रचार करते। जालन्धरमें आर्यसमाजका कोई विरोधी ऐसा नहीं बचता था जिसका समाजकी ओरसे मान-मर्दन न किया जाता हो लाला मुन्शीरामजीको इस कार्यके विरुद्ध जाति-बहिष्कार आदि कई प्रकारकी धमकियां दी गयीं और उनके रास्तेमें अनेक विघ्न डाले गये परन्तु वह दृढ़तासे अपना काम करते चले गये।

गुरुकुलकी स्थापना

सम्वत् १९५० में आर्यसमाजमें दो दल हो गये। इस समय लाला मुंशीरामजीने अपने सिद्धान्तों पर दृढ़ता दिखलायी। यह सदाचारकी शुद्धता, वैदिक सभ्यताके पुनरुद्धार और धर्म प्रचार पर बहुत बल दिया करते थे जब इन्होंने देखा कि दयानन्द ऐङ्गलो वैदिक कालिजके संचालकोंसे ये काम नहीं हो सकेंगे तो इन्होंने दूसरे दल का साथ दिया और अपने अध्यवसाय, परिश्रम, त्याग और साहस आदि गुणोंसे इस दलका प्रमुख नेतृत्व प्राप्त



श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज। (य)

किया। सम्वत् १९५६ में लाला मुशीरामजीने 'सद्धर्म-प्रचारक' नामका साप्ताहिक पत्र आरम्भ किया था। वह पत्र जहा धर्म प्रचारके समाचार प्रकाशित करता था वहा विरोधियोंके प्रहारोंसे भी समाजकी रक्षा करता था और इसके अतिरिक्त समय समय पर आर्यसमाजके लिये उपयोगी नये नये विचारों और कार्योंके लिये आन्दोलन करता रहता था। इसीके आन्दोलनके फलसे सम्वत् १९५८ मे आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जावने गुरुकुल खोलने का निश्चय किया। यह संस्था यद्यपि आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जावकी कही जाती है, तथापि इसको खोलने और चलानेका सोलह आना श्रेय लाला मुशीरामजीको है। उन्होंने किस प्रकार घरसे वाहर रहकर संस्थाके आरम्भ के लिये ३०००० तीस सहस्र रुपया इकट्ठा किया, कैसे अपना जीवन अर्पण करके संस्थाका प्रबन्ध किया, कैसे समय पड़ने पर अपना सर्वस्व संस्थाके लिये दान कर दिया और कैसे इसकी विरोधियोंके आक्रमणोंसे रक्षा की इत्यादि हालत इतने मनोरञ्जक और विस्तृत है कि उनका इस छोटेसे परिचयमे लिखा जाना असम्भव है। संक्षेपमें गुरुकुल विश्वविद्यालयका आज तकका तमाम इतिहास उनके जीवनकी कहानी है। इन्हीं त्यागों और सेवाओंके लिये आर्य जनताने आपको महात्माका सार्थक विशेषण दिया था।

सन्यास ग्रहण

सम्वत् १९७४ के अन्तमे महात्मा मुशीरामजीने अपना वानप्रस्थाश्रम समाप्त करके सन्यास लिया और वह श्रद्धानन्द नाम धारण करके गुरुकुल और आर्यसमाजके संकुचित क्षेत्रको छोड़कर मनुष्यमात्रकी सेवाके लिये निकल पड़े। सन्यासी वनकर सवसे पहले उन्होंने आर्यजनताको ब्रह्मचर्य और सदाचारकी शुद्धताका उपदेश करनेका और आर्यसमाजका इतिहास लिखनेका वीड़ा उठाया। अभी इस कार्यको कठिनतासे एक वर्ष कर पाये होंगे कि धौलपुर आर्यसमाजका झगड़ा खड़ा हो गया। वहाके मुसलमान मन्त्री आर्यसमाजका मदिर गिराकर वहा मसजिद वनवाना चाहते थे। स्वामीजीने वहा जाकर सत्याग्रह कर दिया और इन मुसलमान काजी मन्त्रीजीकी अकलको ठिकाने लगाया। स्वामीजी का स्वभाव था कि जनताकी सेवाका कोई भी अवसर देखकर पीछे नहीं रह सकते थे। अपने इसी स्वभावके कारण स्वामीजीने अपने सन्यास जीवनके ९—१० वर्ष के थोड़ेसे समयमे इतनी विविध सार्वजनिक सेवायें की हैं कि इन पक्तियोंमें उनमेंसे मुख्य २ का निर्देश मात्र हो सकेगा।

सन १९१९ की सेवायें

सम्वत् १९७६ वि० (अर्थात् सन १९१९) में रौलट ऐक्टके विरुद्ध आन्दोलन आरम्भ हुआ, महात्मा गांधीने इस कालेकानूनके विरुद्ध सत्याग्रह आरंभ किया। जनता में उन दिनों वड़ी उत्तेजना थी। स्वामीजी तुरन्त आगे आये और देहलीकी जनताका नेतृत्व स्वीकार करके उस विकट परिस्थितिमे वड़ी वीरता, धीरता और गम्भीरता से कार्य किया। जब देहली शहरमे गुरखा सेनाओंका पहरा लगा हुआ था तब जनताको शान्त रखना स्वामीजीका ही काम था। उस समय वह जनताको पीछे करके आगे स्वयं डण्डा हाथमें लेकर चले। घण्टाघरके आगे एक मतवाला गुरखा सिपाही जब लोगोंको गालिया देकर शस्त्रका भय दिखाने लगा तब स्वामीजीने आगे बढ़कर अपनी छाती उसकी सङ्गीनके सामने कर दी कि पहिले अपनी सङ्गीनसे मेरी छातीको वींध दे तब तू किसीको हाथ लगाना। गुरखा सिपाही अपनी कायरता पर झेंप कर पीछे हट गया। इस उत्तेजित जनताको लेकर स्वामीजी जामा मसजिदमे पहुचे और यह स्वामीजीका ही महत्व था कि उनसे मुसलमानोंके सबसे वड़े और पवित्र मुम्बर परसे वेद मन्त्रोच्चारण पूर्वक हिन्दू और मुसलमान दोनोंको उपदेश करनेकी प्रार्थना की गयी। देहलीकी इन घटनाओंके अनन्तर स्वामीजीने पञ्जावमे जाकर राष्ट्र-सेवा और जनतामे चेतनता उत्पन्न करनेका कार्य किया। वहा फौजी कानूनके शासनके कारण लोग वहुत ही वुरी दशामे थे। ऐसी कठिन परिस्थितिमे भी अमृतसरमें सफलता पूर्वक कांग्रेस करना आपका ही काम था।

शुद्धि और संगठन

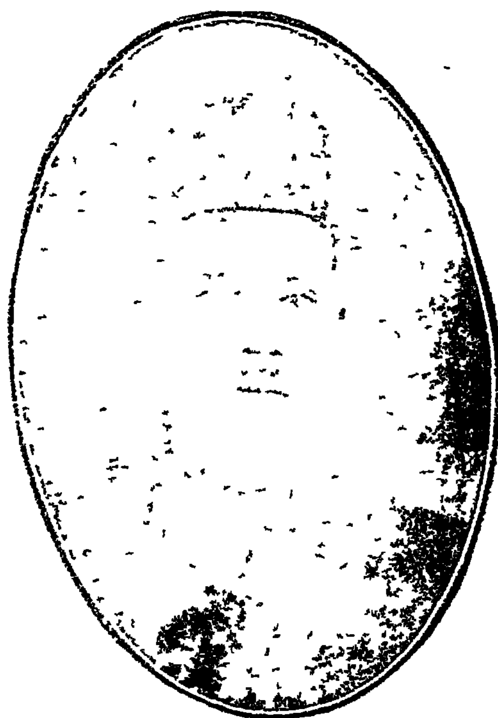
इस राष्ट्रीय 'सेवाके वाद आपको फिर गुरुकुल कागड़ीका भार अपने ऊपर लेना पड़ा। परन्तु शरीरके

लगातार अस्वस्थ रहनेके कारण विवश हो वह कार्य छोड़ दिया। इसी समय स्वामीजीका ध्यान हिन्दू जाति की दुर्दशाकी ओर गया इसके लिये आपने आंदोलन आरम्भ किया ही था कि फिर पंजाबमें सिक्खोंके गुरुद्वारा आन्दोलनकी ओरसे पुकार हुई। आप वहां भी पहुंचे परन्तु ब्रिटिश नौकरशाहीने वहां पहुंचते ही आपको जेलमें बन्द करके सेवाका अवसर न दिया। इस कैदसे मुक्त होनेपर फिर अपने स्वभावके अनुसार आपने इस कामको ऐसी प्रबलतामें किया कि मुसलमानोंमें हलचल मच गयी। जब गांवके गांव नौमुसलिम शुद्ध होकर हिंदू बनने लगे तब मुल्ला मौलाना डाहके मारे भीतर भीतर जलने लगे। उन्होंने कई एक लेखों और छोटी छोटी पुस्तकोंमें स्वामीजीके प्राण लेनेकी धमकियां दीं, कई गुप्त बेनाम चिट्ठियां उनके पास इसी आशयकी पहुंचीं, परन्तु स्वामीजी दृढ़ता और शांतिसे अपना काम करते रहे। उन्होंने इन धमकियों पर ध्यान तक नहीं दिया।

बलिदान

पर जिन लोगोंकी ओरसे ये धमकियां दी गयी थीं वे वीरताका सम्मान करने वाले न थे। ता० २३ दिसम्बर सन १९२६ के शामको चार बजे स्वामीजी अपने बिस्तरमें आराम कर रहे थे—क्योंकि वह उससे दो एक दिन पूर्व ही भयंकर रोगसे मुक्त होकर चुके थे—कि अबदुलरशीद नामके एक क्रूर मुसलमानने अत्यन्त कुटिलतासे उनके समीप तक पहुंचकर उनका गोलीसे वध कर दिया। स्वामीजी अबदुलरशीदकी गोली खाकर स्वर्गवासी हो गये परंतु उनकी शवयात्रामें लाखों हिंदू जनताने सम्मिलित होकर इस बातका प्रमाण दे दिया कि उनकी कीर्ति उनके पीछे भी अमर है और अमर रहेगी।

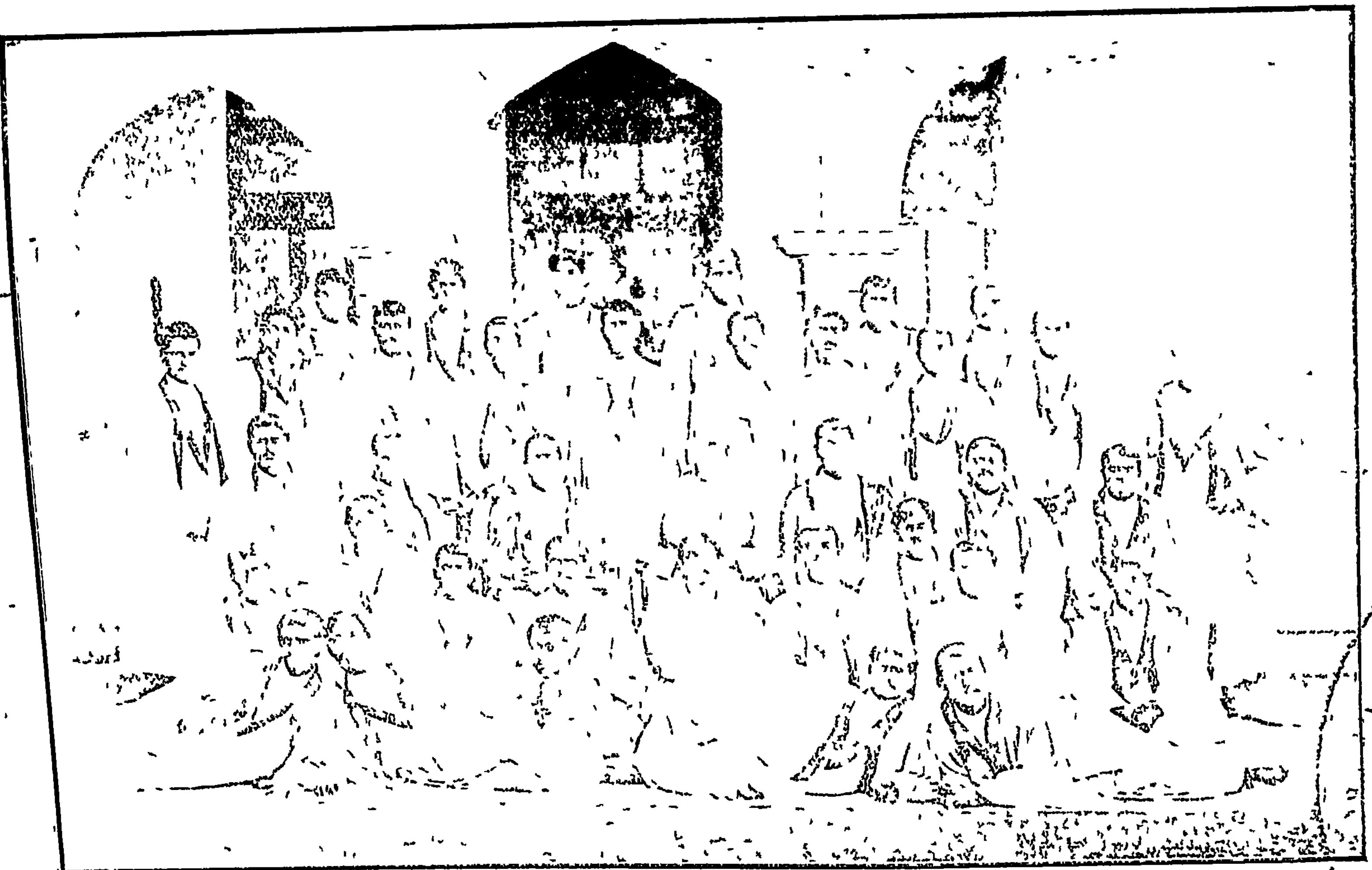




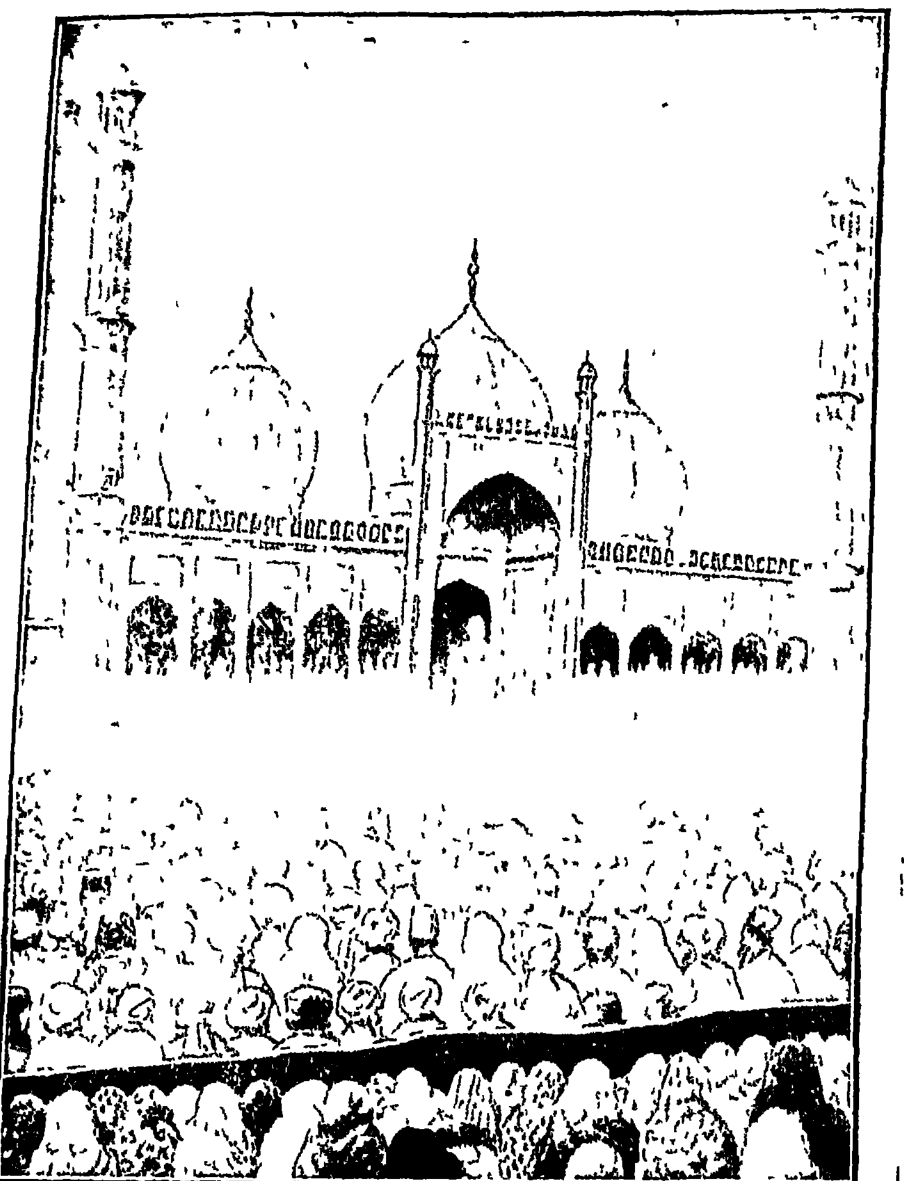
स्वामीजीके हत्यारेको पकड़ने वाले
श्री धर्मपालजी विद्यालंकार
(स्वामीजीके मन्त्री)



हत्यारेको पानी पिलाने वाले स्वामीजीके सेवक
श्री धर्मसिंहजी
(इनको भी हत्यारेकी गोली लगी थी)



श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज गुरुकुल कांगड़ीके स्नातकोंके बीचमें।



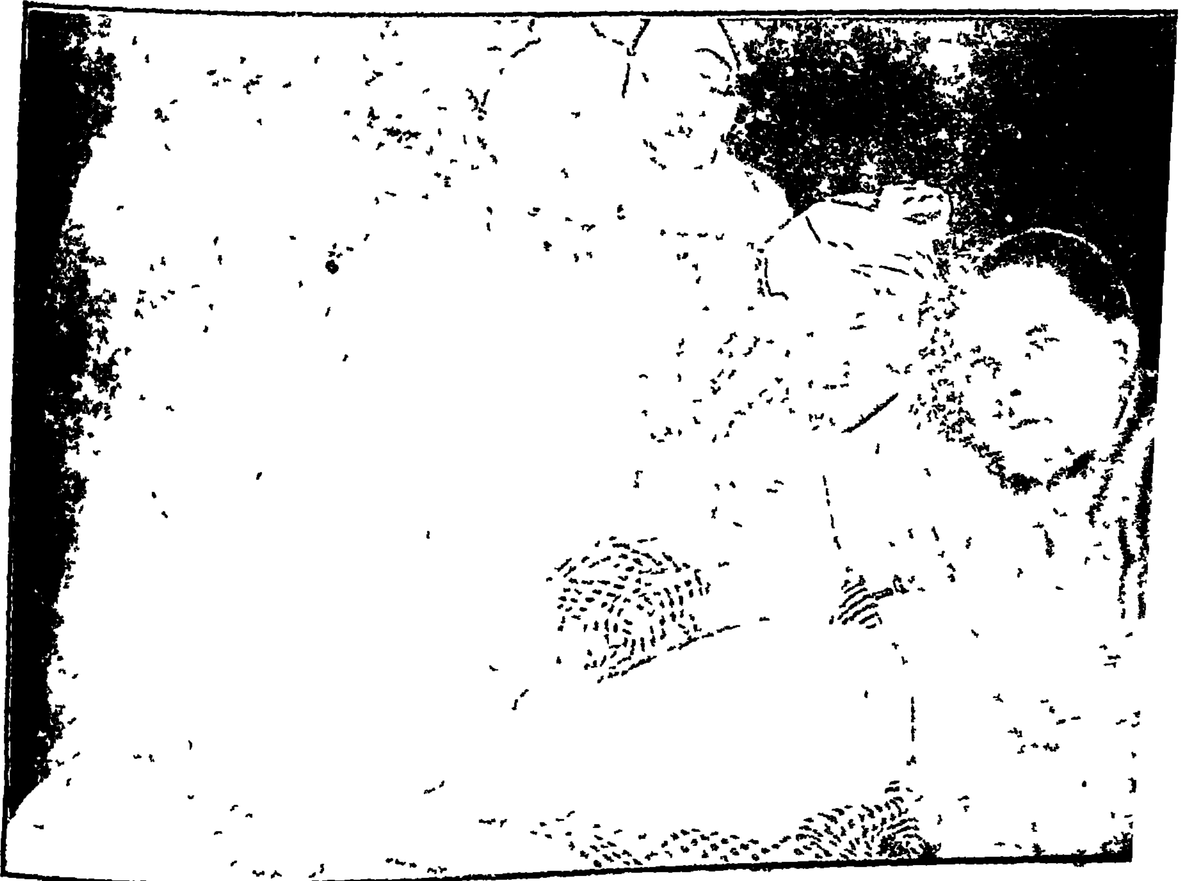
सवत १९७५ में स्वामीजीका देहली जामा मसजिदकी वेदीपरसे उपदेश ।



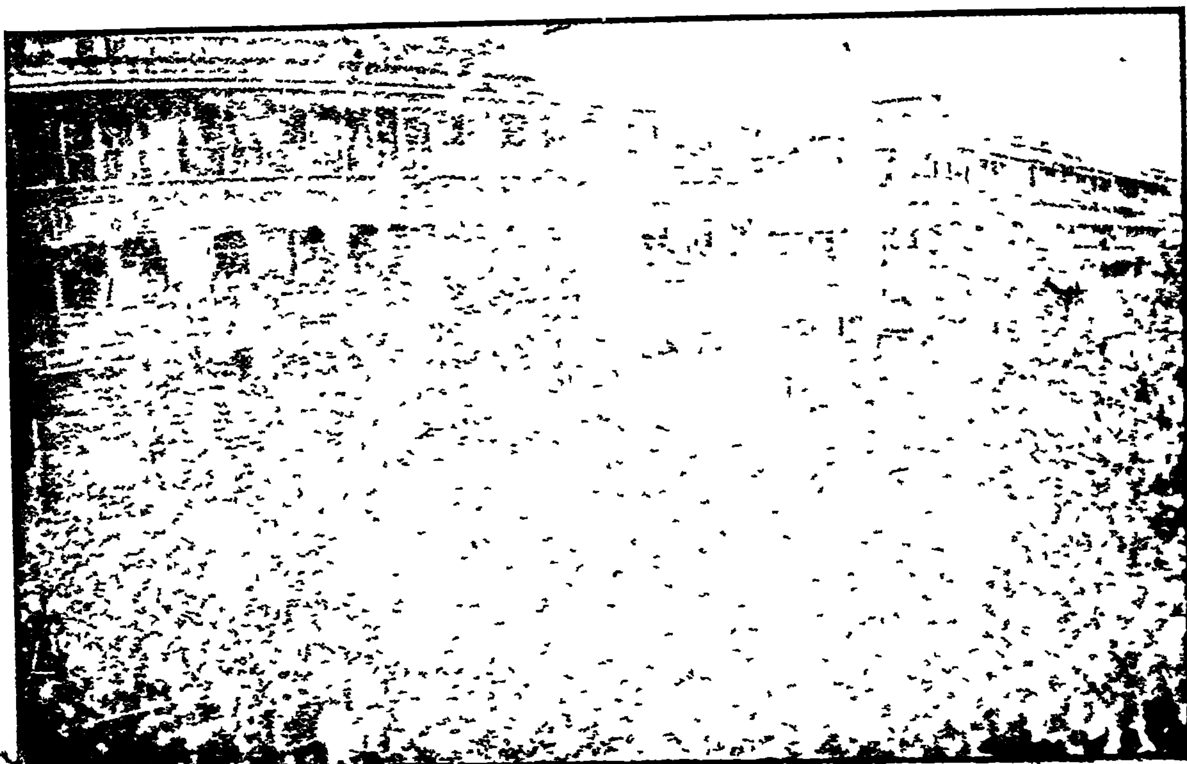
सवत १९७५ के अन्तमें रौलट एक्ट आन्दोलनके समय देहली घण्टाघरके नीचे स्वामीजीके साहसका एक अपूर्व दृश्य



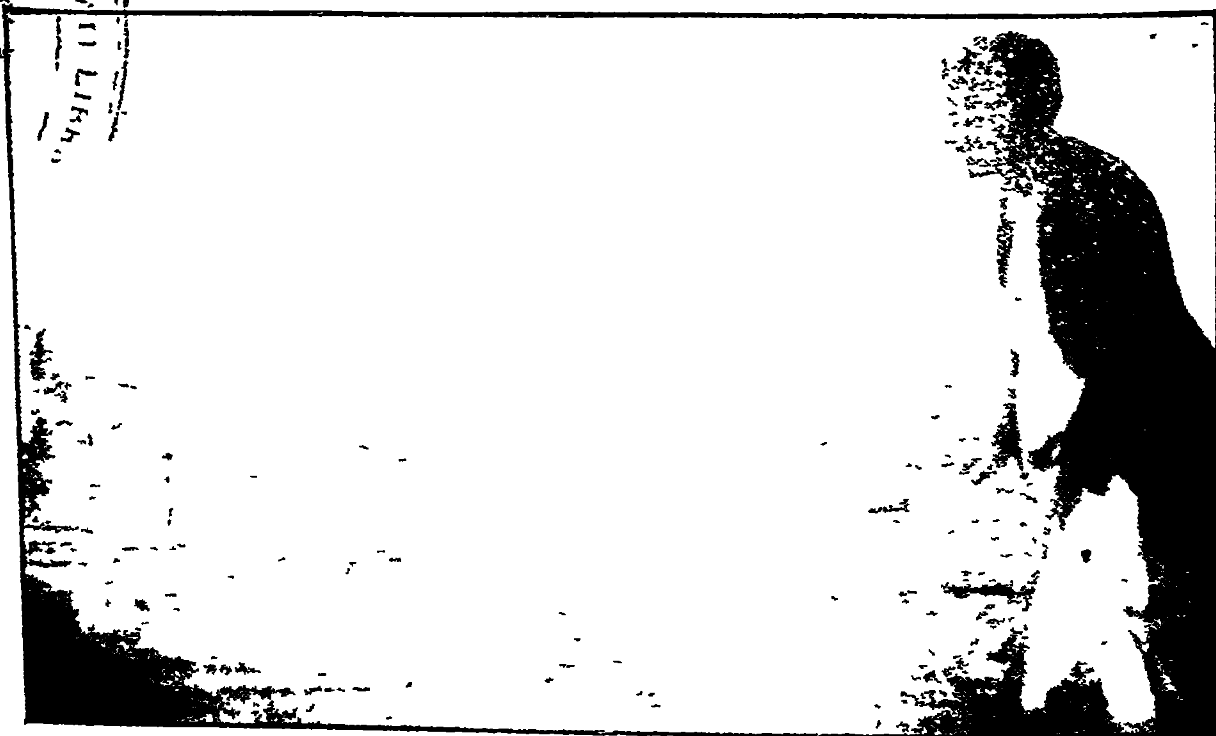
सि०जी वर्मा शाहपुराधीश सहित स्वामी श्रद्धानन्दजीका शुद्धहुए मलकानोंके साथ जेष्ठ १९८० बृन्दावनमें सह



हत्यारेकी गोलीसे वध होनेके पश्चात् मृत्यु-शय्यापर (पौष कृष्ण १९८३ वि०)



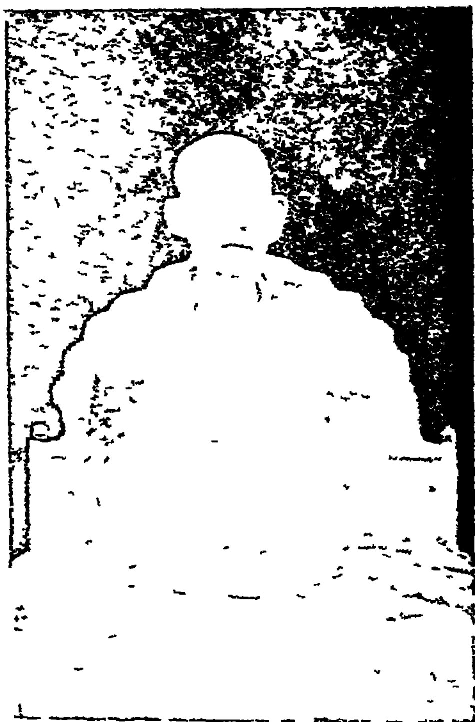
शव-यात्रा दृश्य।



अन्त्येष्टि संस्कार।

नरेश-मंडल

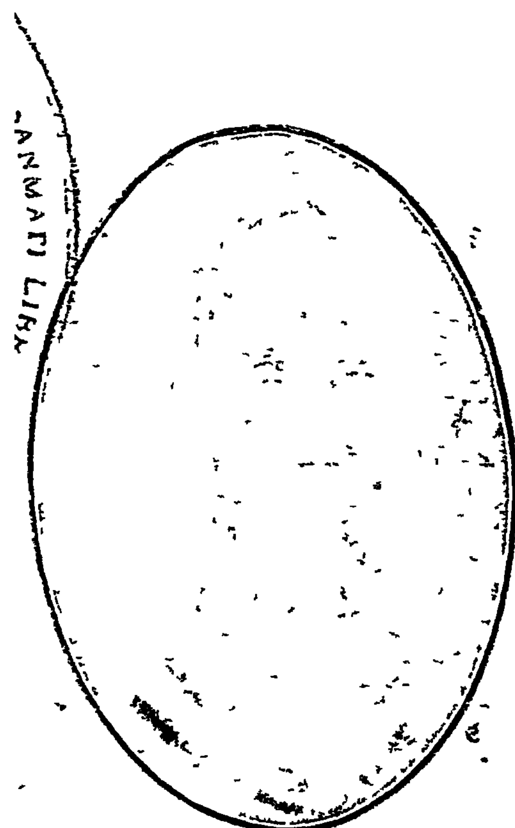
ऋषि दयानन्दके सहपाठी।



श्री प० नन्दनजी महाराज चतुर्वेदी
(चौबोंके गुरु)



श्री पं० युगलकिशोरजी शास्त्री
(स्वामीजीके भक्त)



श्री पं गङ्गादत्तजी शास्त्री



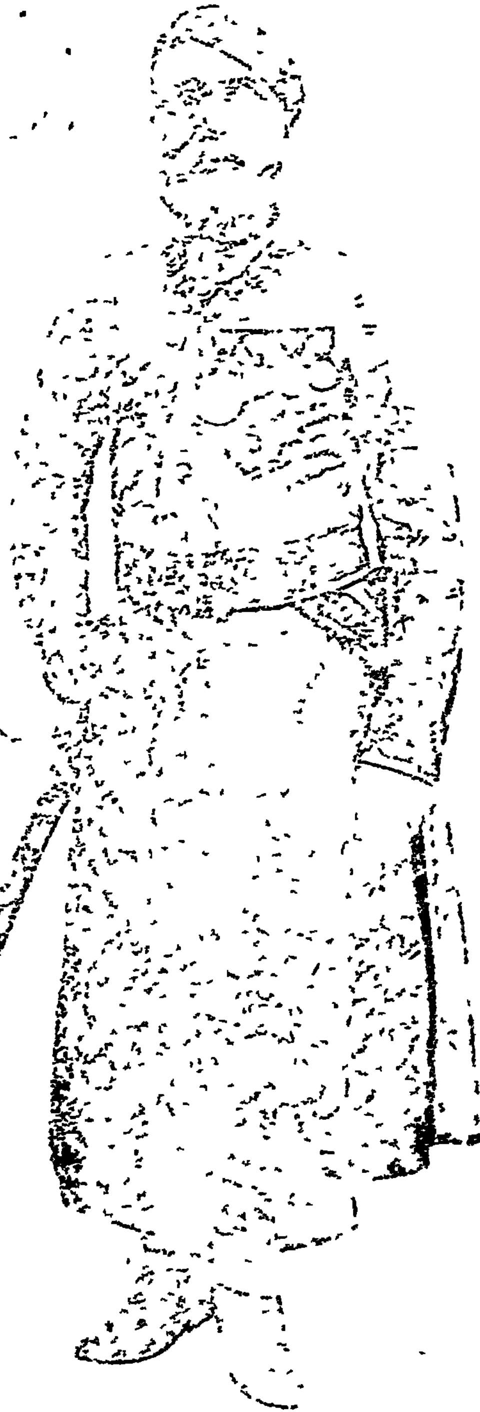
श्री पं० वनमालीलालजी चौबे



महाराजा सर सयाजी राव गायकवाड़
शमशेर बहादुर जी, सी, एस, आइ
बड़ौदा नरेश ।



सर शाहु छत्रपति महाराजा जी, सी एस, आइ
महाराजा कोल्हापुर ।



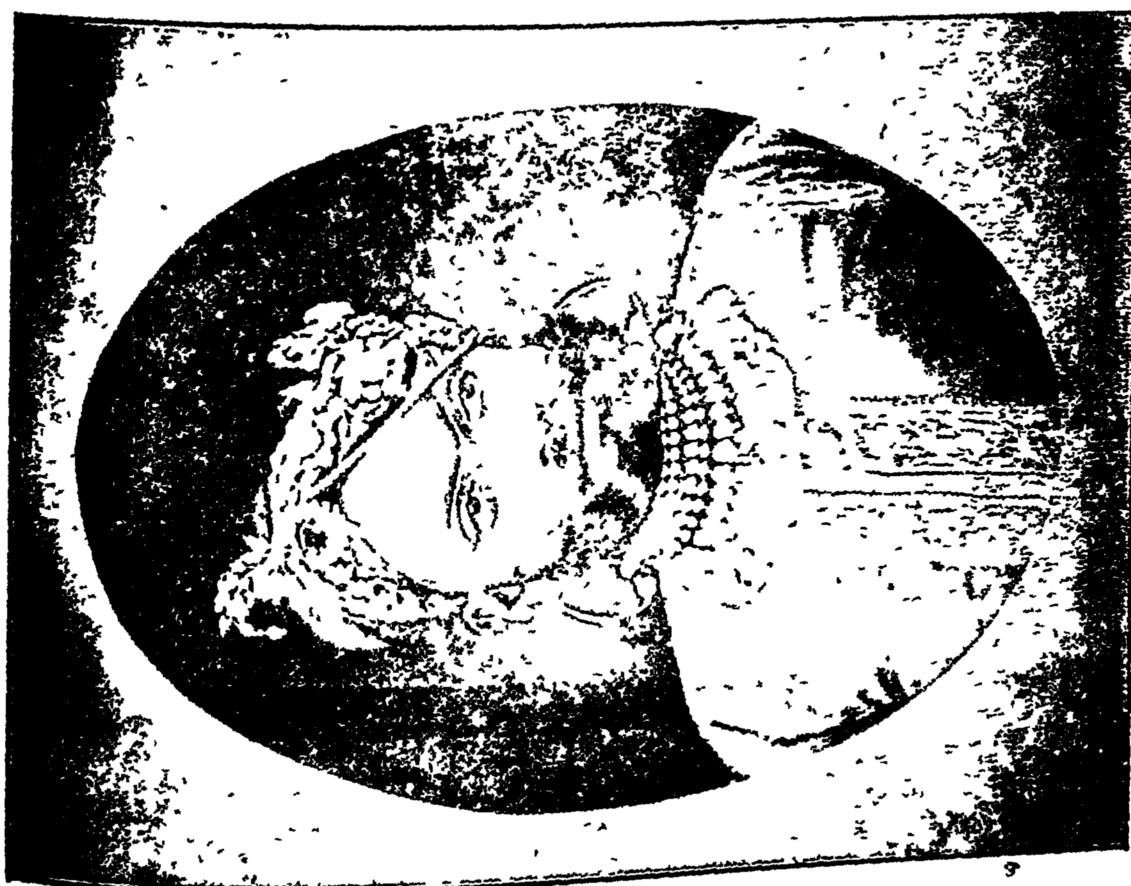
स्व० सर नाहरसिंहजी वर्मा बहादुर
के, सी, आइ, ई शाहपुराधीश।



श्रीमान् राजाधिराज उम्मेदसिंहजी वर्मा
शाहपुराधीश।



स्व० महाराजा सर यशवंत सिंहजी जी, सी, एस, आइ जोधपुर नरेश।



स्व० महाराणा सज्जन सिंहजीजी, सी, एस, आइ। उदयपुर।

ठाकुरां राज श्री चतुरसिंहजी मेड़तिया राठोड़ रूपाहेली नरेश (मेवाड)



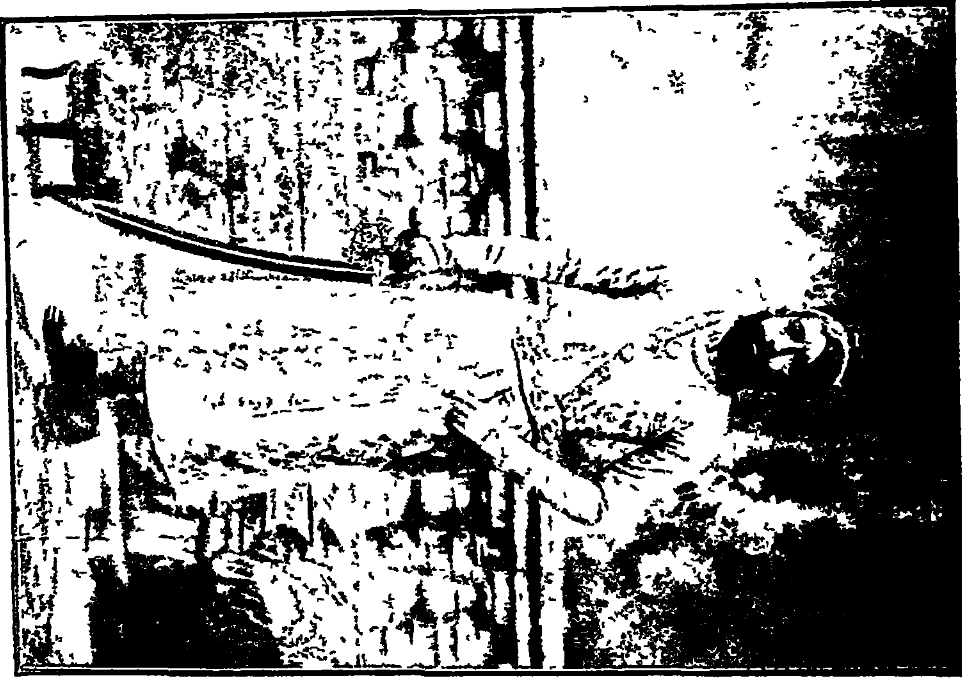
मेजर जनरल महाराजाधिराज सर प्रतापसिंह बहादुर
के, सी, बी, जी, एस, आइ।



ठाकुर साहेब श्री हमीरसिंहजी खेरडी (वीरपुर
—काठियावाड़)



हिज हाइनेस सर श्री राजाराम छत्रपति महार.जा साहेब
(कोल्हापुर)



श्री वैष्णिक छत्रपतिजी शाहपुरा।



श्री लाला सूर्यनारायणजी माथुर (शाहपुरा)



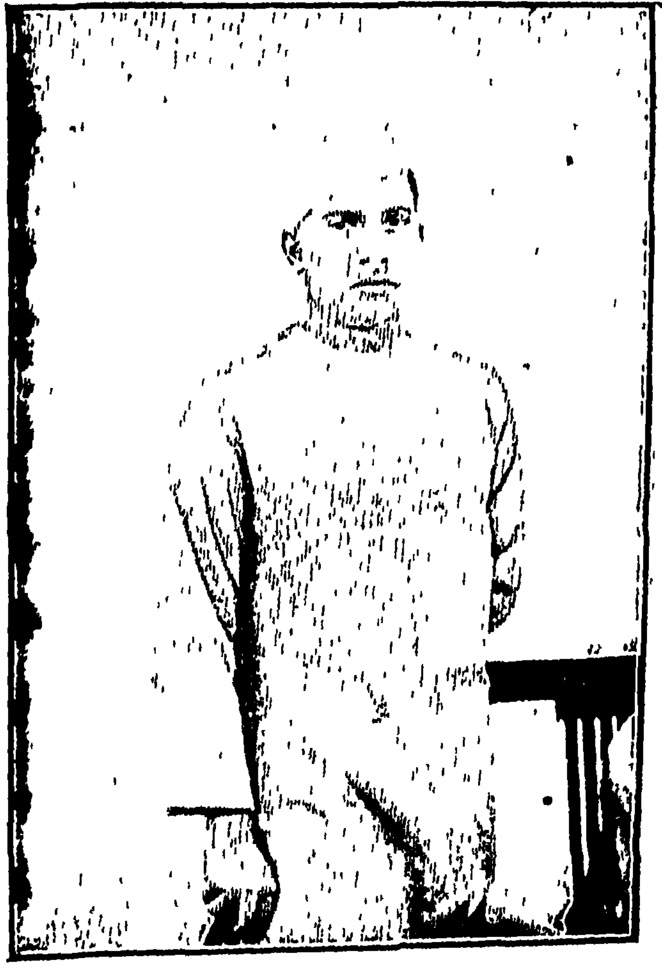
स्व० रावराजा श्री तेजसिंहजी वर्मा राठौर
जोधपुर (मारवाड़)



स्व० पं० नानूरामजी ब्रह्मभट्ट जोधपुर
महाकवि चन्द वरदाई के वंशधर) ये महर्षिके भक्त थे।



श्री कुमार रणञ्जयसिंहजी एक्स, एम, एल, सी,
अमेठी (सुलतानपुर)

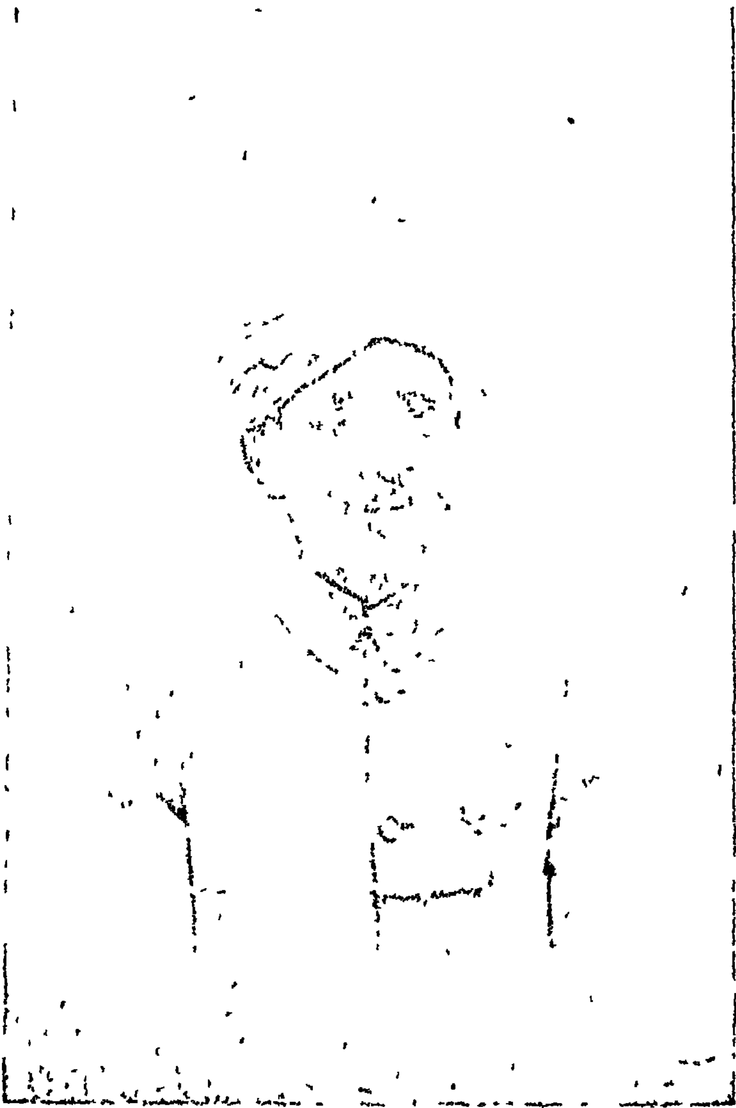


श्रीमान् राजा अवधेश सिंहजी
कालाकांकर नरेश

भक्त एवं नेता-मंडल



वानप्रस्थी प्रधान भागीरथलाल भाटी रईस महेवड़ रुड़की

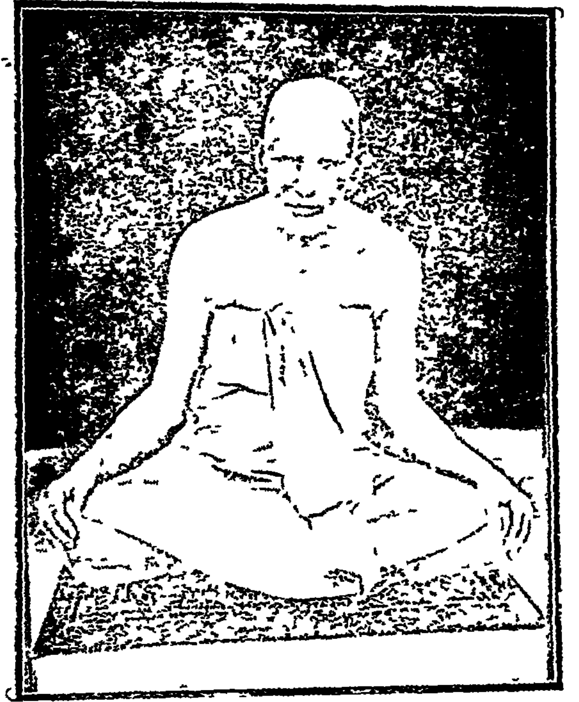


ठेकेदार रामलालजी तंवर (सैनिक) फैजाबाद (अवध)

श्रीमद्दयानन्द-चित्रावली—



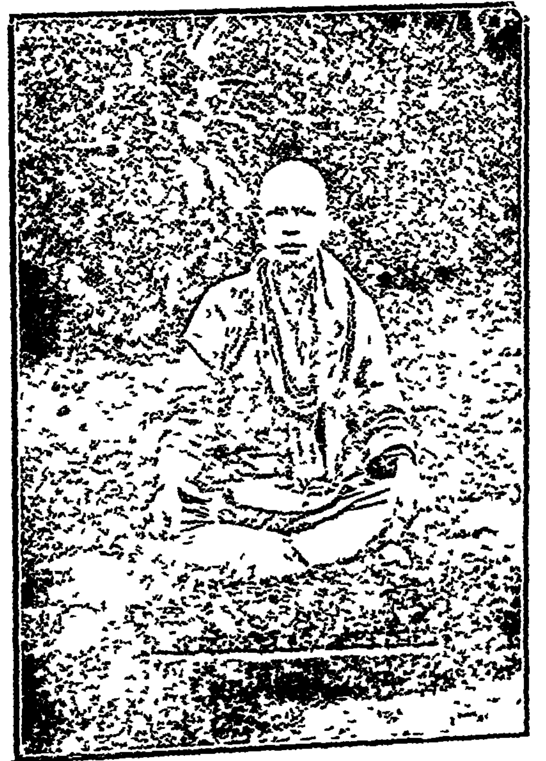
श्री पं० गुरुदत्तजी विद्यार्थी एम, ए।



श्री स्वामी सर्वदानन्द जी साधु आश्रम हरदुआगज



श्री महात्मा हंसराजजी



श्री महात्मा नारायण स्वामी



स्व० श्री पं० पूर्णानन्दजी



स्व० श्री भगत रेमलदासजी



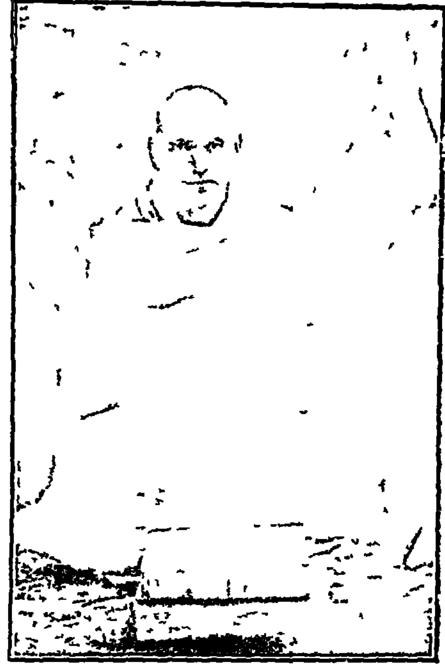
स्व० श्री पं० केशवदेवजी शास्त्री



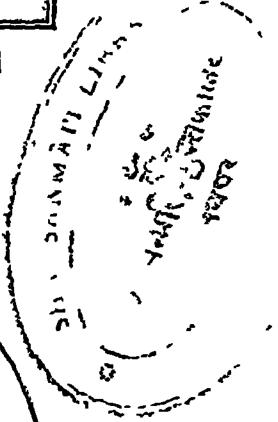
श्री पं० गङ्गाप्रसादजी उपाध्याय (प्रयाग)



स्व० स्वामी आत्मानन्दजी।



स्व० स्वामी विश्वेश्वरानन्दजी।

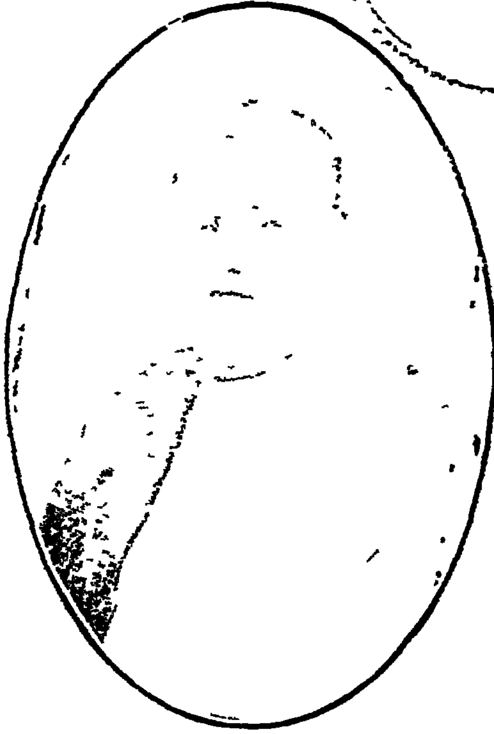




स्व० स्वामी दर्शनानन्दजी।



स्व० स्वामी नित्यानन्दजी।


भाई परमानन्दजी एम० ए०


श्री प्रोफेसर रामदेवजी


डा० मथुराप्रसादजी मोगा


पं० भगवद्दत्तजी बी० ए० लाहौर
वैदिक रिसर्चस्कालर।



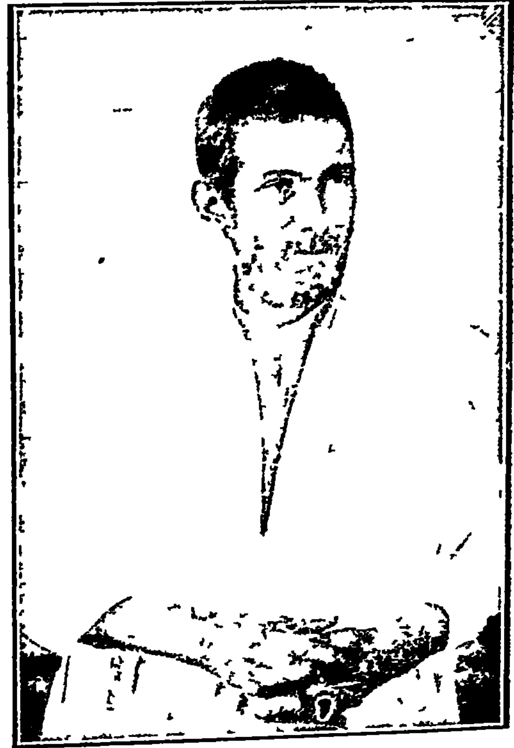
श्री स्वामी अभयानन्दजी



श्री स्वामी मुनीश्वरानन्दजी



श्री शान्त स्वामी अनुभवानन्दजी



स्व० पं० गणपतिजी शर्मा



स्व० पं० भोजदत्तजी शर्मा ।



स्व० पं० रामभजदत्त चौधरी ।

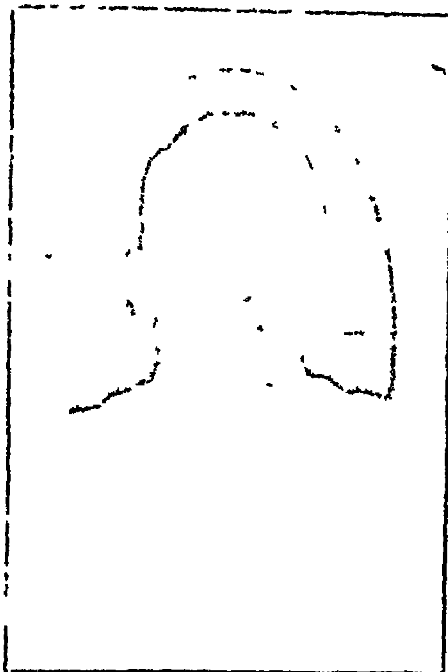


श्री स्वामी अच्युतानन्दजी सरस्वती ।



श्री स्वामी सत्यानन्दजी महाराज !

श्रीमद्दयानन्द चित्रावली—



स्व० पं० तुलसीरामजी स्वामी
(सामवेद-भाष्यकार)



स्व० पं० शिवशङ्करजी शर्मा
(ऋग्वेद भाष्यकार)



श्री पं० क्षेमकरणदासजी त्रिवेदी
(अथर्ववेद-भाष्यकार)



श्री पं० आर्यमुनिजी
(ऋग्वेद-भाष्यकार)


स्व० श्री लाला लाजपतरायजी


स्व० डा० चिरंजीव भारद्वाज


श्री लाला मूलराजजी एम० ए०


श्री लाला देवराजजी



स्व० पं० पद्मसिंह शर्मा



स्व० श्री पं० रामजीलाल शर्मा (प्रयाग)



स्व० पं० रुद्रदत्तजी शर्मा सम्पादकाचार्य
भूतपूर्व सम्पादक "आर्यमित्र"।



स्व० श्री प० गणेशप्रसादजी शर्मा
सम्पादक "भारत सुदशा प्रवर्त्तक"।



स्व० कविवर पं० नाथुराम शङ्कर शर्मा



स्व० श्री ठाकुर गदाधर सिंहजी



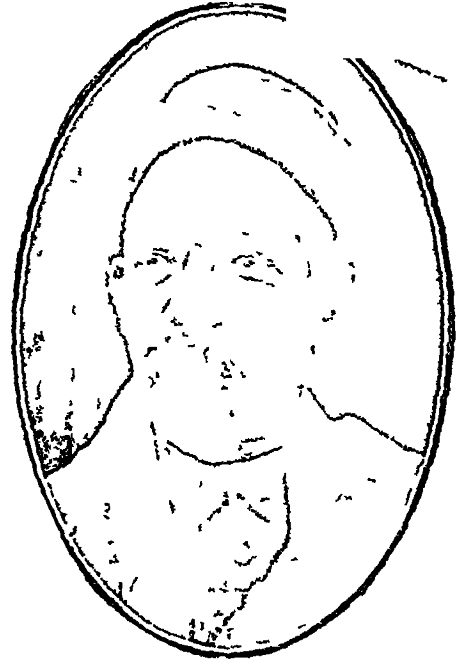
प्रसिद्ध आर्य कवि कर्ण



श्री पं० गौरीशङ्करजी भट्ट (कानपुर)
आलेख्यविद्यानिधि, सुलेखाचार्य।



प० अयोध्याप्रसादजी बी० ए०



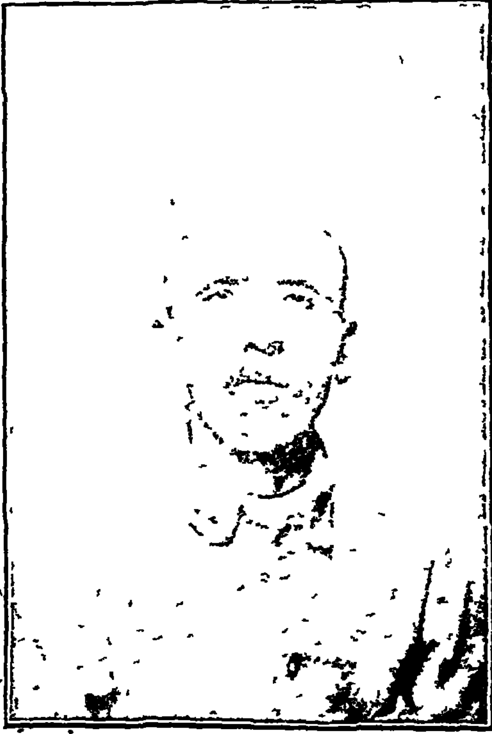
स्व० पं० मुरारीलालजी



प० रामचन्द्रजी देहली



प० कालीचरणजी आगरा



स्व० पं० नन्दकुमारदेव शर्मा



श्री राधामोहन गोकुलजी



मुंशी चिम्मनलाल वैश्य (तिलहर)



पं० बद्रीदत्तजी जोशी (मुरादाबाद)



स्व० पं० जीवनलालजी (सिन्ध) सक्खर



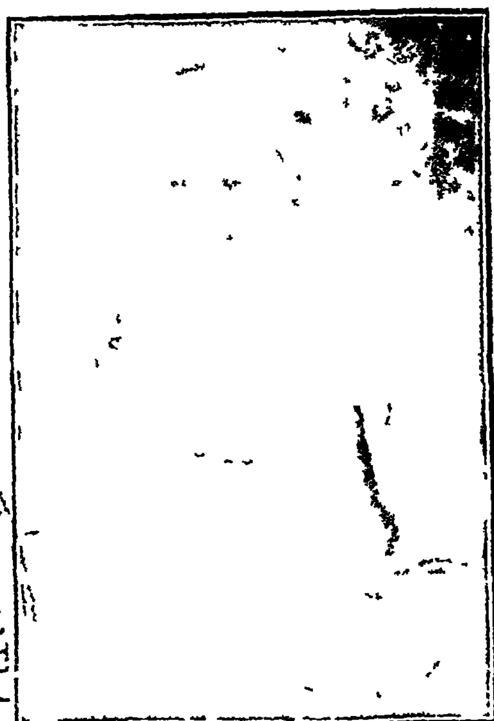
स्व० सेठ गुलाबसिंहजी (सिन्ध) हैदराबाद



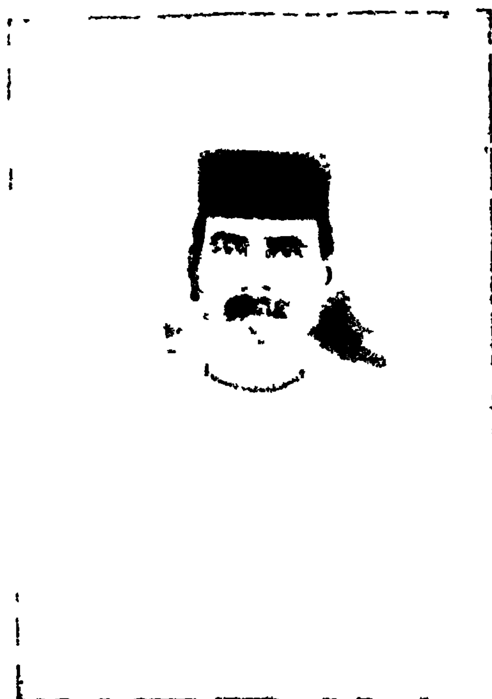
स्व० हकीम मंगतरामजी
शिकारपुर (सिन्ध)



प्रो० ताराचन्दजी गाजरा शिकारपुर (सिन्ध)



दानवीर स्व० मुशी अमन सिंहजी
गुरुकुल कागडी (हरिद्वार) के भूमिदाता।



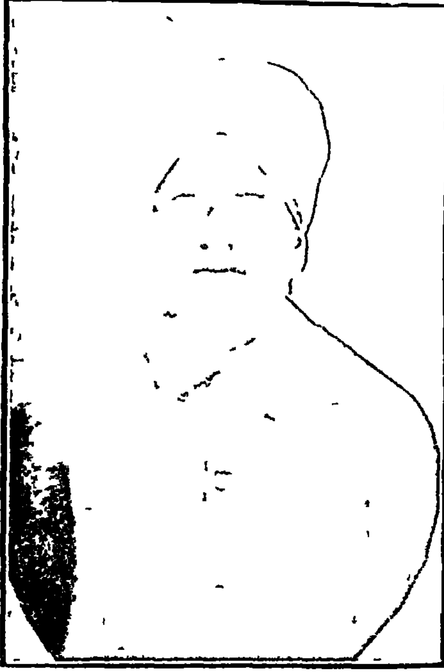
दानवीर स्व० लाला रग्घूमलजी खंडेलवाल
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थके सहायक।



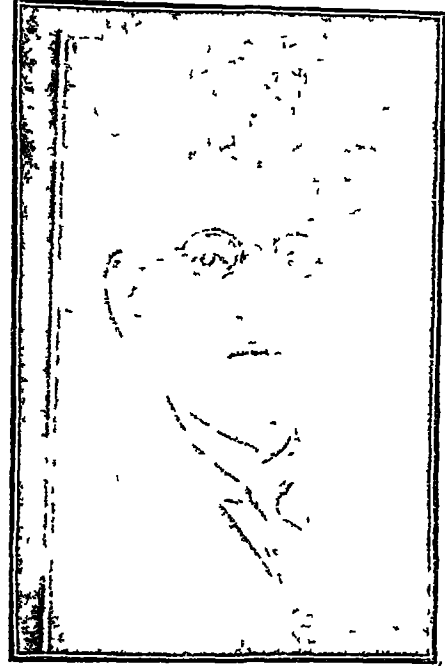
दानवीर राजा महेन्द्रप्रताप सिंहजी
गुरुकुल वृन्दावन के भूमिदाता।



दानवीर ठा० बैजनाथ सिंहजी (ब्रह्मा)



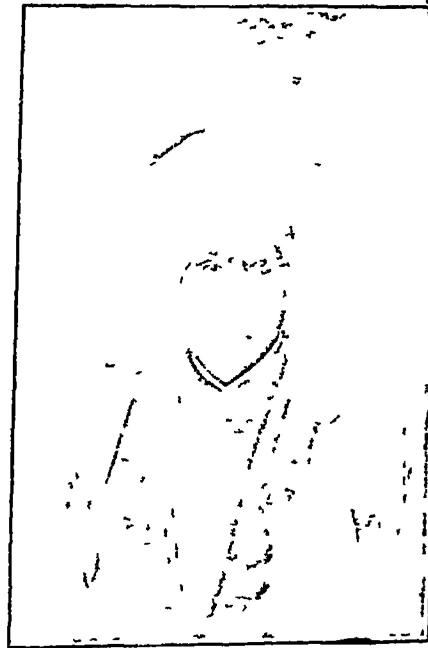
श्री डा० सत्यपालजी



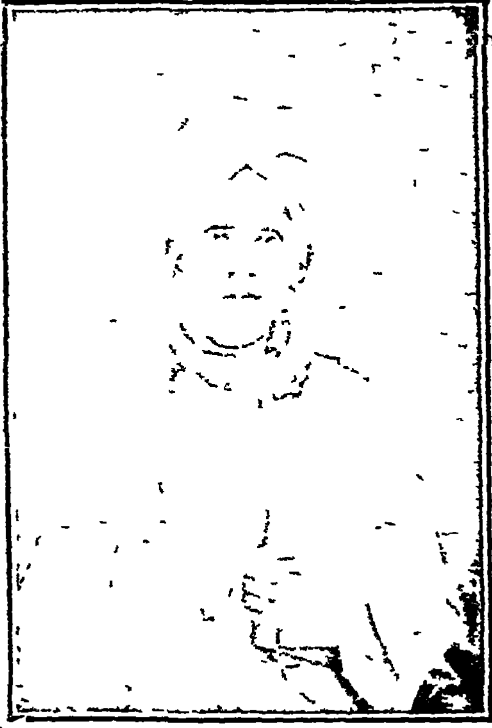
डा० बालकृष्णजी प्रिन्सिपल
राजाराम कालेज कोल्हापुर।



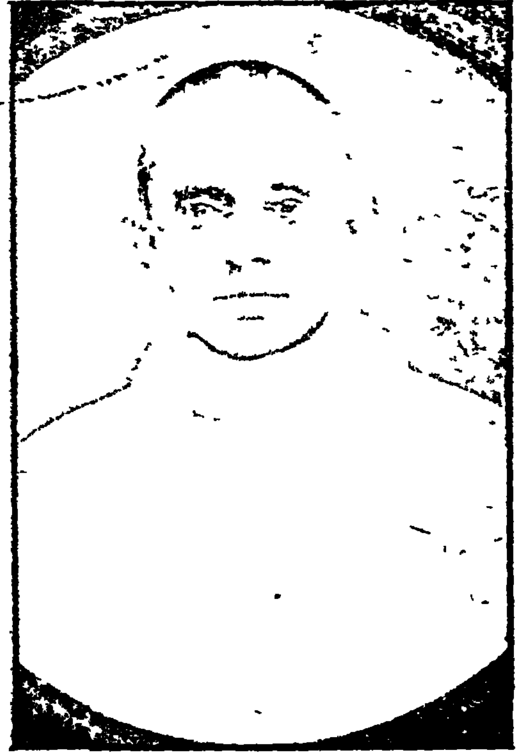
श्री खुशालचन्दजी खुरसन्द
सम्पादक "आर्यजगत" "आर्यगजट" तथा
"मिलाप" लाहोर।



श्री पं० ठाकुरदत्तजी वैद्य
सम्पादक "देशोपकारक" (लाहोर)।



श्रीआनन्दभिक्षुजी



श्रीस्वामी भवानीदयालजी



पं० जे० एम० शर्मा (मदुरा)



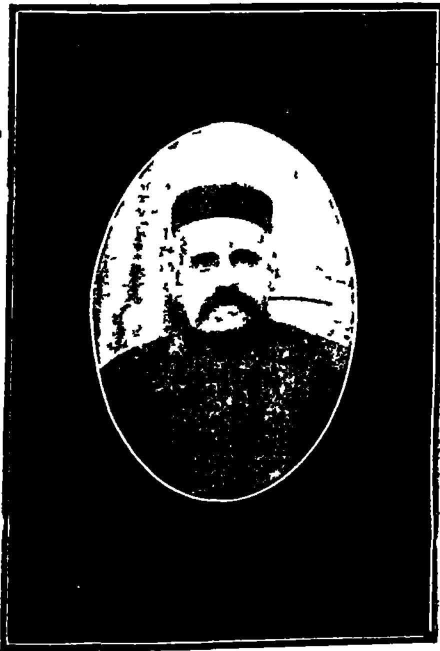
श्रीमेहता जैमिनिजी बी० ए०



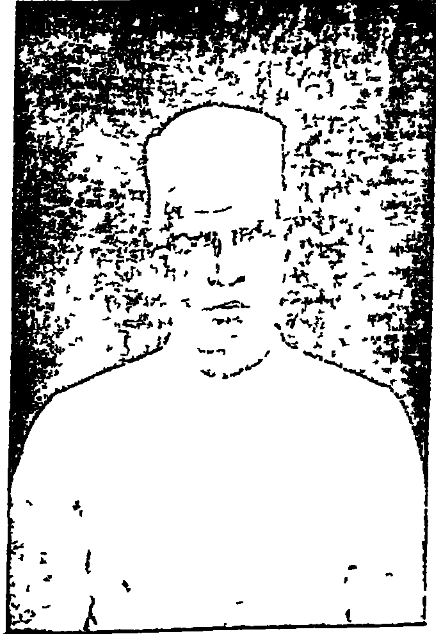
श्रीमदनमोहनजी सेठ (यू० पी०)



श्रीनेगीपूरणसिंहजी देहरादून



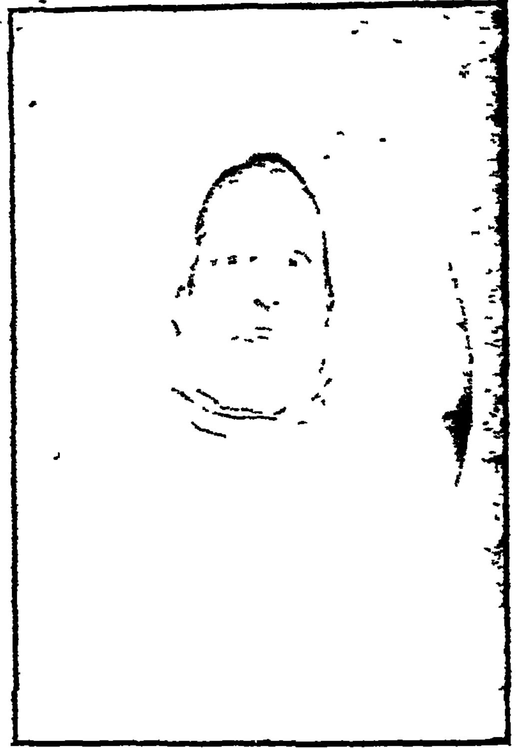
पं० बन्सीधरजी पाठक (बरला)



श्री बी० एल० चौधरीजी (लखनऊ)



श्री पं० नरदेवजी शास्त्री वेदतीर्थ



श्री पं० भीमसेनजी शर्मा (ज्वालापुर)



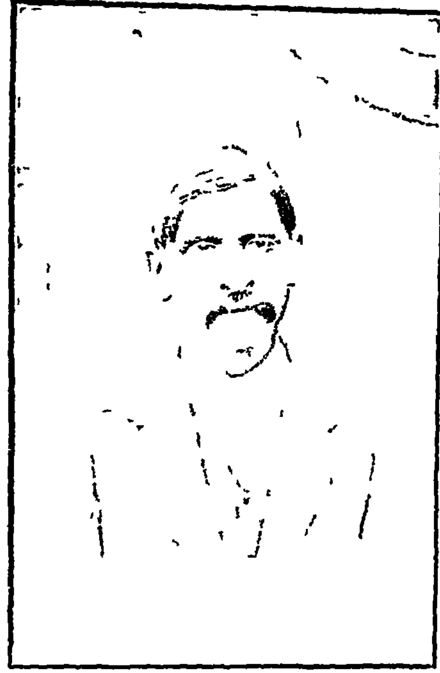
पं० नन्दकिशोरजी उपदेशक



स्व० पं० प्रयागदत्तजी अवस्थी



स्व० रामविलासजी शारदा (अजमेर)



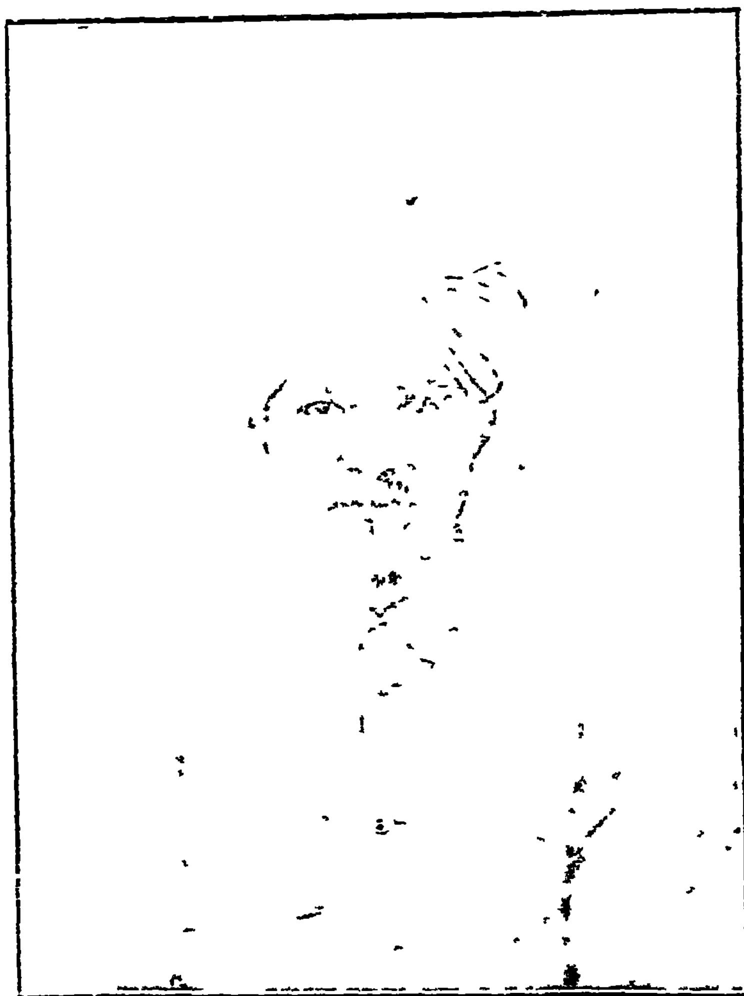
श्रीमथुराप्रसादजी शिवहरे (अजमेर)



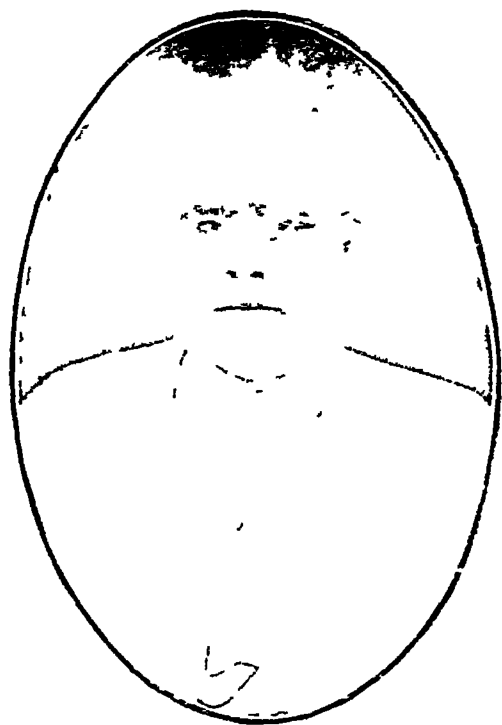
श्रीचान्दकरणजी शारदा (अजमेर)



श्रीजगदीशसिंहजी गहलोत (जोधपुर)



लालदेवीचन्दजी एम० ए० (होशीयारपुर)



स्वामी चिदानन्दजी (देहली)



पं० विशनलालजी शर्मा (बरला)



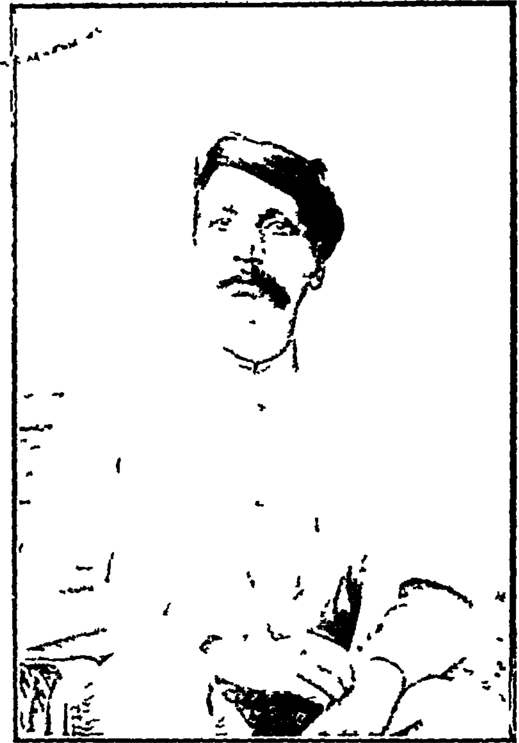
दानवीर सेठ छाजूरामजी चौधरी (कलकत्ता)



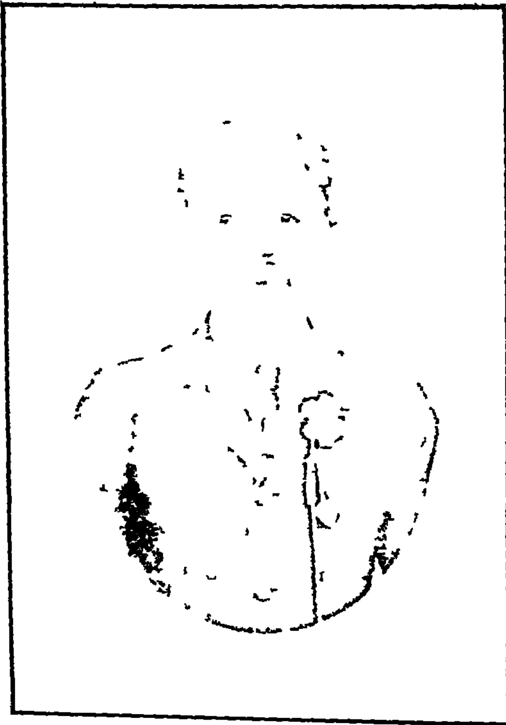
स्व० सेठ जयनारायणजी पोद्दार (कलकत्ता)



स्व० श्रीखासे रावजी यादव (वड़ोदा)



स्व० सेठ गणपतसिंहजी (वड़ोदा)



श्रीकालीदास के पटेल (बम्बई)



श्री प्रो० माणिकरावजी (वड़ोदा)



राजरत्न पं० आत्मारामजी अमृतसरी (बड़ौदा)



श्री आनन्दप्रियजी बी, ए, एल, एल, बी (बड़ौदा)



दानवीर सेठ श्री नारायणलाल बंसीलाल पीत्ति (बम्बई)



पं० धुरेन्द्र शास्त्री न्यायभूषण बांकीपुर, पटना।



रायबहादुर चौधरी दीवानचन्द सैनी
बी, ए, एल, एल, बी एडवोकेट गुरुदासपुर (पंजाब)



पं० दीनबन्धुजी आचार्य वेदशास्त्री (कलकत्ता)



दानवीर श्री तुलसीदासजी दत्त (कलकत्ता)



श्रीज्योतीस्वरूपजी (देहरादून)



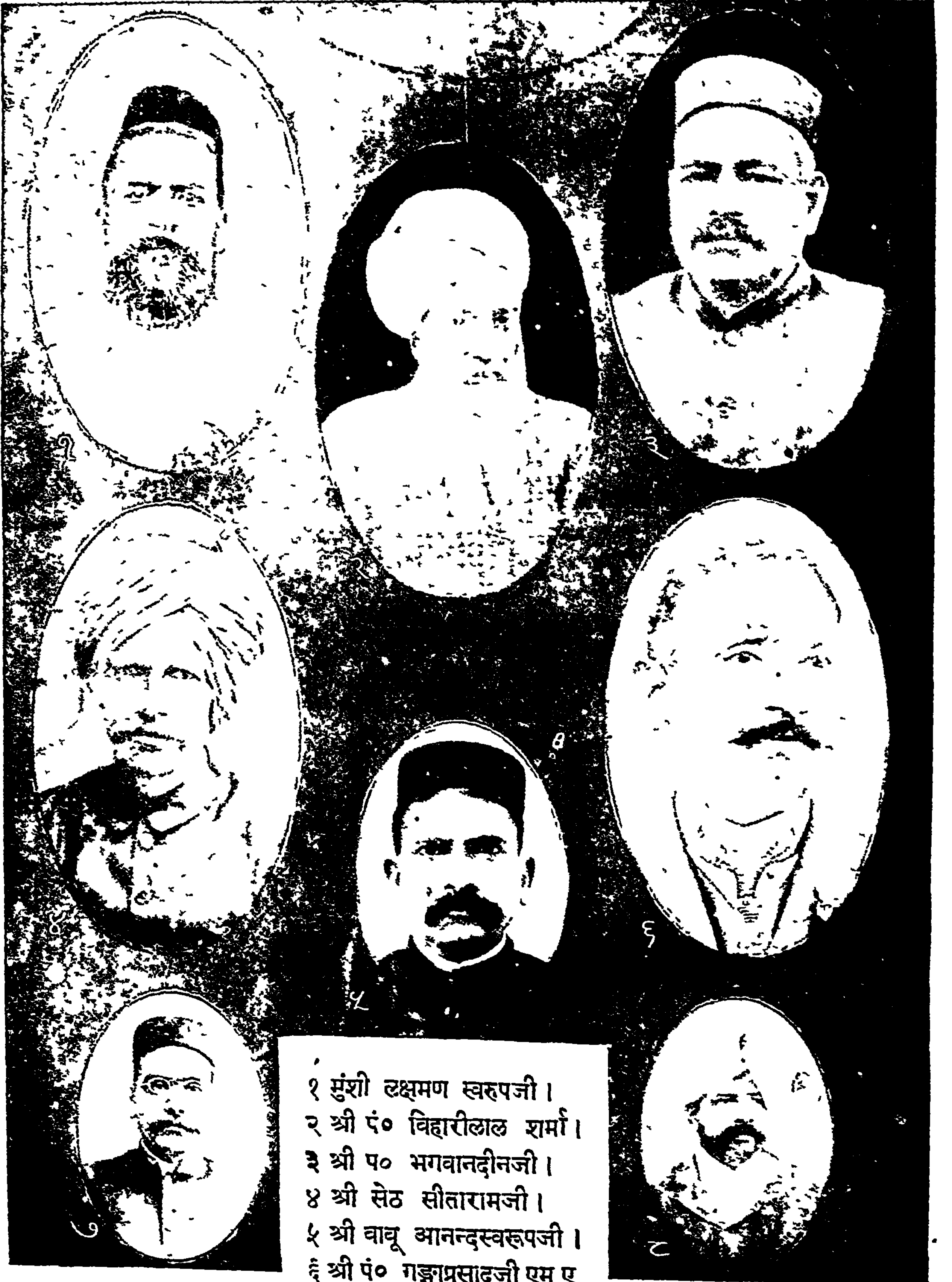
श्रीरामगोपालजी शास्त्री (लाहोर)



स्व० प० सतरामजी शर्मा (मोगा)



श्रीस्वामी रामानन्दजी (देहली)



(७) श्री वावू व्रजनाथजी।

(८) श्री वावू गुलराज गोपालजी।



(१) स्व० डा० लक्ष्मीपतिजी दानापुर, (२) स्व० पं० जगतनारायणजी शर्मा,
(३) स्व० रायबहादुर जनकधारीलालजी दानापुर ।



शङ्करनाथजी (कलकत्ता)



श्री श्यामकृष्ण सहाय (रांची)



सेठ सुरजी वल्लभदास (बम्बइ)



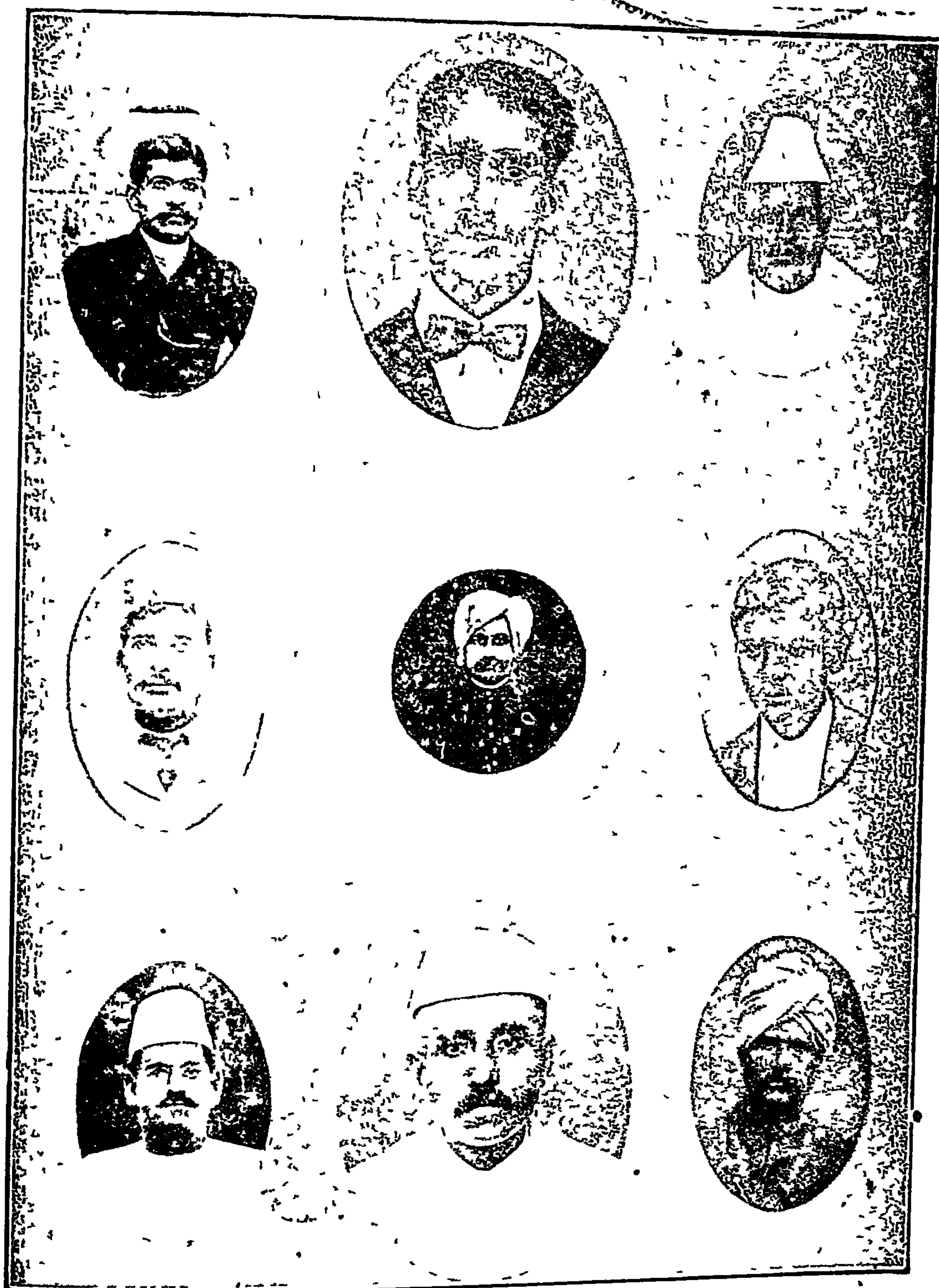
डा० कल्याणदास जे० देसाई (बम्बई)



स्व० प० ब.लकृष्णजी (बम्बई)



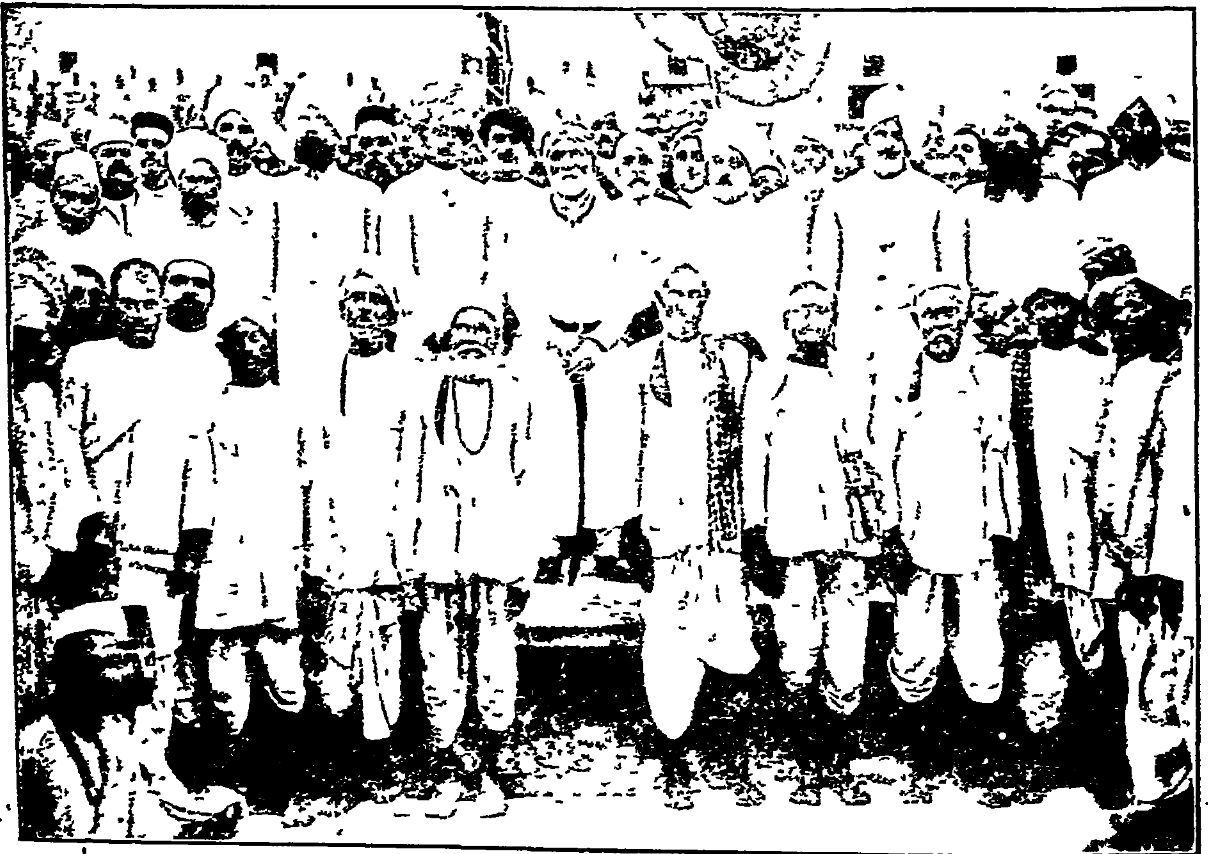
श्री रघुभाई वहालाभाई (बम्बई)



१ श्री पं० विहारीलालजी सोहागपुर सी० पी० २ श्री प० प्रेमशकर तिवारी सोहागपुर सी० पी० ३ श्री ठाकुर नारायणसिंहजी नागपुर ४ श्री प० महेन्द्रदत्त शर्मा नरसिंहपुर सीपी० ५ श्री ठाकुर रामप्रसादजी नरसिंहपुर सीरो० ६ स्व० यज्ञदेव शर्मा ७ श्री पं० शकरलालजी ८ डा०कृष्णुजी दामोदर वशरपाडे ९ श्री प० श्रीधरजी शर्मा नागपुर



केप्टेन डिकीका शुद्धि संस्कार ता० २७ जून १९०६



श्री शाहपुराधीश राजपूत भ्रातृसम्मेलन वृन्दावनमें मलकानोंकी शुद्धिका प्रस्ताव पास करा रहे हैं।

संस्थाएं व महिला-मंडल



श्री शीतलप्रसाद जी वैद्य भागलपुर
श्रीमद्दयानन्द चित्रावलीके प्रस्तावक



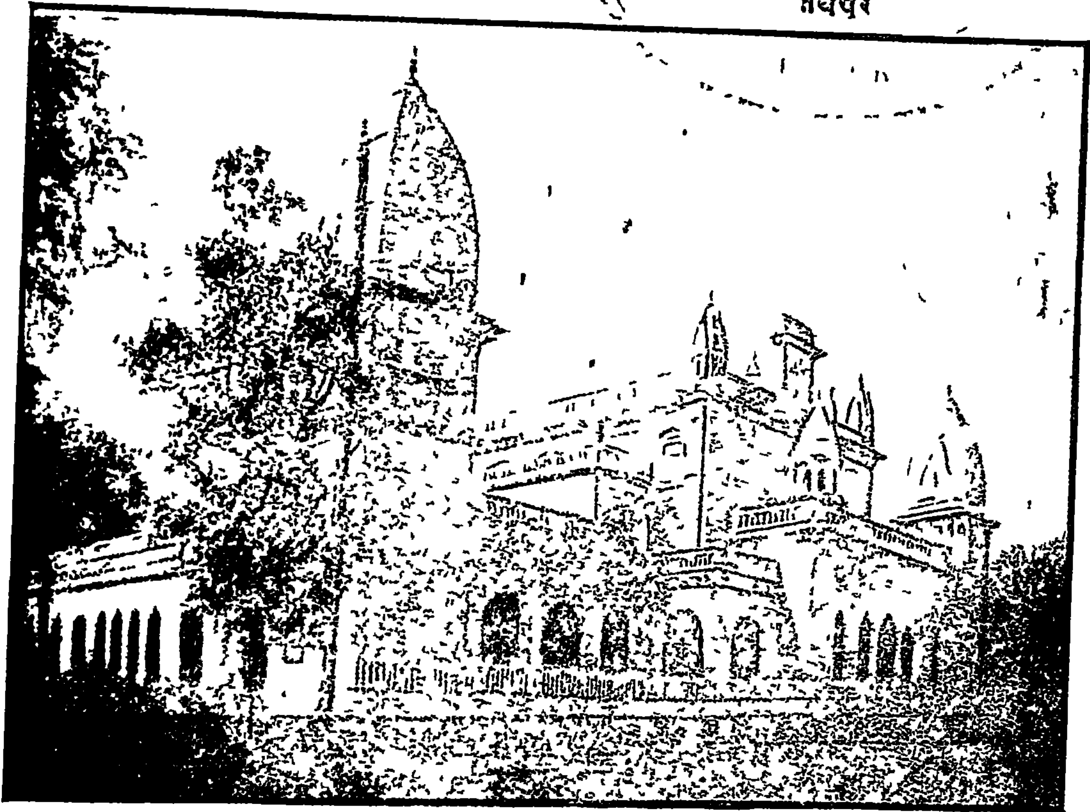
श्री छुट्टनलाल स्वामी (मेरठ)



विद्याभूषण "बिन्दु" प्रयाग शीघ्र कवि



पं० श्यामजी शर्मा भजनोपदेशक आगरा



डी ए वी कौलेज लाहौर भवन।

कौलेज और स्कूलादि।

श्रीमद्दयानन्द ऐंगलो वैदिक कौलेज लाहौर—इसमें आश्रम, वैदिक श्रेणी, आयुर्वेदिक श्रेणी, उपदेशक श्रेणी आदि विभाग हैं जहां देवनागरी, संस्कृत और अङ्गरेजीकी एम०ए० तककी पढ़ाई होती है। यह कौलेज पञ्जाब विश्वविद्यालयमें प्रथम श्रेणीका है। लगभग २००० विद्यार्थी पढ़ते हैं ६ लाखकी लागतका कौलेज-बिलडिङ्ग है और १५ लाखके लगभग सब प्रकारका कोष है। इसी प्रकारके कौलेज निम्न स्थानोंमें भी हैं—रावलपिंडी, जालंधर, देहरादून, कानपुर और राजाराम कौलेज कोल्हापुर स्टेट। निम्न स्थानोंमें हाई स्कूल भी हैं—मुलतान, होशियारपुर, हाफिजाबाद, एबटाबाद, बटाला, जालंधर, नवाशहर, अम्बाला, रावलपिंडी, बेजबड़ा, अमृतसर, बहरामपुर, मुक्तसर, जलालपुर जट्टन, क्वेटा, पेशावर, दिल्ली, मेरठ, देहरादून, फैजाबाद, मुजफ्फरनगर, बुलंदशहर, अलीगढ़, काशी, प्रयाग, फतहपुर, कानपुर, भरिया, दानापुर इत्यादि २। लगभग १५० मिडिल स्कूल भी है।



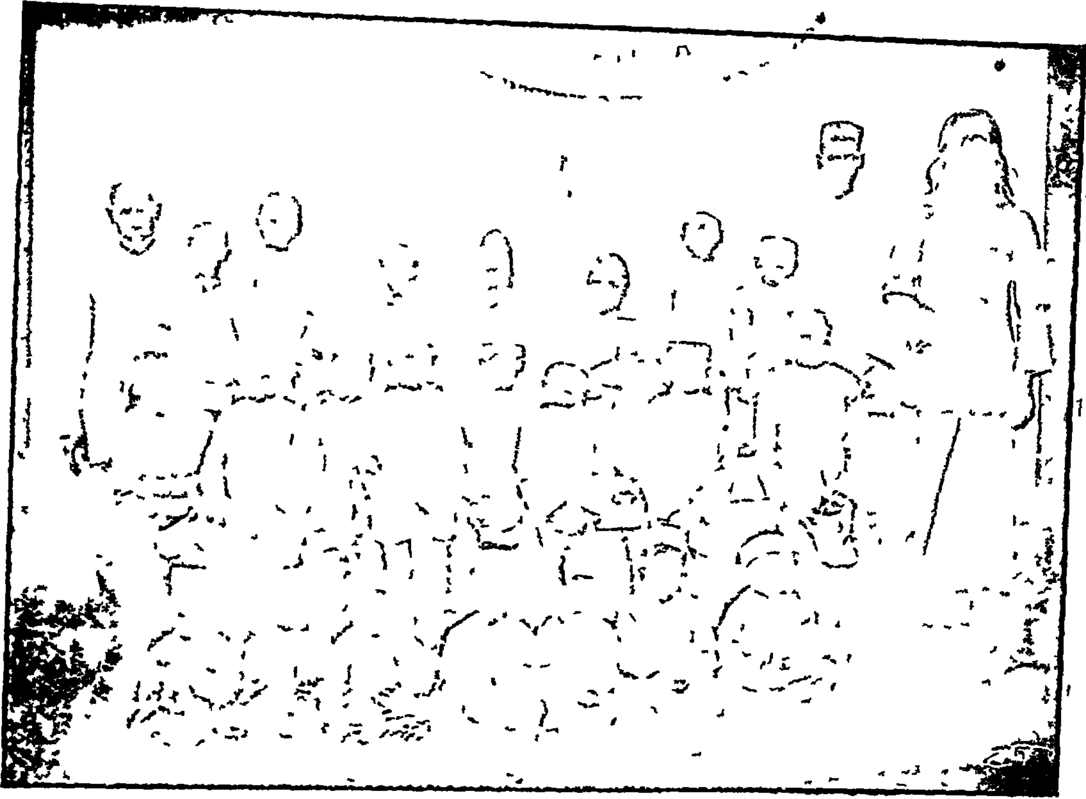
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (देहली) भवन ।

गुरुकुल तथा ब्रह्मचर्याश्रमादि ।

ब्रह्मचर्य्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत ॥ अथर्ववेद ॥

निम्न गुरुकुलोंमें शास्त्रविधिसे ६ से ८ वर्षके बालकोंको ब्रह्मचर्य-आश्रममें प्रवेश करा २५ वर्षकी आयुपर्यन्त वेदादि शास्त्रोंकी शिक्षा दी जाती है ।

गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी (हरिद्वार) तथा भारतवर्षके निम्न स्थानोंमें भी स्थापित हैं—इन्द्रप्रस्थ, मुलतान, कुरुक्षेत्र, गुजरानवाला, पोठोहार, भटिंडा, भैंसवाला, रायकोट, झज्झर, देवबन्धु, नालन्द, बेटसोहनी, हरियाना, वृन्दावन, ज्वालापुर, सिकन्दराबाद, सकोट, बदायूं, विरालसी, गढ़मुक्तेश्वर, हरपुरजान, वैद्यनाथधाम, मंडावर, होशंगाबाद, शुक्रतीर्थ, (बम्बई) सोनगढ़, सूपा, मदुरा, मटिंडो, कमालिया, चोहा भगताँ, काशी, मण्डूर, धारूपुर, चित्तौड़, उदयपुर आदि आदि । जिनमें २००० से भी अधिक चारों वर्णोंके बालक वेदाध्ययन कर रहे हैं ।

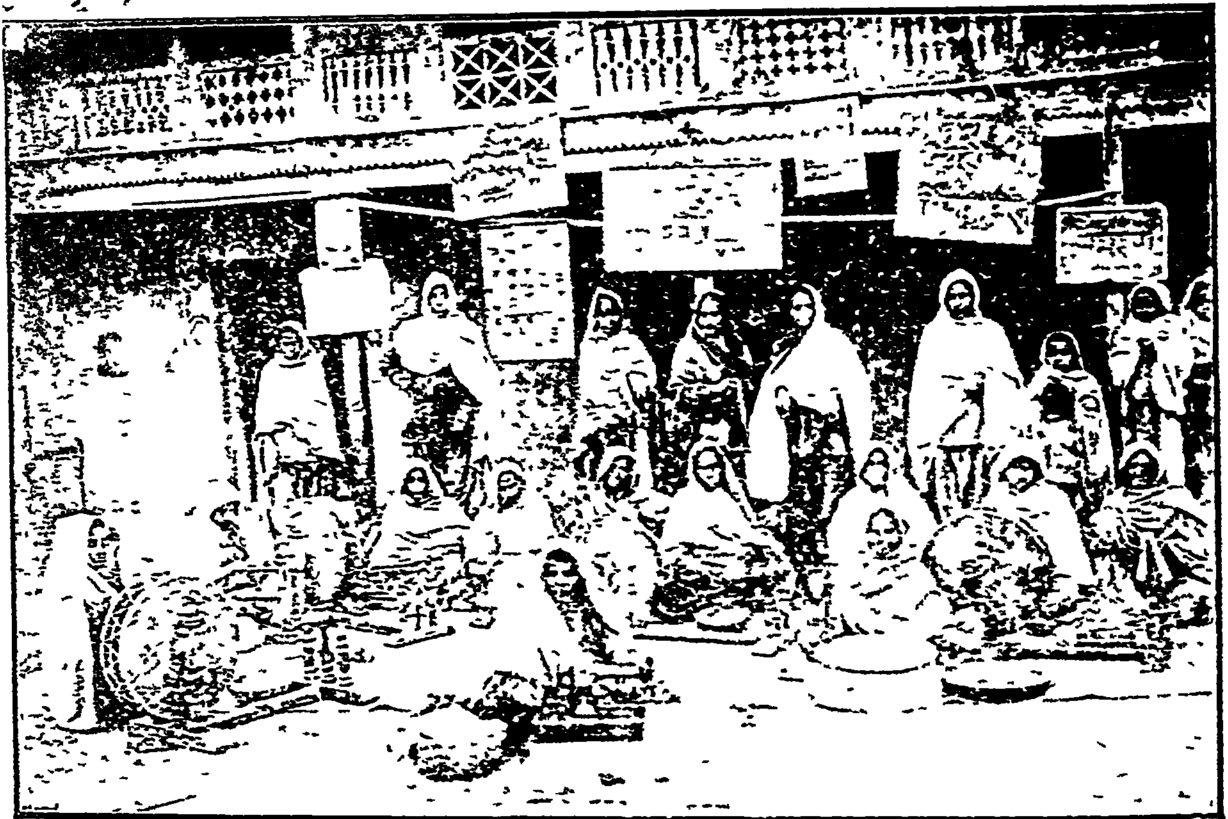


श्रीयुत ब्रह्मानन्दजी अनाथालय नरसिंहपुर का प्रबन्ध कर रहे हैं।

अनाथालय ।

जिनके माता, पिता और ज्ञातिसम्बन्धि कोई नहीं है, इन्हें हड़पनेके लिये वेश्यायें, मुसलमान और ईसाई मुंह बाये बैठे हैं। इन्हीं विधर्मियोंके चंगुलमें गोभक्षक बननेसे बचाकर समाज द्वारा इनके पालन पोषण और शिल्प-शिक्षाका प्रबन्ध कर इन्हें पूर्ण नागरिक बना कर विवाह योग्य कन्याओंका गुणकर्मानुसार विवाह करा दिया जाता है और बालकोंका, बालिग होनेपर, बाहर प्रबन्ध कर दिया जाता है। इसी प्रकार भारतवर्ष भरमें निम्न स्थानोंमें भी अनाथालय हैं जहां ५००० के लगभग हिन्दू अनाथ बालक-बालिकाओंकी रक्षा को जा रही है। मुजफ्फरगढ़, लाहौर झेलम, दिल्ली, भिवानी, डेरागाजीखां, मांटगुजरी, जालन्धर शहर, अमृतसर, पटियाला, लायलपुर, कोहाट, बरेली, कानपुर, देहरादून, हरिद्वार, वृन्दावन, हृषिकेश, लखनऊ, मेरठ, आगरा, जौनपुर, उरई, पवई, आवागढ़, शाहजहांपुर; अलीगढ़; दानापुर; मुंगेर; कटक, जगन्नाथपुरी, पुरुलिया; फिरोजपुर; शान्तिपुर; अजमेर; जोधपुर; भरतपुर; इन्दौर; फतहपुर; शाहपुरा; नरसिंहपुर; खंडवा; नाड़ियाद; बड़ौदा; पंडरपुर; पूना हैदराबाद; बड़नगर; कालीकट नैटाल आदि आदि।

कन्या गुरुकुल एवं पाठशालायें



आर्य कन्या पाठशाला (ट्यूडी—पंजाब) की शिक्षाका एक दृश्य।

वेदादि सत्शास्त्रोंकी आज्ञानुसार आर्यसमाजने स्त्री शिक्षाकी ओर भी विशेष ध्यान दिया है। सैकड़ों छोटी मोटी कन्या पाठशालाओंके अतिरिक्त कई महाविद्यालय और कन्यागुरुकुल भी चल रहे हैं। जिनमें

कन्या महाविद्यालय जालन्धर—ने इस ओर विशेष ख्याति और जागृति पैदा कर दी है। इस समय तक ३०० के लगभग अध्यापिकायें यहांसे शिक्षा प्राप्त कर भिन्न२ प्रान्तोंमें कार्य कर रही हैं।

आर्य कन्यामहाविद्यालय बड़ौदा—अपने अल्प समयमें ही अपनी अलौकिक शिक्षाके कारण प्रसिद्धिमें आचुका है और आरहा है। इस संस्थामें कन्याओंको संस्कृत, हिन्दी, गुजराती और अंग्रेजी चार मुख्य भाषायें सिखाई जातीं हैं इसके अतिरिक्त गृहकार्य सम्बन्धी सब प्रकारकी शिक्षाके साथ २ स्वास्थ्य रक्षा सम्बन्धी व्यायाम लाठी भाला तलवार मुग्दल छुरी तथा योगासनोंकी भी शिक्षा दी जाती है। इसके अलावा निम्न स्थानोंमें कन्या गुरुकुल और पाठशालायें प्रस्तुत हैं।

कन्यागुरुकुल—देहरादून, हाथरस, ज्वालापुर। पाठशालायें—तो प्रायः सभी बड़ी २ समाजोंके आधीन प्रत्येक ग्राम और स्थानोंमें प्रस्तुत है।



माई गङ्गादेवीजी अमृतशहर।



श्री गङ्गादेवीजी उपदेशिका विधवाश्रम जबलपुर।



देहरादून ज्योति पाठशालाकी संस्थापिका' श्रीमती
स्व० महादेवीजी 'कैसरेहिन्द' ध०प० श्रीज्योतिस्वरूपजी



श्रीमती माई भगवतीजी।



कन्या महाविद्यालय जालन्धर।
छात्रायें औषधोपचार द्वारा सेवा-कार्य कर रही हैं।



त्यागमूर्ति श्रीमती गुलाब देवीजी
(गुलाबदेवी कन्यापाठशाला अजमेरकी संस्थापिका)

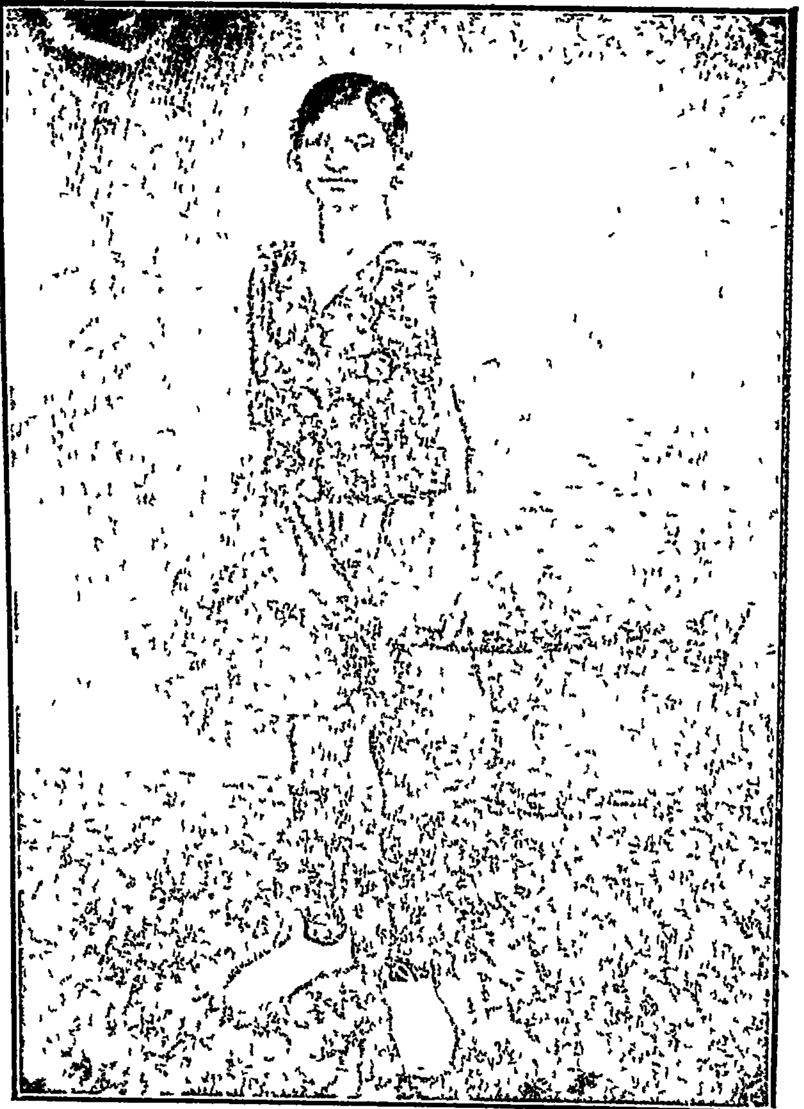


डा० मि० पार्वती देवी गहलोत (जोधपुर)

आर्यकन्या महाविद्यालय बड़ौदाकी दो तेजस्वी कन्यायें।



घोडे सवार एक वहिन।

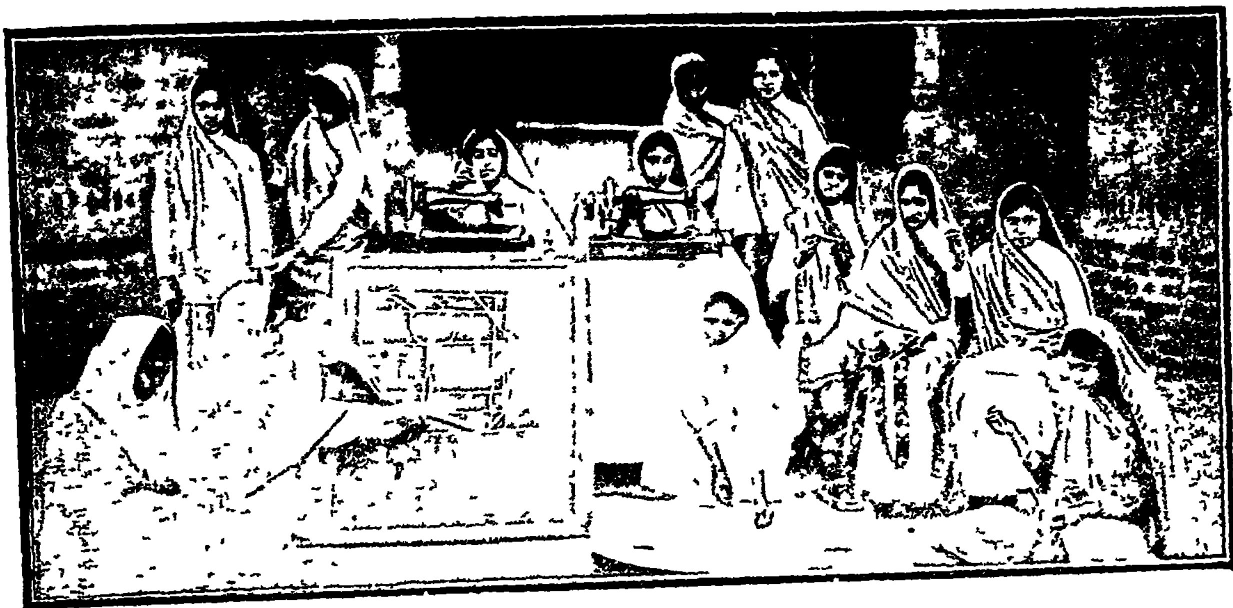


अनेक प्रकारके व्यायामोंमें निपुणता प्राप्त ब्र० सुभद्रा कुमारी।

आर्य कन्या महा विद्यालय बड़ौदा लाठी व्यायामका एक दृश्य।



आर्य कन्या महविद्यालय बड़ौदा संगीत वर्ग।



कन्या महाविद्यालय, जालन्धर
छात्राओंको सिलाईका काम सिखाया जा रहा है।



छात्राओंको गायन विद्या सिखायी जा रही है।

भारत प्रसिद्ध गोभक्त स्व० श्री हासानन्दजी वर्मा

जन्म १९२३ वि० मृत्यु सं० १९८७

आपका जन्म शिकारपुर सिन्धमे हुआ। युवावस्था तक बलोचिस्तान व.वम्बईमे रहे सन १८९९ में कलकत्ता पधारकर एक्सचेञ्जकी दलाली की। सन १९०३ मे एक रात ४ वजे टहलते समय अकस्मात् कसाइयों द्वारा गौओंके झुण्ड लिये जाते देख आपका हृदय गोसेवाके लिये पिघल गया। तभी से आप गोसेवा व्रत ले दाताओं द्वारा ८ लाखकी जमीन खरीदवाकर पिंजरा पोलके आधीन किया। मथुराकी गोचर भूमिका आंदोलन करते आपको राजयक्ष्माने आ घेरा और अन्तमें आप कलकत्तेमे इसीके शिकार हुए।

कलकत्तेकी प्रसिद्ध-देश सेविका



श्रीमती यशोदा देवी
(धर्मपत्नि म० गोविन्दराम)



गोविन्दराम-आर्यसेवक
(प्रकाशक श्रीमद्दयानन्द चित्रावली

❀ हमारी प्रकाशित पुस्तकें ❀

हमारी प्रकाशित पुस्तकें आर्य समाजके सिद्धान्तोंके प्रचार तथा आर्यसमाजके प्रगतिको आगे बढ़ाने वाले होते हैं। प्रत्येक आर्य व आर्य समाजके कार्यकर्त्ताओंसे प्रार्थना है कि उत्सवादि अवसरोंपर प्रचारके लिये पुस्तकें मंगाते समय हमें न भूलें।

सत्यार्थप्रकाश—का उपयोगी शताब्दि संस्करण। इसको बड़े ही अच्छे प्रकारसे छापा है जिससे लोग सुगमतासे पढ़ सकें तथा प्रत्येक प्रमाण श्लोकादिकी अकारादि क्रमसे सूची और अकारादि क्रमसे विषय-सूची दी गई है जिससे प्रमाण और विषय निकालनेमें सुगमता हो गई है।

श्रीमद्दयानन्द प्रकाश—भक्त शिरोमणि श्री स्वामी सत्यानन्दजी महाराज द्वारा रचित ऋषि दयानन्दकी जीवनी भक्तिरसमें रंगी हुई तथा ऋषिके उद्देश्य और भावोंको उनके जीवन चरित्रके साथ इस ढंगसे लिखे गये हैं कि पढ़ने और सुनने वालेके मनपर अच्छा प्रभाव पड़ता है। पुस्तको बड़े अक्षरोंमें और बड़ी साइजके मोटे ३२ पौण्डके एण्टिक कागज पर सचित्र छापा है जिससे पुस्तक बहुत बड़ी प्रायः ६०० पृष्ठोंकी तथा ऽ१॥ सेर वजनकी भारी बन गई है यह पुस्तक प्रत्येक आर्य परिवारके घरमें नित्यपाठ तथा समाजोंके साप्ताहिक सत्संगों एवं ऋषि बोधोत्सव तथा ऋषि जयन्ती के अवसरोंपर साप्ताहिक एव पाक्षिक कथा करनेके बड़ी उपयोगी है, एक २ प्रति अवश्य मगावें।

श्रीमद्दयानन्द चित्रावली—अर्थात् आर्य चित्रावली (आपके हाथमें है)

चित्रमय दयानन्द—महर्षि दयानन्दका चित्रमय जीवन वृतान्त

दयानन्द चरित—श्रीदेवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय रचित बङ्गला दयानन्द चरितका श्रीघासीरामजी एम-ए, वकील मेरठ द्वारा किया हुआ हिन्दी अनुवाद

आर्यपथिक लेखराम

अमर शहीद श्रीस्वामी श्रद्धानन्दजी द्वारा लिखा हुआ विस्तृत जीवन वृत्तान्त।

वीर संन्यासी श्रद्धानन्द

जीका विस्तृत अनेक चित्रोंसे युक्त जीवन चरित

संस्कार प्रकाश

संस्कार विधि सरल भाषा टीका सहित।

वैदिक सिद्धान्त व्याख्यान माला

आर्य जगत्के प्रसिद्ध संन्यासी तथा "पुरुषार्थ प्रकाश" नामक अद्वितीय पुस्तकके रचयिता श्रीस्वामी नित्यानन्दजीके उपयोगी २० विषयों पर अति प्रभावशाली, अकाट्य युक्ति तथा प्रमाणों सहित व्याख्यानोंका संग्रह।

दर्शनानन्द ग्रन्थ माला

श्रीस्वामी दर्शनानन्दजीके छोटे बड़े १८ पुस्तक व ट्रेक्टोंका संग्रह है।

विधवा विवाह मीमांसा

बङ्गालके प्रसिद्ध, संस्कृतके प्रगाढ़ विद्वान, विधवा विवाहके आदि प्रचारक व विधवा विवाहको कानूनन जायज ठहराने एवं कानून पास कराने वाले श्री पं० ईश्वरचन्द्र विद्यासागरकी इस पुस्तकसे विधवा विवाहके विरोधियोंको भी लाजवाब होना पड़ता है ३०० पृष्ठोंकी बड़ी पुस्तक

शारदा बिल

इसमें बिलका इतिहास, पक्ष विपक्षकी दलीलें, कानून और उसका उपयोग, बाल विवाहके पक्ष विपक्षमें शास्त्रोंके प्रमाण।

वीर बच्चोंकी कहानियां

इसमें ज्ञानवीर; सत्यवीर रणवीर, कर्मवीर और धर्मवीर आदि अनेक प्रकारके वीर बच्चोंकी सचित्र कहानियां शिक्षाप्रद ढंगसे सरल भाषामें लिखी गई है प्रत्येक परिवारके कामकी पुस्तक हैं।

इस्लाम कैसे फैला

इसके लेखक शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्दजीकी प्रेरणासे आर्य जगतके प्रसिद्ध व्याख्याता व विद्वान पं० अयोध्या प्रसादजी बी० ए ने इस्लामके मान्य पुस्तकोंके विशेष प्रमाणोंको उद्धरण कर लिखे हैं तथा इस पर महात्मा गान्धीजीकी 'खरी टीका' व सम्मति भी उद्धृत की गई है। पुस्तक देखने व विचार योग्य हैं (जप्त हो चुकी है)

पतितोंकी शुद्धि शास्त्र सम्मत है

आदर्श सुधारक दयानन्द

इसमें विद्वान लेखकने हिन्दू समाजकी अनेक बुराइयोंका वर्णन करके ऋषि दयानन्दको आदर्श सुधारक स्वीकार किया है इसके कई कारण भी बताये हैं पुस्तक देखने व प्रचार योग्य है।

ऐतिहासिक भजनावली

वीर पुरुष, देवियें व वालकोंके ऐतिहासिक भजनोंका खासा संग्रह है।

प्रचार योग्य सस्ते और उपयोगी पुस्तकें

(१) आर्य समाजका परिचय—अर्थात आर्य समाज क्या है ? लेखक श्री स्वामी अनुभवानन्दजी ८० पृष्ठोंकी पुस्तक (२) आर्यसमाज संकीर्तन धर्मवीर वालक हकीकतराय सचित्र वाल शिक्षा (स्वामी दर्शनानन्द कृत) प्राणायाम विधि (६) पञ्चमहायज्ञ विधि (७) गोकरुणा निधि (८) हवन मन्त्र अर्थ सहित

प्रचार योग्य सस्ते और उपयोगी ट्रैक्ट

(१) मांस भक्षणसे हानि (२) तम्बाकूसे हानि (३) चायसे हानि (४) अंग्रेजी शिक्षासे भारतीय सभ्यताका नाश (५) सन्ध्या और अग्निहोत्र (६) सत्संग भजनावली (७) मूर्त्ति पूजा विचार (८) जाति विचार (९) स्वामी दयानन्दका उपकार (१०) श्राद्ध व्यवस्था (११) पुनर्जन्मवाद (१२) नवीन वेदान्ती व आर्योका प्रश्नोत्तर (१३) आस्तिकवाद (१४) देह ब्रह्माण्डका नकशा है (१५) पाप और पुण्य (१६) होली सुधार भजनावली (१७) चटपटीभजन,

नेताओंके चित्र

श्री गुरु विरजानन्दजी
महर्षि दयानन्द सरस्वती
श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी संन्यासी
श्री पं लेखरामजी आ० मु०
श्री पं० गुरुदत्तजी विद्यार्थी
श्री लाला लाजपत रायजी
महात्मा गान्धीजी

ये चित्र बड़ी साइज और छोटी साइज में छपे हैं।

मंत्रोंके रंगीन चित्र व नकशे

विश्वादि देव प्रार्थनाके आठों मंत्र
आर्यसमाजके १० नियम

ओ३म्, नमस्ते, गायत्री आदि १२ प्रकारके मोटोज बहुत वढ़िया भरकीले उत्सवादि सजाने योग्य छपपाये हैं।

सब पुस्तकें व चित्रोंके मूल्यके लिये सूचीपत्र मंगाइये।

पता—गोविन्दराम हासानन्द
२० कार्नवालिस स्ट्रीट, कलकत्ता।